डॉ. (श्रीमती) शशिकला सिन्हा

जन्म	:	29 जून 1962
माता	:	स्व. बसंती देवी अम्बष्ट
पिता	:	स्व. जे.पी. अम्बष्ट
पति	:	श्री संजय सिन्हा
बच्चे	:	शिवम सिन्हा, शिवांगी सिन्हा
शिक्षा	:	एम.ए., पी-एच.डी.
सदस्यता	:	बुन्देलखण्ड इतिहास परिषद् एवं शोध संस्थान, छत्तीसगढ़ इतिहास परिषद्, रिसर्च जोन अम्बिकापुर, सुन्दर सुभेष अन्तर्राष्ट्रीय शोध-पत्रिका विषय विशेषज्ञ।
अनुभव	:	अध्यापन अनुभव 30 वर्ष स्नातक एवं 22 वर्ष स्नातकोत्तर
प्रकाशित	:	पुरातात्त्विक स्थल रतनपुर एक अध्ययन, जनजातीय विकास की अवधारणा (पुस्तकें), 20 राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय शोध आलेख
विशेष	:	50 राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय शोध संगोष्ठियों में भागीदारी एवं शोध निर्देशक
सम्प्रति	:	इतिहास विभाग प्रमुख, शासकीय माता शबरी नवीन कन्या महाविद्यालय बिलासपुर, छत्तीसगढ़ - 495001
सम्पर्क	:	कपिल नगर (कच्छ गुर्जर समाज भवन के पास), सीपत रोड, मुंगा सरकण्डा, बिलासपुर (छत्तीसगढ़) - 495001
ई-मेल	:	shashi.sinha207@gimal.com

समता प्रकाशन

प्रकाशक एवं पुस्तक विक्रेता

बजरंगनगर, रूरा, कानपुर (देहात)-209303

(उत्तर प्रदेश)

मो० 09450139012, 09936565601

E-mail : samataprakashanrura@gmail.com

₹ 450/

जनजातीय विकास की अवधारणा ★ डॉ. कमाने, डॉ. त्रिपाठी, डॉ. सिन्हा

जनजातीय विकास की अवधारणा

डॉ. कमाने, डॉ. त्रिपाठी, डॉ. सिन्हा

पुरातात्त्विक स्थल रतनपुर एक अध्ययन ★ डॉ. सिन्हा

अनुक्रम

- रतनपुर का भौगोलिक परिदृश्य
- युग-युगीन रतनपुर का धार्मिक एवं पौराणिक महत्त्व
- रतनपुर ऐतिहासिक परिदृश्य
  कल्चुरीकालीन
  मराठाकालीन
  ब्रिटिशकालीन
- रतनपुर का पुरातात्त्विक वैभव
  मूर्तिकला
  प्राचीन हस्त शिल्पकला
- रतनपुर का पुरावैभव
- रतनपुर के प्रमुख दर्शनीय स्थल
  भ्रमणीय एवं मनोरंजक पर्यटन स्थल
  कल्चुरीकालीन तालाबों का धार्मिक एवं ऐतिहासिक महत्त्व
- रतनपुर की धार्मिक एवं सांस्कृतिक परम्परायें
- उपसंहार एवं निष्कर्ष

Govt. M.S. Naveen Girls College Bilaspur (C.G.)

ISBN : 978-93-80511-38-2

डॉ. (श्रीमती) शशिकला सिन्हा

जन्म : 29 जून 1962
माता : स्व. बसंती देवी अम्बष्ट
पिता : स्व. जे.पी. अम्बष्ट
पति : श्री संजय सिन्हा
बच्चे : शिवम सिन्हा, शिवांगी सिन्हा
शिक्षा : एम.ए., पी-एच.डी.
सदस्यता : बुन्देलखण्ड इतिहास परिषद् एवं शोध संस्थान, छत्तीसगढ़ इतिहास परिषद्, रिसर्च जोन अम्बिकापुर, सुन्दर सुभेष अन्तर्राष्ट्रीय शोध-पत्रिका विषय विशेषज्ञ।
अनुभव : अध्यापन अनुभव 30 वर्ष स्नातक एवं 22 वर्ष स्नातकोत्तर
प्रकाशित : पुरातात्त्विक स्थल रतनपुर एक अध्ययन, जनजातीय विकास की अवधारणा (पुस्तकें), 20 राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय शोध आलेख
विशेष : 50 राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय शोध संगोष्ठियों में भागीदारी एवं शोध निर्देशक
सम्प्रति : इतिहास विभाग प्रमुख, शासकीय माता शबरी नवीन कन्या महाविद्यालय बिलासपुर, छत्तीसगढ़ - 495001
सम्पर्क : कपिल नगर (कच्छ गुर्जर समाज भवन के पास), सीपत रोड, नया सरकण्डा, बिलासपुर (छत्तीसगढ़)-

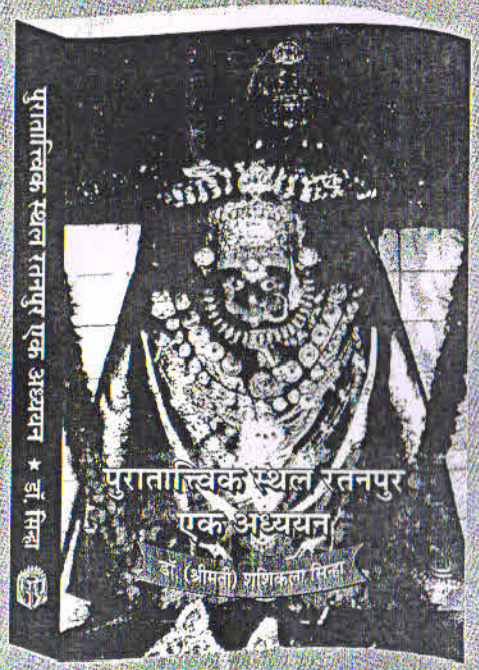

समता प्रकाशन
प्रकाशक एवं पुस्तक विक्रेता
बजरंगनगर, रूरा, कानपुर (देहात)-209303
(उत्तर प्रदेश)
मो० 09450139012, 09936565601

ISBN 978-93-80511-38-2

डॉ. (श्रीमती) शशिकला सिन्हा

जन्म	:	29 जून 1962 ई.
माता	:	स्व. बसंती देवी अम्बष्ट
पिता	:	स्व. जे.पी. अम्बष्ट
पति	:	श्री संजय सिन्हा
बच्चे	:	शिवम सिन्हा, शिवांगी सिन्हा
शिक्षा	:	एम.ए., पी-एच.डी.
सदस्यता	:	बुन्देलखण्ड इतिहास परिषद् एवं शोध संस्थान, छत्तीसगढ़ इतिहास परिषद्, रिसर्च जोन अम्बिकापुर, सुन्दर सुभेष अन्तर्राष्ट्रीय शोध-पत्रिका विषय विशेषज्ञ।
अनुभव	:	अध्यापन अनुभव 30 वर्ष स्नातक एवं 22 वर्ष स्नातकोत्तर
प्रकाशित	:	पुरातात्त्विक स्थल रतनपुर एक अध्ययन, सं.- जनजातीय विकास की अवधारणा, सं.- महिला सशक्तिकरण का वर्तमान परिदृश्य (पुस्तकें), 20 राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय शोध आलेख प्रकाशित
विशेष	:	50 राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय शोध संगोष्ठियों में भागीदारी एवं शोध निर्देशक
सम्प्रति	:	इतिहास विभाग प्रमुख, शासकीय माता शबरी नवीन कन्या महाविद्यालय बिलासपुर, छत्तीसगढ़ - 495001
सम्पर्क	:	कपिल नगर (कच्छ गुर्जर समाज भवन के पास), सीपत रोड, नया सरकण्डा, बिलासपुर (छत्तीसगढ़) - 495001
ई-मेल	:	shashi.sinha207@gimal.com

समता प्रकाशन

प्रकाशक एवं पुस्तक विक्रेता

बजरंगनगर, रूरा, कानपुर (देहात)-209303

(उत्तर प्रदेश)

मो० 09450139012, 09936565601

E-mail : samataprakashanrura@gmail.com

Naveen Girls College Govt. M.S. Bilaspur (C.G.)

ISBN 978 93 80511 47 4

9 789380 511474 >

₹ 600/-

महिला सशक्तिकरण का वर्तमान परिदृश्य ★ सं- दीपक, डॉ. भावना, डॉ. शशि

महिला सशक्तिकरण का वर्तमान परिदृश्य

सम्पादक- दीपक कुमार, डॉ सुश्री भावना कमाने

डॉ० (श्रीमती) शशिकला सिन्हा

Govt. N.S. Naveen Girls College Bilaspur (C.G.)

ISBN : 978-93-82119-51-7

© : संपादकगण

मूल्य : पाँच सौ रुपये

प्रथम संस्करण : 2016

प्रकाशक : नवभारत प्रकाशन
डी-626, गली नं. 1, अशोक नगर
(निकट ललिता मन्दिर)
शाहदरा, दिल्ली-110093
मोबाइल : 09968047183, 09717507223
email : fatehchand058@gmail.com

शब्द-संयोजन : मुस्कान कम्प्यूटर्स, दिल्ली-110094

मुद्रक : पूजा प्रिंटर्स
जगतपुरी विस्तार, दिल्ली-110093

Samkaleen Sahitya Chintan : Vividh Swar
Edited by *Manoj Pandey & Santosh Girha*

Govt. Naveen Girls College ★ Bilaspur (C.G.)

अनुक्रम

दो शब्द 7

प्रकृति से संवाद करती समकालीन कविता /
डॉ. प्रभाकरन हेब्बार इल्लत 9

वैश्वीकरण की चुनौतियाँ और हिन्दी कविता / **प्रा. परिवर्तिका अंबादे** . 24

साहित्य का सामाजिक सरोकार और लेखक की पीड़ा /
डॉ. ब्रह्मानंद मिश्र 31

आज की कविता और अस्तित्व का प्रश्न / **डॉ. टीकमणि पटवारी** 34

वैश्वीकरण की चुनौतियाँ और साहित्य / **डॉ. फूलदास महंत** 39

कथा साहित्य में सामाजिक व्यवस्था / **डॉ. हरिणी रानी आगर** 45

भारतीय समाज में दलित साहित्य की स्थिति / **डॉ. कल्पना कावळे**.... 53

21 वीं सदी के प्रश्न और साहित्यकार की भूमिका /
प्रा.किरण सक्सैना 62

अल्मा कबूतरी उपन्यास में आदिवासी समाज की समस्या /
प्रा. किसन गावित 69

वर्तमान संदर्भ में 'अँधेरे में' : एक पुनर्पाठ / **डॉ. मनोज पाण्डेय** 72

मोहन राकेश : साहित्य का सामाजिक सरोकार और लेखक की पीड़ा/
प्रा. मनोहर कुमार 77

जरूरी सवालात और साहित्य / **डॉ. नीलमणि दुबे** 90

साहित्याची सामाजिक बांधिलकी आणि लेखकाची भूमिका /
डॉ. धनराज माने 94

रमेशचंद्र शाह एवं नारी विमर्श / **भूमिका वर्मा** 99

स्वातंत्र्योत्तर हिंन्दी व्यंग्य साहित्य में वर्ग चेतना : समकालीन प्रश्न /
भावेश कुमार महतो 105

हिन्दी में विज्ञान कथा लेखन : परम्परा और विकास /
डॉ. अजय पाण्डेय 112

जागतिकीकरणात मराठी दलित कवितेची अस्मिता /
डॉ. प्रेमा चोपडे-लेकुरवाळे 117
हाशिये का साहित्य : गुजराती दलित कविता /डॉ. मोहनभाई चावडा 122
बदलते सामाजिक मूल्य और ममता कालिया की कहानियाँ /
प्रा. संतोष गिरहे 130
हाशिये का समाज और हिन्दी साहित्य / प्रा. नेहा एस. पारेख 136
भू मण्डलीकरण और आदिवासी साहित्य / अमितभाई पटेल 140
सामाजिक सरोकार के पुरोधा : डॉ देवेश ठाकुर /
डॉ. पवन कुमार शर्मा 143
साहित्य और समाज / प्रा. लक्ष्मण किसनराव पेटकुले 149
हाशिये का समाज और संत रविदास का काव्य सृजन
डॉ. प्रतिमा यादव 152
साहित्याचा-समाजिक अनुबंध व लेखकाची भूमिका
(जागतिकीरणाच्या संदर्भात) / प्रा. अनिता हिंम्मतराव तायडे.... 157
इतिहास, बाजार और हिन्दी साहित्य / सनीश चन्द्र 166
नीरज की कविताओं में दायित्व बोध व वैश्वीकरण की चुनौतियाँ /
डॉ. सपना तिवारी 170
दिनकर के काव्य में प्रजातंत्र / डॉ. श्रीमती सविता यादव 178
दूसरी दुनिया का यथार्थ और दलित नारी-प्रश्न /
डॉ. सीमा सूर्यवंशी 182
समाजिक सरोकार और लेखक की पीड़ा / बेला महंत 186
वैश्वीकरण की चुनौतियाँ और साहित्य / प्रा. डॉ. सुरेखा प्रे. मंत्री 190
मैत्रेयी पुष्पा के उपन्यासों में नारी-विमर्श /
प्रा. डॉ. उमावती मोहनचन्द्र पवार 192
आज के सवाल और ओमप्रकाश वाल्मीकि / अशोक कुमार 198
वर्तमान हिंदी गजल में सामाजिक सरोकार / मस्तान शाह 201
हाशिये का समाज और 'मलाका'/ डॉ. मुकुंदभाई एच. पटेल 206

दो शब्द

समकालीन हिंदी साहित्य दरअसल विभिन्न चिंतन सरणियों के बहुआयामी स्वरों का समुच्चय है। इस दौर में साहित्य–समाज में हुए परिवर्तनों की आहट संकलित आलेखों में दर्ज हुई है। हमारा प्रयास रहा कि अपने दौर की सोच को इस बहाने उभारा जाय और विभिन्न मुद्दों पर एक सार्थक बहस की पहल की जाय। आज के सवालों से जूझता साहित्य अपने समय –संदर्भ के साथ किस तरह और किस हद तक सम्बद्ध है इसकी परख–पड़ताल इससे हो सके– ऐसी हमारी कोशिश रही।

गुरू पुर्णिमा, 2015

संपादकद्वय

Naveen Girls College Govt. M.S. Bilaspur (C.G.)

समाजिक सरोकार और लेखक की पीड़ा

बेला महंत
सहायक प्राध्यापक (हिन्दी)
शासकीय क्रांतिकुमार भारतीय, महाविद्यालय सक्ती
जिला–जांजगीर–चाम्पा (छ.ग.)

सः हित के भाव ही साहित्य की प्रासंगिकता है। मैथ्यु अर्नाल्ड ने साहित्य को जीवन अलोचना कहा है। साहित्य में जो विचार अभिव्यक्त होते है ,उनका आधार समय विशेष होता है। सजग और सचेत रत्नाकार ही कालजयी साहित्य रच सकता है। सामाजिक परिस्थतियों की विषमता से संवेदनशील सहृदय लेखक की पीड़ा उसकी रचनाओं में अभिव्यक्त होती है। आदिकाल से वर्तमान युग तक साहित्य में यह पीड़ा दिखाई देती है।

प्लेटो, अरस्तु, चाणक्य की रचनाएं तात्कालीन सामाजिक परिस्थितियों में परिवर्तन के उद्देश्य से सर्जित हुई। आदिकाल में नारी की दशा दयनीय थी, नारी पुरुष की भोग्या थी नरपति नाल्ह के "बीसलदेव रासो" में नायिका के क्रदन के माध्यम से रसिक पुरुष की वासना से अभिभूत तात्कालीन नारी समाज का चीत्कार ध्वनित हो उठा–

अस्त्रीक जन्म कोई दीधड़ महेश। अवर जन्म धारई घणा रे नरेश।।

निर्गुण संत कबीर असाधारण बौद्धिक व्यक्ति थे। कबीर के समक्ष चेतना से शून्य एक ऐसा समाज था जो पशुवत यांत्रिक जीवन जी रहा था। जातिभेद की विषमता से पीड़ित जन की व्यथा क्रांतिकारी समाज सुधारक कबीर को उद्वेलित करती है और वे ललकार उठते है:–

जो तू बाम्हन बाम्हनी जाया, आन राह ते क्यों नहीं आया।

कबीर का मानवतावाद निम्न पंक्तियों में उभरता है:–

"अल्ला एकै नूर अपनाया , ताकि कैसी निंदा
एक नूर ते सब जग उपज्यो, कौन भला कौन मंदा"

महाकवि तुलसी के समन्वयवादी दृष्टिकोण और लोकमंगल की भावना ने राम साहित्य के माध्यम से समाज को नई दिशा प्रदान की।
नीच जाति के कहे जाने वाले निषाद को भरत गले लगाकर पुलकित होते है:–

Naveen Girls College Bilaspur (C.G.)

लोक भेद सब भांति हि नीचा।
जासु छांह छुई लेइउ सीचां।
तेहि भरि अंक राम लघु भ्राता।
मिलत पुलक परिपूरित गाता।।

शबरी के कंदमूल फलो को राम का प्रेमपूर्वक ग्रहण करना तुलसी दास ने तात्कालिक समाज में फैली जातिगत विषमता को दूर करने का आदर्श समाज के समक्ष मर्यादापुरुषोत्तम राम के चरित्र के माध्यम से रखा।

आधुनिक काल के प्रवर्तक कवि भारतेंदु हरिचंद्र जिन्होने "मुद्राराक्षस में रानी विक्टोरिया की प्रशंसा की थी–

पूरी अगी की कटोरिया सी, चिरजीवो सदा विक्टोरिया रानी"

वहीं भारतेंदु अंग्रेजी राज्य के शोषण एवं दमन से दुखी होकर अपनी पीड़ा की अभिव्यक्ति भारत दुर्दशा में प्रकट करते है:–

रोअहु सब मिलकै, आवहु भारत भाई, हा हा! भारत दुर्दशा न देखी पाई।

भारतीयों के शोषण दमन से व्यतित "बद्रीनाथ चौधरी की पीड़ा इन शब्दो में अभिव्यक्त हुई है–

"निरधन दिन दिन होत है, भारत भुव सब भांति।
ताहि बचाय न कोय सकत, निज भुज बुधि बल कांति।।"

राष्ट्रीय चेतना के कवि बालकृष्ण शर्मा नवीन समाज में व्याप्त भूखमरी, गरीबी, लाचारी की पीड़ा से विक्षुब्ध होकर सर्वशक्तिमान ईश्वर की सत्ता को ललकार उठते है:–

"और चाटते जूठे पत्ते, उस दिन देखा मैंने नर को।
उस दिन सोचा क्यों न आग लगा दू दूनियां भर को।
यह सोचा क्यों न टेटुंआ घोटा जाय, स्वयं जगतिपति का।
जिसने अपने ही स्वर को, रूप दिया इस घृणित विकृति का।

उत्तर आधुनिक युग में जन चेतना, वर्ग संघर्ष शोषण के विरुद्ध विद्रोह, नारी उत्कर्ष के भावों का प्राधान्य रहा। प्रगतिशील लेखक संघ के प्रथम अधिवेशन 1936 में लखनउ के अध्यक्षीय भाषण में प्रेमचंद ने कहा "हमारी कसौटी पर वही साहित्य खरा उतरेगा, जिसमें उच्च चिंतन हो, स्वाधीनता का भव्य हो, सौदंर्य का सार हो, सृजन की आत्मा हो, जीवन की सच्चाई का प्रमाण हो।

मार्क्स के क्रांतिकारी विचारों ने विश्व चिंतन को प्रभावित किया। साम्यवादी समाज की परिकल्पना ने नए युग की शुरूवात की। हशिए का समाज" साहित्य का केन्द्र बन गया। निराला जी की कविता में माननीय संस्पर्श की उष्मा भरी है–

"पेट पीठ मिल रहे हो एक , चल रहा लकुटिया टेक"

मुट्ठी भर दाने को , अपनी भूख मिटाने को"

कवि दिनकर वर्गभेद से पीड़ित होकर क्रांति का समर्थन करते है:–

श्वानो को मिलता दूध वस्त्र, भूखे बच्चे अकुलाते है, मां की हड्डी से चिपक, ठिठुर, जाड़े की रात बिताते है।

युवती के लज्जा वसन बेच,जब ब्याज चुकाये जाते है"
मलिक तब तेल फुलेलो पर, पानी सी द्रव्य बहाते है।

प्रगतिशील जनवादी कवि त्रिलोकन ने अपनी कविता सामान्य के दर्द की अभिव्यक्ति की–

दर्द जो आया तो दिल में उसे जगह दे दी,
आके बैठ गया, मुझसे उठा न गया"

कवि केदारनाथ अग्रवाल ऋणग्रस्त किसान की बात करते हुए लिखते है :– बनिए के रुपयो का कर्जा, जो नहीं चुकाने पर चुकता"

नारी के दयनीय स्थिति का चित्रण कवि "शील" करते है :–

आज भी तुम
दान दी जाती हो कन्यादान में,
यह नहीं दासत्व तो फिर और क्या है।
आज भी तुम बिक रही हो बाजार में,
यह नहीं दासत्व तो फिर और क्या है।

सातवें दशक के दौर में धूमिल की "पटकथा" में यथार्थवाद , संवेदनहीनता, और अनास्था नकारात्मक की पीड़ा अभिव्यक्ति है :–

मैंने महसूस किया कि मैं वक्त के,
एक शर्मनाक दौर से गुजर रही हूं,
अब ना कोई किसी का खाली पेट
देखता है, न थरथराई हुई टांगे,
सूर्यहीन कन्धा देखता है हर आदमी,
सिर्फ अपना धंधा देखता है।

तकनीकी सभ्यता ने धरती के स्नायु तंत्र को छिन्न भिन्न कर दिया गया है। "जल संकट" की पीड़ा ज्ञानेंद्र पति की "नदी और साबुन" कविता में झलकती है :–

नदी ! / तू इतनी दुबली क्यों है
और मैली कुचैली
मरी हुई ईच्छाओं की तरह मछलियां क्यों उतराई है,
तुम्हारे दुर्दिनों के दुर्जल में
किसने तुम्हारा नीर हरा / कलकल में कलुष भरा

आधुनिक सभ्यता कि दौर में बाजारवाद चरम सीमा पर है।

बाजारवाद की पीड़ा एकांत श्रीवास्तव की पंक्तियां–

दिल्ली के एक चौराहे पर
मैं उसे देखकर डर गया
कि जो आकाश से बरसता है बेमोल
जो नदियों में बहता है खुले आम
तो वह पानी भी बिकाउ हो गया, बाजार में

आज के विघटित परिवार के दौर में नवयुवक अपने अस्तित्व की तलाश में है–

मैं हूं कौन ? मैं हूं कौन
मैं ही आज अकेला नहीं / मेरे पीछे है भीड़ खड़ी

वर्तमान दौर में नारी की सुरक्षा पर प्रश्न चिन्ह लगाती तेजाब काण्ड से पीड़ित युवती की पंक्तियां:–

क्या था मेरा कसूर?
तुम्हारा इजहार था / मेरा इनकार था
दुआ मांगती हूं / अगले जन्म में,
बनू तुम्हारी बेटी
और फिर से मिले मुझे
तुम जैसा आशिक

"साहित्य समाज का दर्पण है" हजारी प्रसाद द्विवेजी जी की यह पंक्ति कालजयी है। साहित्य का सामाजिक सरोकार और लेखक की पीड़ा साहित्य में मुखरित होती रही है। साहित्यकार की चेतना शक्ति अभूत पूर्व होती है।"

संवेदनशील लेखक आदिकाल से वर्तमान तक अपनी पीड़ा से मानवीय संवेदनाओं को अभिव्यक्ति करता रहा है। मानव की पीड़ा को सामाजिकता प्रदान करता रहा है। करता रहेगा क्योंकि साहित्य समाज के लिये बना है और समाज से ही साहित्य है।

संदर्भ ग्रंथ

बीसलदेव रास नरपति नाल्ह
रामचरितमानसः तुलसी दास
हिंदी साहित्य का इतिहास : डॉ. नागेन्द्र
हिंदीकाब्य और प्रयोगवादः डॉ. रामकुमार खाण्डेवाल
कबीर ग्रथावलीः श्याम सुंदर दास
प्रगतिवादी काब्य साहित्यः कृष्ण कमलहंस

Govt. M.S. Navean Girls College Bilaspur (C.G.)

आर्थिक विकास एवं पर्यावरण

Economic Development & Environment

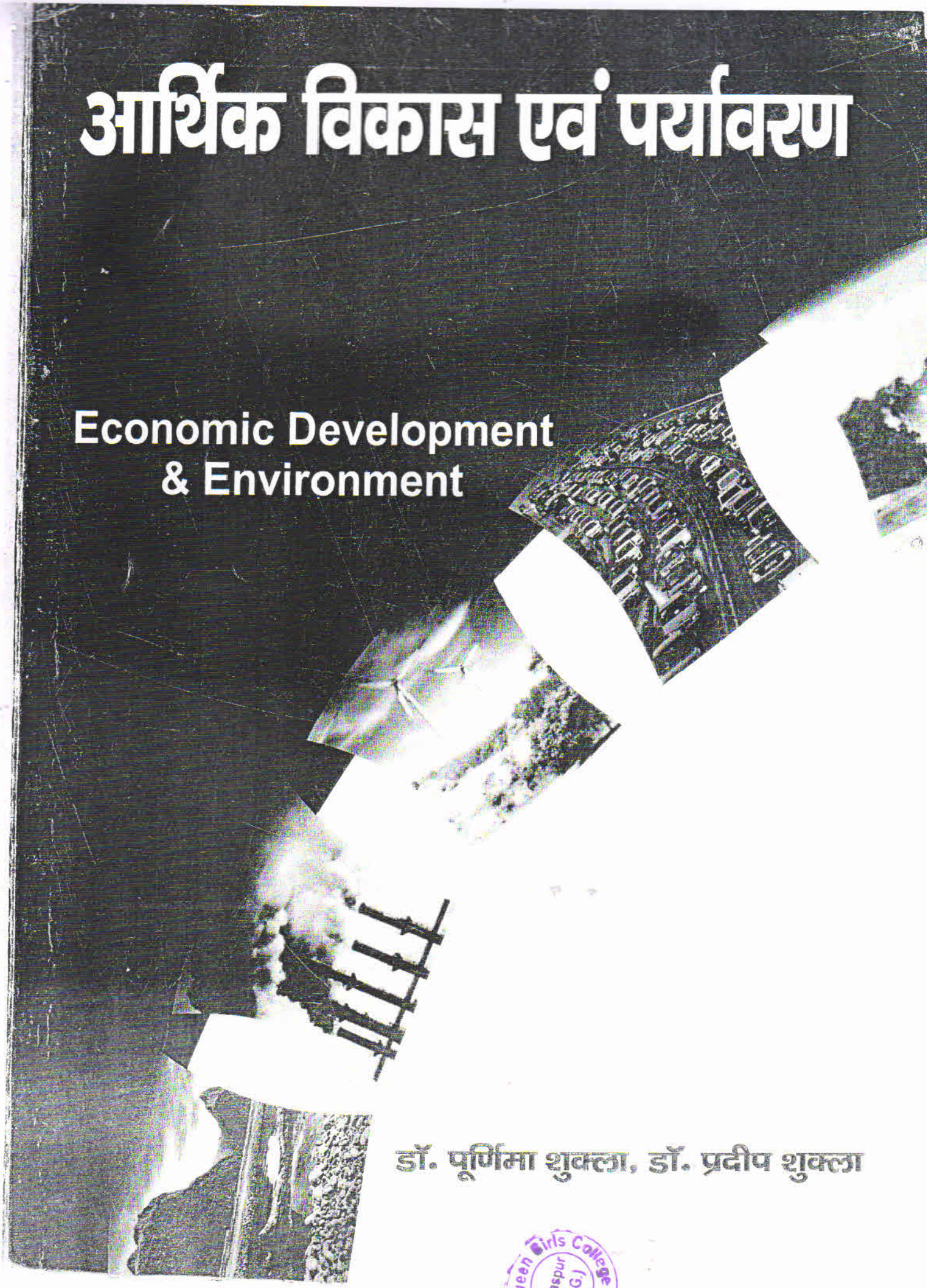

डॉ. पूर्णिमा शुक्ला, डॉ. प्रदीप शुक्ला

Govt. M.S. Naveen Girls College ★ Bhaspur (C.G.)

अनुक्रम

खण्ड प्रथम : आर्थिक विकास एवं पर्यावरण

1. Natural Resources - Economy and Livelihood Pattern of Chhattisgar 7
2. आर्थिक विकास में उद्योगों की भूमिका 12

खण्ड द्वितीय : ग्रामीण विकास एवं पर्यावरण

3. पूर्वी शिवनाथ बेसिन की कार्यशील महिलाओं की ग्रामीण विकास में आर्थिक सहभागिता 18
4. ग्रामीण विकास के पर्यावरणीय मुद्दे 34
5. ग्रामीण क्षेत्र में स्थानीय जल संसाधन एवं प्रबन्धन छत्तीसगढ़ प्रदेश के बलौदाबाजार तहसील के संदर्भ में 44
6. ग्रामीण भारत व बदलता परिवेश 53

खण्ड तृतीय : संसाधन विकास एवं पर्यावरण

7. Assessment of Land Use / Land Cover Changes in Madla Jhor Micro watershed, Bankura District, West Bengal, India: Using Remote Sensing and GIS Technology 61

खण्ड चतुर्थ : औद्योगिक विकास एवं पर्यावरण

8. औद्योगिक विकास एवं पर्यावरण अवनयन 67
9. जांजगीर-चाम्पा जिले में औद्योगीकरण के प्रभाव से होने वाले दुरगामी परिणाम एवं नियोजन 73
10. Levels of Industrial Development in Eastern Uttar Pradesh : An Analysis in Spatial Scenario 81

खण्ड पंचम : सामाजिक-आर्थिक विकास एवं पर्यावरण

11. मध्य प्रदेश में सामाजिक आर्थिक विकास : एक भौगोलिक अध्ययन 87

खण्ड षष्ठम : विकास एवं पर्यावरण

12. पर्यावरण अवनयन की लागत पर आर्थिक विकास 93
13. ऊर्जा उपयोग, पर्यावरण एवं संपोषणीय विकास 97
14. Physical Carrying Capacity Assessment in Coastal Tourist Destination – A Case Study in Digha, West Bengal 102
15. छ, ग, में नक्सल समस्या एवं समाधान (सांस्कृतिक प्रदूषण) 107
16. भारत में ई-कचरा प्रबंधन की चुनौतियाँ 111
17. पर्यावरण संरक्षण में मानव की भूमिका 122
18. सौर ऊर्जा का उपयोग एवं पर्यावरण संरक्षण 130

Naveen Girls College Govt. M.S. Bilaspur (C.G.)

Natural Resources - Economy and Livelihood Pattern of Chhattisgar

1. Dr. Sangita Shukla and 2. Dr. Deepak Shukla

Abstract

Livelihood can give people the means to ensure access to facilities such as education, health care and safe habitats. Livelihood impact the quality of life, afford a certain standard of living, and help people overcome the daily battle for survival. Secure Livelihoods reduce depends on natural resources, government or middlemen. Secure Livelihood bring about economic independence and lead to increased self-reliance, help to build productive assets and skill, and give to people the ability to intervene in the environment, natural, cultural, social, economic and institutional.

Key words : *Livelihood, habitat*

Introduction

Chhattisgarh is a land blessed with a pleasant climate as well as priceless heritage that has sustained and nourished its people through the ages. The state has rich natural resources including land, forest water, minerals and powers. These abundant resources are of high quality and are spread across the state, allowing an exceptional degree of access and availability.

The people and communities have treated the gifts of the nature with revenue. They have evolved a way of live unique to this verdant land, a way that seeks to protect this legacy for future generations Pivotal to life and livelihood are the trinity of water forest, and land. Each of these is important but they are also dependant on each other-and on the people. Water nourishes the forests and the land.

The forests are repositories of diversity and natural wealth. From the land comes food and security each year. For centuries, people have built their tradition, consumption, habitat pattern and livelihoods around these resources. celebrated the song and folklore, deified and venerated the people know and understand the importance of these resources.

1. *Dr. (Smt.) Sangeeta Shukla, (Asst. Prof.) Geography, Govt. Bilsa Girls' P.G. College Bilaspur*
2. *Dr. Deepak Shukla, (Asst. prof.) Commerce, Govt. Mata Sabari Naveen Girls College Bilaspur.*

Naveen Girls College Bilaspur (C.G.) Govt.

These themes aroused passions and a great deals discussion, the issue and relationship related natural resources as a corollary to life and livelihood . their definition and content reflect a more control livelihood pattern and a larger economic dimension that extends beyond the immediate space of a village settlement or a city. The relationship between the people and natural resources transcends the confines of modern market and employment approaches. The relationships are immediate yet dynamic and are part of a complex web in which culture, social values environment, health, knowledge and life style are intertwined.

Discussion and Data Analysis :-

1. The first section of this study are discuss analysis the availability of natural resources in Chhattisgarh, special reference to water, forest and land.
2. The second section present a macro-economic view of the livelihood pattern based on secondary data.
3. The last section deal conclusion

[I] Availability of Natural resources –

There are many natural resource in Chhattisgarh. In the plains of Chhattisgarh, land and water are seen as the primary resources. For the people of the hill tracts in the north and the south of the state, water and the forests are the critical resources, seen as the key to survival, sentence and advancement. The availability of water resource is better in the north and the south of the state. Similarly forests and common property resources such as land are also more plentiful in these region. As per reports the availability of natural resources water, Forest and land in Chhattisgarh, water is available in 42% in northern region, 33% central region, 57% in southern region. The forest is available in 77%,in northern,39% in central region and79% in southern region The land for common purpose available in 57% in northern region, 46% in central region and 64.93 in southern regions.

In whole state the water, forest and land available in percentage eg. 44.2%, 65.2% and 56.6%.

Water Resources

The state of Chhattisgarh forms part of the extended river basin of four major rivers – the Mahanadi, Godavari, Narrmda and the Ganga. The combined river length flowing through the state is 1885 kilometers. These river provide a large network of surface water and support the primary sources of irrigation in the state. The surface water available for use is 41,720 million cubic metres (Mcm). The state has major, 30 medium and 2017 minor irrigation projects maintained by the water resource department.

Adequate Availability of Water :-

In northern region of Chhattisgarh the drinking water available 42%, water for house hold needs 57% and Irrigation purpose 19.6% In central region water available 26%, water for house hold 28% and Irrigation purpose 36%. In Southern region of Chhattisgarh 56% water available for drinking water 62% available for house holds needs and 17% for irrigation purpose. Project report data.

Govt. M.S. Naveen Girls College Bilaspur (C.G.)

Most water bodies at the village level are managed by traditional and community based systems over the years these have begun to break down in the face of social and economic change and due to the emergence of alternate structure of authority.

Uses of Water ;-

Traditionally, water from open well and tanks has been utilized for domestic and drinking purposes, while canal and river water has been used for irrigation.

Long-established irrigation system provide for the division of water from small rivers, seasonal streams and ancient water tanks. Small water storage tanks, constructed in cultivated fields store rain water for irrigation. These are supplemented by animal power operated water drawl system. Traditional methods are suitable for small compact area but are inadequate to meet the needs of large scale, assured irrigation. Since, they are substantially dependent on rainfall; they tend to be most efficient during the monsoon and shortly thereafter, and are ideally suited for single crop based agriculture. The availability of water for drinking and house hold needs is best in southern region. There is a shortage of drinking water in the central plains region. Although irrigation is more prevalent in this region.

Cropping intensities in the state are low, since agriculture continues to be largely dependent on the monsoon and most cultivators still practice single crop agriculture.

The last few years have been seen a significant increase in the irrigation infrastructure of the state in irrigation schemes as well as in the investment in irrigation such as energized pumps. Cannels and river that about 45% of the habitations in Chhattisgarh have access to canal based irrigation. The overall dependence on river for irrigation purpose in 53.3%. Both canals and river are an important source of irrigation in the south, while in the north and central area, other sources are also important.

Forest Resource ;-

The people of Chhattisgarh have a symbiotic relationship with forests. There is religious reverence and a grateful recognition of nature's benevolence. There is also an appreciation and understanding of the impact of the environment or the lives of the people with its vast forest cover (135. 244 sq. kms, 44% of the state's area). The economy culture, tradition and livelihood are inextricably linked to the forests.

The forest of the state are of two major types tropical moist, deciduous and tropical dry deciduous, most of the dense forests are consented in the northern (Surguja, Korea, Jashpur, and Korba district and the Sourthern regions of state have much less forest cover. In the region the dependence on agriculture and therefore on land as a source of livelihood is much higher.

Use of forest resources for different purposes :-

In northern region – forest resources used in as furniture 22%, firewood 60%, Herbs and medicines 23% minor forest produce 50%.

In central region furniture 9%, firewood 12.5% Herbs and medicines 7.5% minor forest produce 37%. In southern region of Chhattisgarh, forest produce as use form furniture 31.8%, firewood 61.9%, Herb and medicines 39.5% minor forest produce 60%.

Govt. M.S. Naveen Girls College Bilaspur (C.G.)

Forest produce and economy :-

(i) There are 797 nistaar depots in the state Each family is eligible to get bamboo for domestic use at a subsidized rate form these depots.

(ii) Forest dependent communities are entitled to access forest for grazing, limited by the carrying capacity of forests. They may collect (free of cost) dry and fallen fuel wood and folder, medicinal plants may also be collected (by non-destructive means) for sale.

(iii) The Based community is eligible to get 1.500 bamboos per family, per year, (Subject to availability of bamboo) at subsidized rates, for bamboo-based income generating activities.

(iv) Forest dependent communities are free to collect tendu patta, sal, seed, harra and gum and sell this to notified outlets of Chhattisgarh major forest produce cooperative Federation at pre determined rates. Registered collectors of tendu patta are eligible for bonus and group insurance facilities.

Land resource :-

The land of Chhattisgarh is about 1.35 lakh sq kilometers About 36% of the area is cultivated and another 44% is under forest (forest land and revenue forest). Of the total land area in the state, 4,828 thousand hectares' are sown, and the netsown area. Per head is 0.24 hectares. The gross sown area is 5,327 thousand hectares. The highest Percentage of land under agriculture is in Durg, Janjgir-champa. Mahasamund (all above so percent) followed by Raigarh, Bilaspur, Kabirdham, Rajnanadgaon and Raipur (all above 40%) The lowest percent of net sown area to total area, is in Korea (18.7)% followed by Dakshin bastar Dentewada (19%) and Bastar (21%) .

Land has been categorized according to the traditional classification. This varies from district to district. The choice of the types of seeds the crops that are sown and the technology that is used depends on this classification. It is a choice that has been tested and tried over generation and ensures some productivity irrespective of the quality of the land. In many area the quality of land is not suitable for agriculture while the undulating terrain and rock surface is a constraint. The setting up of coal mines and coal related industries in districts like Korba & Korea, have meant that both land and water have been contaminated by pollutants such as fly ash. that indiscriminate use of chemical fertilizers has affected land quality and led to a decline in productivities.

[II] Economy and Livelihood Patter :-

This section focuses on understanding the livelihood in the state of Chhattisgarh. The economy of the state the livelihood pattern and major sources of employment are explained using quantitative data from primary and secondary sources.

The primary sector, more specifically agriculture and allied activities, forms the base of the state's economy and provides, livelihood to 80 percent of the rural population. The rural economy has a diversified base with agriculture and allied activities as the mainstay accompanied by a thriving rural non farm economy. According to available secondary data

on income and livelihood, the per capita Net state Domestic Product (NSDP) in the state was Rs. 12476 in 2001-2002, The per capita NSDP has increased at an average rate about two percent per annum.

Although there has been a gradual decline in the share of the primary sector in the NSDP it still continues to be very significant. The primary sector accounted for about 38 percent of the NSDP in 2001-2002, which was roughly the same share as the secondary sector. The secondary sector expanded rapidly from 27.3 percent to 38.5 percent of NSDP, in the 1993-94 to 2001-2002 period. The share of the tertiary or service sector in the state income has been a decline in 2001-2002, after a rapid increase in late 1990.

According to the 2001 census the work force participating rate for state is 46.5 percent. The rural work force participation (WFPR) is higher at 50 percent, compared to the urban WFPR of 31 percent. Marginal workers constitute about 27.2 percent of the total work force in the state of which 70 percent are women. Around 76 percent of total workers are employed in agriculture. Agriculture labor account for 32 percent of the work force.

[III] Conclusion :-

The state and its institutions will have to play a vital role in expanding the macro linkage and network associated with livelihoods. These linkage have 50 far been poorly established and used, and have not allowed for a steady and stable growth of potentially viable work sectors. People are unable to translate their lack of opportunities into a macro environment and context and their fore they look to the state for assistance.

The state on its part is unable to understand the dynamic of the micro-economic environment and the intricacies of the relationships and inter dependencies between types of livelihoods and more importantly the station of people in these livelihoods.

Reference

1. Chopra, K & B. Goldar (2000) : Sustainable Development framework for India; The case of water Resources (mimeo.) Institute of Economic Growth, Delhi.
2. Dasgupta, P & S Lele (2002) ; Water Resource sustainable Livelihoods and Ecosystem Service, Economic and Politically weekly, 37 (18).
3. Deshpandy vidya (2000) ; Integrated water Resource development : A plan for action (Executive summary) Report of The National Commission for integrated water resource development; ministry of water Resource, New Delhi.
4. Kolstad. C.D. (2000) : Environmental Economics, oxford university Press New Yark.
5. Parikh, Kirit S. Radha Krishna R (2002) : India development Report, oxford university Press New Delhi.
6. Malin. K. Shastre; Environmental resource management.
7. Ragmdwa, K.; National Human Reso. Development Project for Rural water supply and sanitation sector.
8. Sadhy, A. N. And Mahajan. R. K. ; Economic efficiency of agricultural resource – An Inter Regional Analysis, agricultural situation in India.
9. Report – Directorate of Economics and statistics government of Chhattisgarh.

Govt. M.S. Naveen Girls College Bhaspur (C.G.)

दण्डकारण्य

डॉ. अनिल कुमार मिश्रा
मो. शोएब अंसारी

Govt. Naveen Girls College
Bilaspur (C.G.)

विषय वस्तु

सम्पादकीय i

1. बस्तर संभाग का प्राचीन इतिहास: एक अध्ययन 1
   अमित कुमार
   डॉ0 देवेन्द्र कुमार सिंह

2. मुरिया जनजाति की भौतिक संस्कृति का मानवशास्त्रीय अध्ययन, बस्तर (छतीसगढ) 12
   डा0 आनन्द मूर्ति मिश्रा
   शबाना खान
   सुमन मौर्या

3. बस्तर की दोरला जनजाति का सामाजिक अध्ययन 31
   डॉ0 विजय कुमार

4. बस्तर के धुरवा जनजाति में जन्म संस्कार 50
   श्यामा चरण जोगे
   रत्ना नाग

5. दंडामी माड़िया जनजातीय में महिलाओं का स्तर एवं वर्तमान स्थिति 59
   वीना विश्वकर्मा

6. पूस कोलांग: बस्तर की मुरिया जनजातियों का देव नृत्य 68
   डा0 किरण नुरूटी

7. बस्तर की मृदा शिल्प कला का एक मानव–वैज्ञानिक अध्ययन 82
   बिन्दू साहू
   विनिता सरदार

8. बस्तर की जनजातियों के पारम्परिक अंलकार एवं आधुनिकता का प्रभाव 102
   शबाना बेगम

9. दण्डकारण्य क्षेत्र के पारंपरिक चिकित्सा पद्वतियों के रोगनिरोधी विश्लेषण 110
   डॉ0 नागेन्द्र कुमार चन्द्रवंशी

10. दण्डकारण्य परिक्षेत्र में बस्तर के आदिवासी जनजातीय समाज की संस्कृति एवं अर्थव्यवस्था का भौगोलिक अध्ययन 121
   डॉ0 संगीता शुक्ला
   डॉ0 दीपक शुक्ला

Naveen Girls College, Govt. M.S. Bilaspur (C.G.)

१०

दण्डकारण्य परिक्षेत्र में बस्तर के आदिवासी जनजातीय समाज की संस्कृति एवं अर्थव्यवस्था का भौगोलिक अध्ययन

डॉ. संगीता शुक्ला
सहायक प्राध्यापक (भूगोल)
शासकीय बिलासा कन्या स्नातकोत्तर महाविद्यालय, बिलासपुर (छ.ग.)

डा. दीपक शुक्ला
सहायक प्राध्यापक (वाणिज्य)
माता शबरी, शासकीय नवीन कन्या महाविद्यालय, बिलासपुर (छ.ग.)

प्रस्तावना

दण्डकारण्य विश्व का प्राचीनतम भू भाग, भारत के दक्षिण पठार का प्रमुख अंग है। इसका विस्तार १७° ५०' उत्तर से २०° ३०' उत्तरी अक्षांश एवं ८०° १५' से ८४° १२' पूर्वी देशान्तर के मध्य स्थित है। पूर्वी मध्य भारत का यह भौतिक क्षेत्र ४८० किलोमीटर पूर्व से पश्चिम की ओर एवं ३२० किलोमीटर उत्तर से दक्षिण की ओर विस्तृत है। दण्डकारण्य क्षेत्र ९२,३०० वर्ग किलोमीटर क्षेत्रफल में विस्तृत है। यह एक विभेदीकृत भौगोलिक इकाई के रूप में एक पठार की समस्त भौगोलिक विशेषतायें समाहित किये हुये, तीन भौगोलिक इकाईयों के बीच स्थित है। इसके पूर्व की ओर तटीय सीमा क्षेत्र, पश्चिम में अबुझमाड़ की पहाड़ियाँ एवं महाराष्ट्र का पठार, उत्तर में छत्तीसगढ़ बेसिन तथा दक्षिण में आन्ध्रप्रदेश स्थित है।

दण्डकारण्य क्षेत्र का विस्तार पूर्व में ओडिशा के फूलवाड़ी जिले से पश्चिम में महाराष्ट्र के चन्द्रपुर एवं यवतमाल तक उत्तर में दुर्ग, रायपुर से, दक्षिण

M.S. Naveen Girls College ★ Govt. Bilaspur (C.G.)

में गोदावरी बेसिन को सम्मिलित करते हुये आन्ध्रप्रदेश के वारंगल जिले तथा खम्मम जिले तक फैला हुआ है। दण्डकारण्य में व्यापक वनाच्छादित पठार एवं पहाड़ियाँ है जो पूर्व से पश्चिम में विस्तृत है। पश्चिम की ओर ढाल मंद है। इस क्षेत्र में अपेक्षाकृत मैदान भी है। इस क्षेत्र में महानदी व सहायक नदी, तेल, जोंक, उदंति, हट्टी एवं सांदूल प्रवाहित है तथा गोदावरी की सहायक नदी इंद्रावती व शबरी शामिल है। पठार पहाड़ियों के क्षेत्र में दोमट मिट्टी एवं मैदानी क्षेत्रों में उपजाऊ जलोढ़ मिट्टी है।

डॉ. आर० एल० सिंह ने दण्डकारण्य क्षेत्र को मेसो लेवल रिजन **(Meso Level Resion)** कहते हुये बस्तर को क्रमशः बस्तर उच्चभूमि एवं इंद्रावती शबरी मैदान के रूप में वर्गीकृत किया है। भूगर्भिक दृष्टि से यह धारवाड़ एवं कुडप्पा श्रेणी का है। यह पठार नीस चट्टानों का भी बना हुआ है। यह खनिज भण्डार से भी धनी है। दण्डकारण्य का ८० प्रतिशत भाग पहाड़ी और सघन वनाच्छादित क्षेत्र है जो आदिवासी बाहुल क्षेत्र है। सन् २००१ की जनगणना में ६८ प्रतिशत जनसंख्या आदिवासियों की है। ब्रिटिश अधिकारियों ने यहाँ २३ जनजातियों को सूचीबद्ध किया है, जिसमें मुरिया वृहद आकार की जनजातियाँ थी, जिन्हें साहसी, स्वाभिमानी एवं व्यवहार कुशल समुदाय के रूप में चिन्हित किया गया है।

बस्तर का भौगोलिक क्षेत्र

अध्ययन क्षेत्र बस्तर छत्तीसगढ़ राज्य के पूर्वी भाग में (दण्डकारण्य क्षेत्र) स्थित है। इसका भौगोलिक क्षेत्रफल ३९११४ वर्ग किलोमीटर है। इसका विस्तार १७° ४६' से २०° ३४' उत्तरी अक्षांश तथा ८०° १५' से ८२° पूर्वी देशान्तर के मध्य में स्थित है। संभाग की लंबाई २९० किलोमीटर उत्तर से दक्षिण तथा चौड़ाई २०० किलोमीटर पूर्व से पश्चिम की ओर है। बस्तर के पूर्व में उड़ीसा, दक्षिण में आन्ध्रप्रेदश, पश्चिम में महाराष्ट्र एवं मध्यप्रदेश तथा उत्तर में दुर्ग एवं धमतरी जिले से जुड़ी है।

बस्तर दण्डकारण्य भौगोलिक क्षेत्र के अंतर्गत आता है। अतः राज्य में बस्तर की विशिष्ट भौगोलिक पहचान है। वातावरण का निर्माण भौगोलिक स्थितियों से होता है। अतः बस्तर का भौगोलिक परिदृश्य, भौगोलिक विषमताओं के बीच

सुव्यवस्थित अपवाह प्रणाली के आधार पर बस्तर का प्राकृतिक विभाजन भौगोलिक पृथकता के साथ जीवन का मिठास की संभावनाओं को रेखांकित करते हैं, जो बस्तर एवं दक्षिण बस्तर (दंतेवाड़ा) की भौगोलिक विषमताओं में भी जनजातियों को अनुकूलन एवं जीवन यापन के लिये बाध्य होना पड़ता है। इसलिये बस्तर प्राकृतिक सुन्दरता, वृहद खनिज भण्डार एवं अपार वन संसाधन तथा विशिष्ट मानव संस्कृति के साथ, जनजातियों की विशिष्ट छाप यहाँ दिखाई देती है।

• भूगर्भिक संरचना

बस्तर की भूगर्भिक संरचना निम्न क्रम की चट्टानों में विस्तृत है –

१ **धारवाड़ शैल क्रमः–** बस्तर की धारवाड़ क्रम की चट्टाने कायांतरित एवं अवसादी चट्टाने हैं, जिनका वलन एवं भ्रंशन दोनों हुआ है। यह प्राचीनतम शैल श्रृंखला है। यह चट्टाने मध्यवर्ती बस्तर में बेगपाल श्रृंखला एवं बैलाडीला श्रेणी के रूप में विस्तृत है।

२ **आर्कियन ग्रेनाईट एवं नीस शैल क्रमः–** यह जिले के तीन चौथाई क्षेत्र मे विस्तृत है। यह क्षारीय एवं आग्नेय संरचना वाली चट्टान है, जो कायांतरण के बाद नीस में बदल गई है। दक्षिण बस्तर में मुख्यतः शिष्ट नीस शैल क्रम पाया जाता है।

३ **प्राचीन ट्रेप चट्टानेः–** यह शैल क्रम दक्षिण ट्रेप चट्टानों से भी प्राचीन माना जाता है। यह ज्वालामुखी उद्गार द्वारा उत्पन्न बेसाल्ट से निर्मित है। इसका विस्तार भानूप्रताप, कोयली बेड़ा एवं ओरछा क्षेत्र में है।

४ **कुडप्पा शैल क्रमः–** इस शैल क्रम का विस्तार कोंडागाँव, तीरथगढ़, बीजापुर के दक्षिण सीमा भोपालपट्टनम तक एवं अबूझमाड़ पहाड़ियों में विस्तृत है।

५ **विंध्य शैल क्रमः–** इस शैल क्रम में केशकाल कगार के पूर्व एवं पश्चिम में कांकेर एवं कोंडागांव जिलों के मध्य है। यह क्षैतिज रूप में क्वार्ट्जाइट एवं बलुआपत्थर की ऊपरी सतह में विस्तृत है। यह नवीनतम शैल श्रृंखला है।

Naveen Girls College ★ Govt. N.S. Bilaspur (C.G.)

• उच्चावच

बस्तर का अधिकांश भाग पठारी एवं पहाड़ी है। भूगर्भिक संरचना के आधार पर ६ प्राकृतिक विभागों में बांटा गया है –

१ **उत्तरी निम्न भूमिः–** बस्तर के उत्तरी क्षेत्र में जिला कांकेर की सीमा में परलकोट, प्रतापपुर, कोयलीवेड़ा, अंतागढ़ एवं कांकेर तक निम्न भूमि का विस्तार है। इसकी ऊँचाई १००० से १५०० फीट है।

२ **केशकाल का कगारः–** उत्तरी निम्न भूमि के दक्षिण में केशकाल के कगार का क्षेत्र आता है। इसका विस्तार भानू प्रतापपुर एवं कांकेर के मैदान के दक्षिण में है। इसकी ऊँचाई ५०० से १००० फीट है।

३ **अबूझमाड़ की पहाड़ियांः–** बस्तर में परलकोट तक एवं नारायणपुर से छोटे डोंगर तक अबूझमाड़ की पहाड़ियां फैली हुई है, जिसकी ऊँचाई २००० से २५०० फीट है।

४ **उत्तर पूर्वी पठारः–** अबूझमाड़ की पहाड़ियों के पूर्व से कोंडागांव से जगदलपुर तक उत्तरी पूर्वी पठार का क्षेत्र आता है। इसकी ऊँचाई २००० से २५०० फीट है। पठार के घाटी क्षेत्र में जगदलपुर, चित्रकोट एवं बारसुर स्थित है।

५ **दक्षिण का पठारः–** यह उत्तर–पूर्वी पठार का तुलसी डोंगरी एवं टागंड़ी डोंगरी की पहाड़ियों द्वारा विभाजित दक्षिण हिस्सा है। इसका विस्तार दंतेवाड़ा, बीजापुर एवं सुकमा जिले के कोटा क्षेत्र तक है। यह पठार १००० फीट से २००० फीट तक ऊँचाई प्राप्त कर दक्षिण पूर्व में टोंगपाल चितलनार एवं जगरगुण्डा में गोदावरी शबरी निम्न भूमि के रूप में विस्तृत है। इसे सुकमा गादीरास निम्न भूमि के रूप में भी माना जाता है।

बस्तर की जनजातियाँ

बस्तर की प्रमुख जनजाति कोईतूर है। इन्हें कोया के नाम से जाना जाता है। इनकी प्रमुख उपजातियां–माड़िया, बाइसन, हार्न माड़िया या दण्डामी, दोरला तथा मुरिया हैं।

नाम से संबोधित करते हैं। ये शर्मीले एवं दोस्ताना व्यवहार करने वाले आकर्षक लोग हैं। इनका निवास पहाड़ पर होने के कारण इनकी संस्कृति, रीति–रिवाज, मान्यतायें अन्य जनजातियों से भिन्न रही है।

२ **बायसन हॉर्न माड़िया:–** जनजातियों का यह समूह जिले के पहाड़ों के निचली भूमि क्षेत्रों में रहते हैं। इन्हें डोर (निचला भू–प्रदेश) कोइतूर भी कहा जाता है। पारंपरिक नृत्य में गंवर (बाइसन) की सींग वाली टोपी पहनते हैं। बायसन हॉर्न माड़िया एवं दण्डामी माड़िया इनका नृतत्वशास्त्री नाम है।

३ **दोरला:–** दोरला कोइतूर की एक उपजाति है। यह जनजाति जिले के दक्षिण एवं दक्षिण हिस्से में ओड़िसा, आन्ध्रप्रदेश एवं महाराष्ट्र की सीमा पर निवास करती है। निचले भू–भाग के कोईतूर, डोर कोईतूर कहलाते थे तथा निचले भौगोलिक भू–भाग को डोर भूम कहा जाता था। अत: यहाँ रहने वाले अपभ्रंश के रूप में दोरला हुये।

४ **मुरिया:–** मोरिया जनजाति की तीन उपशाखा है –

* **राजा मुरिया** – जगदलपुर के नजदीक रहने के कारण इन मुरियों में सामाजिक परिवर्तन सर्वाधिक हुआ है। अत: स्वयं को अन्य मुरियों से उच्च मानते हैं। ये मुरिया राज दरबार से जुड़े रहे हैं। अत: इन्हें राजा मुरिया कहते हैं।
* **झोरिया मुरिया** – जिला नारायणपुर की पहाड़ियों की तलहटी में रहते हैं। इनकी बसाहत झाड़ियों के आसपास रही है। अत: इन्हें झोरिया मुरिया कहा जाता है। ये मेड़िया हैं, जो पहाड़ी से उतरकर नीचे तलहटी में आकर रहने लगे।
* **घोटलू मुरिया** – जिला कोण्डागांव एवं नारायणपुर में रहने वाले मुरिया जिनमें सांस्कृतिक संकुल घोटलू की प्रथा है, उन्हें घोटलू मुरिया कहा जाता है।

बस्तर जनजातीय समाज की संस्कृति एवं जीवन स्तर

१ **माड़िया:–** ये माड़ (पहाड़) पर रहने वाले लोग हैं, हिल माड़िया नृतत्वशास्त्री नाम है। ये अपने को 'कोया' मेटा कोईतूर या 'मड़िया' के

Naveen Girls College Govt. M.S. Bilaspur (C.G.)

बस्तर के आदिवासियों का घर पहाड़ के शिखरों पर दुर्गम जंगलों के मध्य स्थित है। आदिवासियों का पशु–पक्षी के मांस के अतिरिक्त इनका मुख्य भोजन कंद–मूल है। कृषि के लिये जंगल में थोड़ा सा स्थान साफ कर लेते हैं तथा तीन फीट तक की भूमि के वृक्षों को काटने के पश्चात पेड़ों की शाखाओं को परस्पर गुंथकर एक सुरक्षित बाड़ी बना लेते हैं। इस काटे गये स्थान को साफ कर ज्वार या बाजरा लगाते हैं। आदिवासी 'सहभोजन' करते हैं। खतरनाक भौगोलिक स्थितियों एवं दुर्गम जंगल में जनजातियों के बीच केवल 'बंजारा' जाने का साहस करते हैं। बंजारा आदिवासियों को गुड़ या नमक देकर बदले में वनोपज प्राप्त करते हैं।

वन्य पशुओं से सुरक्षा के लिये कृषि कार्य के लिये साफ की गई जमीन को बाड़ी से घेराबंदी करते थे। जंगल में जाते समय ये नालों से होकर जाते हैं, क्योंकि इससे मार्ग का भ्रम नहीं होता है। आदिवासियों में भोजन का संग्रहण एवं उत्पादन की क्रिया सामूहिक होती है। भोजन जिले के भौगोलिक स्थितियों में 'सुरक्षा एवं भोजन' के लिये इनमें 'सामूहिकता' होती है। सामूहिकता का केन्द्रीकरण दो स्तरों पर हुआ है –

१ **परिवार** – परिवार के स्तर पर पति–पत्नी एवं बच्चों का सामूहीकरण हुआ है। महिलाओं को सम्मानजनक स्थिति प्राप्त हुई। वधू मूल्य देने की परम्परा है। बहू विवाह की प्रथा को सामाजिक मान्यता नहीं मिली।

२ **समाज** – परिवार के बाहर समाज के स्तर पर भी समूहन हुआ। इस स्तर पर हुये समूहन से नेतृत्व (प्रशासनिक एवं न्याय व्यवस्था) का विकास हुआ।

- **संस्कृति का विकास**

जनजातियों का जीवन वन में व्यतीत होता था। वन में जीवन के लिये प्राकृतिक संसाधन प्रचूर थे। प्राकृतिक चुनौतियों तथा वन्य जीवों से लड़ने का परिणाम था कि आदिवासी निर्भीक और वीर हो गये। तीर–धनुष एवं होटी कुल्हाड़ी इत्यादि इनके औजार बने।

- **नृत्य तथा संगीत**

बीहड़ जंगल एवं खतरनाक नदी पहाड़ों में 'संग्रहण एवं उत्पादन' दोनों ही आर्थिक क्रियाओं में समाज क्रियाशील होता था। उमंग और उत्साह के साथ सिर पर

'बायसन का सिंग' लगाकर नृत्य करते हैं। अत: जोश एवं उमंग के लिये जहाँ गीत गाया जाता है, वहीं पहाड़ी की ऊँचाई तथा ढलान को पार करने के लिये आवश्यक पद संचालन का अभ्यास करते हुये नृत्य परंपरा की शुरूआत हुई।

- **आदिम सूचना**

वन की सामग्रियों से ही वाद्य यंत्रों का निर्माण हुआ। यंत्रों की ध्वनि का प्रयोग सूचनाओं के आदान–प्रदान के लिये किया गया। वन में परस्पर सुरक्षा के लिये 'ध्वनि संकेत प्रणाली' का विकास हुआ।

- **अर्थव्यवस्था**

बस्तर जनजातीय समाज की सामाजिक आर्थिक क्रियाओं का अध्ययन इस प्रकार है –

- **अर्थव्यवस्था का पारंपरिक स्वरूप**

प्रथा के अनुसार जिले की भौगोलिक विषमताओं से अनुकूलन के लिये आवश्यक जैविक सहयोग को दृष्टिगत रखकर 'सामान्य संपत्ति अधिकार' की अवधारणा का विकास हुआ। इस अवधारणा के अंतर्गत अर्थव्यवस्था की प्रकृति में आर्थिक क्रियाओं का केन्द्र 'परिवार का सामूहिक प्रभाव' था। जीवन के लिये संग्रहण एवं उत्पादन की क्रिया समाज के सभी लोग करते हैं। इसलिये 'संग्रहण और उत्पादन' करता ही उपभोक्ता होते हैं। संग्रहण वस्तु का विक्रय ये बाजार में करते हैं। आर्थिक मामलों ये में लोग आत्मनिर्भर होते हैं। संसाधनों का सामूहिक उपभोग करते हैं। समाज के लोग जल व उससे संबंधित आर्थिक क्रियायें मत्स्य आखेट, खेती में नमी देकर सिंचाई कार्य मिलजुल कर करते हैं। समस्त आदिवासी उपभोक्ता होते हैं, इन्हें जंगलों से वनोपज संग्रहण कार्य में कोई बाधा नहीं थी। खूंखार वन प्राणियों से सुरक्षा तथा मांसाहारी भोजन के लिये 'पारद' (समूह में वन प्राणी का शिकार) आखेट लोक प्रिय स्वरूप था। तीज त्योहार में ये 'पारद' में ही जाते हैं।

आखेट, वनोपज, संग्रहण, साग–सब्जी, जड़ी–बूटी व सूखी लकड़ी को बीनने का कार्य सामूहिक करते थे। वाद्य यंत्रों के लिये आवश्यक सामग्री को एकत्र करते हैं। आवास एवं नाव के लिये आवश्यक सामग्रियों का एकत्रीकरण करते हैं। जल और जंगल अर्थात् वन संसाधन से जुड़ी हुई समस्त आर्थिक

क्रियाओं तथा इनसे जुड़े हुये नृत्य संगीत और उत्सव सामूहिक होते हैं। वन में प्रवेश कर अवसर जनजातियों के जीवन में उमंग लेकर आता है। इस अवसर पर 'कारे पंडुम' का उत्सव मनाते हैं और 'सामूहिक भोज' करते हैं।

आदिवासी पारम्परिक दायित्व, सहभागिता एवं सामूहिक सुहणता की भावना से प्रेरित होकर जीते हैं, इसलिये 'मुनाफा' के लिये कार्य करने की मानसिकता नहीं होती। आर्थिक क्रियाओं में आवश्यक सरल उपकरण यथा जाल, छूरी, धनुष, टंगिया, फरसा, बांस की टोकनी आदि व्यक्ति की संपत्ति होती है। पशु व्यक्तिगत संपत्ति होती है। आर्थिक क्रियायें सामूहिक रूप में होती है। इन क्रियाओं में समूह के पास उत्पादन एवं संग्रहण कार्य की खुशियां जनजातीय आर्थिक क्रियाओं को संगीतमय बनाकर इसे संस्कृति से भी जोड़ती है।

- **अर्थव्यवस्था का आधुनिक स्वरूप**

जिले की जनजातीय परिवारों की आर्थिक स्थिति को मजबूती प्रदान करने हेतु राज्य शासन की नीतियों के अंतर्गत विभिन्न विकास कार्यक्रमों का संचालन किया जा रहा है। जनजातियों की पारम्परिक अर्थव्यवस्था जल, जंगल जमीन से जुड़ी रहती है। शासन की नीति भी है कि जिले में उपलब्ध प्राकृतिक संसाधनों के वैज्ञानिक प्रयोग के लिये जनजातीय परिवारों को प्रशिक्षण एवं आर्थिक सहायता के माध्यम से सक्षम बनाया जाय। अत: आज जनजातीय परिवारों की पारम्परिक अर्थव्यवस्था आज आधुनिक स्वरूप को प्राप्त कर रही है।

- **जल संसाधन का समुचित उपयोग**

प्राकृतिक संसाधनों से जनजातीय सीधे जुड़े रहते हैं। परिवार के सभी सदस्य कृषि कार्य एवं आखेट में दक्ष होते हैं। अत: जल संसाधन विभाग एवं मत्स्य विभाग द्वारा संचालित योजनाओं का लाभ जनजातीय परिवारों को दिया जा रहा है, जिससे वे जल संसाधनों का वैज्ञानिक प्रयोग कर अपनी अर्थव्यवस्था को मजबूत करे। कृषि कार्य के लिये वनाच्छादित क्षेत्र के मैदानी भागों में एनीकेट निर्माण कर सिंचाई की सुविधा उपलब्ध कराई जा रही है। जिले में १२ जलाशय, ९ व्यपवर्तन तथा ६ उद्वहन सिंचाई योजनायें पूर्ण हो चुकी है। इन योजनाओं से जनजातीय कृषकों के खेतों में सिंचाई हो रही है, जिसके फलस्वरूप इनकी कृषि अर्थव्यवस्था में स्थायित्व आ रहा है। मत्स्य पालन विभाग द्वारा विभिन्न विकास

Naveen Girls College Bilaspur (C.G.)

योजनाओं का संचालन कर जनजातीय हितग्राहियों को प्रशिक्षण, आधुनिक तकनीक एवं अन्य सुविधायें उपलब्ध कराई जाती है। जैसे मत्स्य बीज संचयन, मौसमी तालाबों में स्थान संवर्धन एवं झींगा रूह मछली पालन, फूटकर मछली विक्रय हेतु उपकरण, मछली पकड़ने हेतु जाल एवं मत्स्याखेट के लिये नाव की सहायता प्रदान की जाती है। मत्स्य पालन हेतु तालाबों का पुनरूद्धार, मत्स्य बीज आहार एवं दवा हेतु आर्थिक सहायता तथा स्वयं की भूमि पर तालाब निर्माण कर मछली पालन को प्रोत्साहित करना इत्यादि कार्य मत्स्य सहकारी समितियों द्वारा किया जाता रहा है।

- **वन संसाधन का उपयोग**

जनजातीय समाज वन परिस्थितिकी प्रणाली को बचाने और बनाये रखने के लिये वनों का अभिन्न अंग है। अतः भारत सरकार के जनजातीय कार्य मंत्रालय के द्वारा वर्ष २००६ में अनुसूचित जनजाति और अन्य परम्परागत वन निवासी अधिनियम २००६ पारित किया गया। इस कानून के द्वारा जनजातियों को वन एवं वन भूमि पर व्यक्तिगत एवं सामुदायिक उपयोग को कानूनी मान्यता प्रदान की गयी है। इस अधिनियम के द्वारा जनजातियों को वन क्षेत्र की स्थिति, कृषि भूमि का अधियोग की कानूनी मान्यता है। परिवारों के पास कृषि कार्य के लिये जमीन है। खेती कार्य हेतु शासकीय योजना के तहत उचित मूल्य की दुकानों से खाद, बीज उपलब्ध कराये जाते हैं। कृषि कार्य लकड़ी के हल से होता है। उत्पादित फसलें धान, कोदो आदि उपज होती हैं।

- **प्राथमिक वनोपज समितियाँ**

वनोपज संग्रहण में लगे जनजातीय परिवार को आर्थिक मजबूती देने के लिये प्राथमिक वनोपज सहकारी समिति का गठन किया जाता है। इस समिति के माध्यम से संग्रहित वनोपज शासन द्वारा (वन विभाग) निर्धारित मूल्य के आधार पर क्रय किया जाता है। अध्ययन जिले में कुल ३५ वनोपज सहकारी समितियाँ पंजीकृत है। इन समितियों के माध्यम से ८८४४० हितग्राही लाभान्वित हो रहे हैं।

- **जमीन संसाधन**

जनजातीय समाज में कृषि का कार्य सामान्य संपत्ति अधिकार की अवधारणा के अंतर्गत सामूहिक रूप से संचालित थी। कृषि की पद्धति पूर्व में झूमिंग थी। बाद में कृषि कार्य स्थायी रूप से करने पर भी परिवारों के पास जमीन की

Govt. M.S. Naveen Girls College Bilaspur (C.G.)

उपयोग करने के कोई दस्तावेजी सबूत नहीं थे। जमीन संबंधी विवाद नहीं होता था। यदि होते भी थे, तो पारंपरिक पंचायतों का निर्णय अन्तिम एवं अटूट था। कृषि कार्यों के माध्यम से जनजातीय परिवारों की आर्थिक समृद्धि के लिये कृषि विभाग द्वारा केन्द्र और राज्य पोषित योजनाओं के संचालन से खरीफ, तिलहन एवं दलहन फसलों का न केवल रकबा बढ़ा वरन् उत्पादन से उल्लेखनीय वृद्धि हुई।

वित्तीय वर्ष २०१२–१३ में कृषि विभाग द्वारा सोलर पंप, ट्यूब वेल किसान समृद्धि नलकूप योजना, लघुत्तम सिंचाई तालाब योजना, शाकम्बरी सिंचाई संसाधन में विकास, तिलहन, दलहन एवं मक्का के उत्पादन में वृद्धि के लिये योजनायें, किसान प्रशिक्षण कार्यक्रम आदि योजनाओं का संचालन किया गया। इस योजनाओं पर ६३.४९ लाख व्यय किया गया एवं १६१५९ परिवारों को लाभान्वित किया गया।

जनजातीय समाज की अर्थव्यवस्था में पशुपालन एक महत्वपूर्ण माध्यम है। उनके लिये पालित पशु वस्तुतः बैक बैलेस है। जब जरूरत हो बेचकर रूपये प्राप्त किये जा सकते हैं। इनमें बैल, बकरा, बकरी, मुर्गी, बत्तख, सूकर आदि प्रमुख है।

निष्कर्ष

उपरोक्त भौगोलिक विश्लेषण से स्पष्ट है कि अध्ययन क्षेत्र बस्तर में वातावरण द्वारा प्रदत्त संभावनाओं के उपयोग का स्तर प्राकृतिक संसाधनों के अनुकूलन से है। अतः जनजातीय समाज न्यूनतम आवश्यकता, सीमित इच्छा एवं अनुभवजन्य ज्ञान के द्वारा समस्या और समाधान के साथ जीवन यापन कर रहे हैं।

जनजातियों के नियोजित विकास के तहत परिवारमूलक आर्थिक विकास कार्यक्रमों का संचालन किया जा रहा है। आदिवासी उपयोजना की नीति के क्रियान्वयन के फलस्वरूप आर्थिक विकास कार्यक्रमों के संचालन के लिये वित्तीय प्रावधान की कमी नहीं है। वन भूमि अतिक्रमकों को काश्त के लिये वन भूमि का पट्टा दिया जा रहा है। स्थायी एवं आधुनिक कृषि कार्यक्रमों का प्रसार कर जनजातीय काश्तकारों को प्रशिक्षित किया जा रहा है। कृषि विकास के लिये

सिंचाई सुविधा में वृद्धि की जा रही है। कृषि कार्य के अलावा आर्थिक विकास के अन्य कार्यक्रम जैसे मत्स्य, आखेटो एवं वनोपजों की समितियाँ भी आर्थिक क्रियाओं को व्यक्तिगत स्वरूप दे रही है। पशुपालन कार्य एवं खाद्यान्न राशन सामग्री की उपलब्धता दी जा रही है। शिक्षा, संचार एवं बाजार की अर्थव्यवस्था से जुड़ने के फलस्वरूप धन संग्रह की ओर अग्रसर हो रहे हैं। जनजातीय समाज बाहरी संस्कृति के प्रभाव के फलस्वरूप आंशिक एवं सांस्कृतिकरण की प्रक्रिया में गुजर रहे हैं।

संदर्भ सूची

१ अग्रवाल पी. सी. १९६८ : 'ह्यूमन ज्योग्राफी ऑफ बस्तर डिस्ट्रीक्ट' गर्म ब्रदर्स इलाहाबाद, पृ० ४३

२ चौधरी, एस. एन. १९९७ : 'ट्राइबल फॉरेस्ट एण्ड मार्केट फोर्स इन इण्डिया' सम कंस्पच्युल एण्ड इंपीरिकल इश्युस, एम. पी. जनर्ल ऑफ सोशल साइन्सेज, पृ० ६९

३ दीक्षित, निशी के., २००६ : 'टाइब्स इन इण्डिया' विस्ता इनटरनेशनल पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली, इण्डिया

४ ग्रिगसन, डब्ल्यू. व्ही., १९३८ : 'द मारिया गोन्ड्स ऑफ बस्तर, ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस।

५ लाला, जगदलपुरी, १९९४ : 'बस्तर इतिहास एवं संस्कृति, मध्य प्रदेश हिन्दी ग्रंथ अकादमी

६ मेहता, प्रकाशचन्द्र, २००९ : 'आदिवासी संस्कृति एवं प्रथायें, डिस्कवरी पब्लिशिंग हाउस प्राइवेट लिमिटेड, नई दिल्ली

७ नायडू, पी. यार., २००५ : 'ट्राइब्ल डेवलपमेन्ट इन इंडिया, ए करेन्ट रेयसर, अध्ययन पब्लिशर एण्ड डिस्ट्रीब्यूटर, नई दिल्ली।

८ मेनन, पी. एस. के., २००० : 'जनजातीय विकास, नीतियां योजनायें और कार्यक्रम' योजना अंक–३ जून, पृ० २५

९ पाण्डेय, कन्हैयालाल, १९८२ : बस्तर का भौगोलिक इतिहास, संदर्भ इंद्रावती प्राची प्रकाशन

१० शर्मा, ए. एन., २००२ : 'ट्राइब्ल वेलफेयर एण्ड डेवलेपमेन्ट, इमरजिंग रोल ऑफ, एन्थ्रोपोलाजिकल एक्सपोलोरेशन, न्यू दिल्ली, स्वरूप एण्ड सन पब्लिकेशन

Govt. M.S. Mayeen Girls College ★ Bhatapur (C.G.)

भारत विश्व की प्राचीनतम संस्कृति है। भारत राष्ट्र की महत्ता इस बात में है कि उसने विश्व का पथ प्रदर्शन किया है। भारत की संस्कृति विश्व की निर्माता संस्कृति है। ऋषियों, मुनियों, महर्षियों एवं तपस्वियों की प्रेरणा से संचालित एवं संपोषित भारत राष्ट्र विश्व गुरू है। एक समय सोने की चिड़िया कहा जाने वाला राष्ट्र धीरे-धीरे विदेशी आतातायियों से आक्रांत किया गया और लंबे समय तक गुलामी का दंश झेलना पड़ा। इस कारण इस राष्ट्र का सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक एवं अन्य कारणों से बहुत नुकसान हुआ। आज जब हम आजादी के सात दशक की यात्रा लगभग पूर्ण करने की स्थिति में आ गए हैं, तब हमारा यह कर्त्तव्य बनता है कि हम भारत को पुनः विश्व गुरू की पदवी पर गरिमापूर्ण तरीके से आसीत करें। हम इस दिशा में विभिन्न संगोष्ठियों, परिचर्चाओं आदि के माध्यम से कार्य कर सकते हैं। यह पुस्तक इसी तरह की परिचर्चा का एक सार्थक आयाम है। राष्ट्र और राष्ट्र की संस्कृति पर विभिन्न दृष्टिकोणों से सम्पन्न चर्चा का प्रबल प्रमाण यह कृति है। आशा एवं विश्वास है कि इसे पाठकीय दुलार अवश्य मिलेगा।

संपादक

डॉ. शिवकुमार शर्मा

शिक्षा	-	एम.ए., पी-एच.डी. (हिन्दी), एल.एल.बी.
जन्म तिथि	-	16 जून 1968
जन्म स्थान	-	ककरौआ (पोहरी) जिला शिवपुरी (म.प्र.)
सम्पादन	-	'मंथन' अमृतोत्सव स्मारिका, मध्य भारत शिक्षा समिति, ग्वालियर
प्रमुख सम्मान	-	श्रेष्ठ शिक्षक सम्मान, ग्वालियर विकास समिति, ग्वालियर (म.प्र.) विश्व हिन्दी सेवी सम्मान, विश्व हिन्दी मंच, भारत साहित्य शिरोमणि सम्मान, साहित्य मण्डल, नाथद्वारा, राजस्थान
सदस्यता	-	सलाहकार सदस्य (शोध धारा) शोध पत्रिका, उरई (उ.प्र.) आजीवन सदस्य अनुवाद परिषद्, नई दिल्ली आजीवन सदस्य शोध यात्रा त्रैमासिक पत्रिका, ग्वालियर आजीवन सदस्य भारतीय हिन्दी परिषद्, प्रयाग आजीवन सदस्य विश्व हिन्दी मंच, भारत आजीवन सदस्य माधव बाल निकेतन, ग्वालियर आजीवन सदस्य हिन्दी साहित्य सभा, ग्वालियर
निवास	-	10, पंचवटी कॉलोनी, ए.बी. रोड़, ग्वालियर (म.प्र.)
ईमेल	-	shivkumar54932@gmail.com
सम्प्रति	-	अध्यक्ष स्नातकोत्तर हिन्दी विभाग एवं शोध संस्थान माधव महाविद्यालय, सम्बद्ध जीवाजी विश्वविद्यालय, ग्वालियर (म.प्र.)

संकल्प प्रकाशन
1569/14, नई बस्ती बकरीपुरवा
बृहस्पति मन्दिर, नौबस्ता, कानपुर-208021
Mob. 94555-89663, 70077-49872
Email : sankalprakashankanpur@gmail.com

₹1195/-
ISBN 978-81-939871-5-5

भारतीय राष्ट्रवाद : स्वरूप एवं विकास ■ डॉ. शिवकुमार शर्मा संप्र

भारतीय राष्ट्रवाद
स्वरूप एवं विकास

डॉ. शिवकुमार शर्मा

राष्ट्रीय भावना का संबंध राष्ट्र से होता है। राष्ट्र उस जन समूह को कहते हैं जो किसी एक निश्चित भूखण्ड पर रहता है जिसकी एक राजनैतिक परंपरा होती है, जिसकी संस्कृति, धर्म, साहित्य, भाषा-शैली आदि कि भी एक ऐतिहासिक परंपरा होती है, जिसकी सामाजिक एवं शासकीय व्यवस्था भी एक परंपरागत विचारधारा पर संचालित होती है तथा जिसके सम्पूर्ण जनजीवन में एक भावात्मक एकता रहती है। इस प्रकार राष्ट्र को सर्वोपरि मानकर जो कवि स्वदेश के प्रति अनुराग व्यक्त करता है, देश भक्ति के गीत गाता है, अपने समाज को उन्नत बनाने का प्रयास करता है, अपनी संस्कृति के समुज्ज्वल तत्वों का प्रचार करता है, अपने निर्बल राष्ट्र को सबल बनाने के लिए प्रयत्नशील दिखाई देता है, अपनी जननी जन्मभूमि को स्वर्ग से भी अधिक गौरवमयी मानकर उसके प्रति त्याग एवं बलिदान के भाव जागृत करता है, अपने नदी, वन, पर्वत, पेड़, पशु-पक्षी आदि के प्रति अत्यन्त रागात्मक सम्बन्ध प्रकट करता है राष्ट्रवाद के अन्तर्गत ही इन सबका समावेश होता है।

डॉ. सतीश चतुर्वेदी
'शाकुन्तल'

Naveen Girls College Bilaspur (C.G.)

भारतीय राष्ट्रवाद : स्वरूप एवं विकास

संपादक
डॉ. शिव कुमार शर्मा
सहयोगी सम्पादक
डॉ. मनोज अवस्थी, डॉ. सरिता दीक्षित, डॉ. (श्रीमती) राजेश चतुर्वेदी

संकल्प प्रकाशन
कानपुर (उ.प्र.)

ISBN : 978-81-939871-5-5

पुस्तक का नाम :
भारतीय राष्ट्रवाद : स्वरूप एवं विकास

संपादक
डॉ. शिव कुमार शर्मा

प्रथम संस्करण 2019

मूल्य : 1195/-

प्रकाशक :
संकल्प प्रकाशन
1569/14 नई बस्ती बक्तौरी पुरवा, बृहस्पति मन्दिर
नौबस्ता, कानपुर-208 021
दूरभाष : 094555-89663, 070077-49872
Email : sankalpprakashankanpur@gmail.com

शब्द सज्जा :
रुद्र ग्राफिक्स, कानपुर

मुद्रक :
साक्षी आफॅसेट, कानपुर

अनुक्रम

1. मुक्तिबोध के काव्य में राष्ट्रवादी अभिव्यक्ति
   डॉ. सरिता दीक्षित
2. छायावादोत्तर कालीन काव्य में राष्ट्रीय और सांस्कृतिक चेतना
   शिखा श्रीवास्तव
3. समाज निर्माण की भावना और राष्ट्रवाद
   प्रो. प्रेक्षा नाईक
4. राष्ट्रवादी चेतना की पृष्ठभूमि में हिंदी साहित्य
   प्राध्यापक लक्ष्मी प्रसाद कर्ष
5. हिन्दी भाषा : राष्ट्रवाद
   डॉ. चन्द्रकान्त तिवारी
6. राष्ट्र के आर्थिक विकास में ई–व्यवसाय की भूमिका
   श्रीमती दीप्ति नारंग
7. राष्ट्रवाद, पर्यावरण एवं आर्थिक विकास
   डॉ. विनीता जैन
8. राष्ट्रवादी – चेतना की पृष्ठभूमि में हिन्दी साहित्य
   नीतू सोलंकी
9. क्रान्तिकारी आन्दोलन और आधुनिक हिन्दी कविता
   राहुल श्रीवास्तव
10. राष्ट्रवादी चेतना की पृष्ठभूमि में प्रसाद–साहित्य
    सावित्री
11. राष्ट्रवादी चेतना की पृष्ठभूमि में हिंदी साहित्य
    पूनम
12. ग्वालियर अंचल की पत्रकारिता में राष्ट्रवाद : राष्ट्रीय आंदोलन के विशेष सन्दर्भ में
    डॉ. मनोज अवस्थी
13. हिन्दी और लोकतंत्र
    डॉ. कृष्ण कुमार
14. गोपालदास नीरज का वैचारिक चिंतन
    डॉ. डी. एस. ठाकुर
15. भारतीय राष्ट्रवाद का अवलोकन
    अंजना देवी
16. असमिया साहित्य की राष्ट्रीय चेतना
    डॉ. सुशील कुमार शर्मा
17. राष्ट्रवादी चेतना की पृष्ठभूमि में हिन्दी साहित्य
    जिज्ञासा पाण्डेय
18. ब्रिटिश इतिहास और राष्ट्रवाद
    डॉ. राघवेन्द्र यादव
    प्रो. के. रतमन्
19. राष्ट्र की अवधारणा और भारतीय चिन्तन
    डॉ. (श्रीमती) राजेश चतुर्वेदी
20. विश्व में बढ़ता हिन्दी का वर्चस्व
    डॉ. शशि गुप्ता
21. साहित्य और राजनीति
    डॉ. (श्रीमती) सुजाता सैमुएल
22. राष्ट्र के विकास में कवियों का योगदान
    ज्योति कुशवाहा
23. राष्ट्रवाद और समाज
    डॉ. बी.एल.मंडलोई
    श्री जे.एस. पैकरा
24. हिन्दी कविता और राष्ट्रबोध
    श्रीमती भारती घुमाल
25. सांस्कृतिक पृष्ठभूमि और राष्ट्रवाद
    डॉ. (श्रीमती) दुर्गा बाजपेयी
    डॉ. (श्रीमती) शारदा दुबे
26. भाषा, संस्कृति एवं राष्ट्रीय चेतना
    डॉ. भगवान स्वरूप चैतन्य
27. राष्ट्र के आर्थिक विकास में शिक्षा की भूमिका
    डॉ. राजकरण सिंह
28. सिमटते समाजवाद और पसरते पूँजीवादी समाज के बीच राष्ट्रवाद की अर्थवत्ता
    डॉ. हरेन्द्र सिंह
    डॉ. हरीशचन्द्र पाटनी

29. राष्ट्रवाद बनाम समाजवाद : एक तुलनात्मक अध्ययन
डॉ. दीपक शुक्ला
30. प.दीनदयाल उपाध्याय का राष्ट्र चिंतन
श्रीमती कांति अचल
31. भारतीय सामाजिक समस्याएँ और साहित्य
डॉ. (सुश्री) सपना कौर
32. राष्ट्रवाद बनाम राष्ट्रद्रोह
डॉ. नुजहत शाहीन
33. हिन्दी काव्य में राष्ट्रवादी चेतना के विविध रूप
डॉ. (श्रीमती) साधना जैन
34. साहित्य में राष्ट्रीय चेतना
डॉ. शशि अवस्थी
35. साहित्य और रंगमंच : नई दिशाएं
डॉ. फूलदास महन्त
36. राष्ट्र के निर्माण में नारी की भूमिका
शांति शर्मा
37. राष्ट्रवादी चेतना की पृष्ठभूमि में हिन्दी साहित्य
डॉ. देवेन्द्र कुमार जाटव
38. साहित्य और पत्रकारिता : वर्तमान परिप्रेक्ष्य
प्रो. बेला महन्त
39. भारतीय राष्ट्रवाद का समीक्षात्मक परिदृश्य
डॉ. मूलचन्द्र पाल
40. राष्ट्रवादी चेतना की पृष्ठभूमि में हिन्दी साहित्य
आदित्य कुमार सिंह
41. दिनकर के काव्य में प्रस्तुत राष्ट्रवादी विचारधारा
डॉ. अभय सिंह
42. हिन्दी साहित्य और राष्ट्रवाद की परिकल्पना
डॉ. बलवन्त जेऊरकर
डॉ. नीलेन्द्र सिंह तोमर
43. सामयिक परिप्रेक्ष्य में दिनकर का काव्य और राष्ट्रवाद की संकल्पना
डॉ. कमल किशोर यादव
44. राष्ट्रवादी चेतना की पृष्ठभूमि में हिन्दी साहित्य
सीमा दोहरे
45. राष्ट्रवाद और पर्यावरण
डॉ. फूलसो राजेश पटेल
46. राष्ट्रवादी साहित्य के सूत्र : एक दृष्टि
डॉ. (श्रीमती) उषा तिवारी
47. राष्ट्रवाद में पर्यावरण की भूमिका
डॉ. कावेरी दामडकर
48. राष्ट्रवाद की चुनौतियाँ – इक्कीसवीं शताब्दी के प्रथम दशक की कहानियों के संदर्भ में
डॉ. संध्या गंगराडे
श्रीमती शालिनी दशोरे
49. भारत की शरणागति नीति और साहित्य
डॉ. लखन लाल खरे
50. राष्ट्रवादी चेतना की पृष्ठभूमि में हिन्दी साहित्य
ब्रह्मदत्त श्रीवास्तव
51. राष्ट्रवाद की संकल्पना और उसके विविध परिदृश्य
डॉ. इति अधिकारी
अल्पना सिंह
52. वास्तविकता के परिप्रेक्ष्य में राष्ट्रवाद
मल्लिका गौड़
53. संस्कृत साहित्य में राष्ट्रीयता : महर्षि वाल्मीकि के विशेष सन्दर्भ में
माधवेन्द्र दुबे
54. राष्ट्रीय एकता और राष्ट्रधर्म
डॉ. हरिणी रानी आगर
55. राष्ट्रवादी चेतना की पृष्ठभूमि में हिन्दी साहित्य
अर्पित कुमार
56. वर्तमान परिप्रेक्ष्य में राष्ट्रवाद की संकल्पना
कृष्णकांत चौहान
57. राष्ट्रवादी साहित्य के सूत्र
अजय कुमार
58. भारतीय राष्ट्रवाद : स्वरूप एवं विकास
डॉ. राहुल शुक्ला
अरुण कुमार
59. आधुनिक हिन्दी काव्य में राष्ट्रीय–चेतना
डॉ. सुशीला सिंह
60. राष्ट्रवादी चेतना की पृष्ठभूमि में हिन्दी साहित्य

संकल्प है। इसका नाम ही राष्ट्रीयता है जो साहित्य रूपी सरिता से निकलकर मानवता के मैदान को सींचती हुई अनंत में विलीन हो जाती है।

समाज की आंतरिक और बाह्य प्रगति के लिये साहित्य हमेशा कल्पवृक्ष बना हुआ है। साहित्य की परिधि समाज का प्रत्येक हिस्सा रहा है। यहाँ किसी प्रकार का भेदभाव नहीं है। जहाँ अन्याय व अत्याचार हुआ, साहित्य ने खड़े होकर पीड़ित के आँसू पोंछे।

साहित्य मनुष्य को बाहर और भीतर से सभ्य बनाने में सहायक है। वास्तव में तन और मन की सभ्यता प्रदान करता है। वह शाश्वत साहित्य होता है। साहित्य राष्ट्रीयता का मानवीकरण नहीं करता बल्कि प्रकृति समाज एवं राष्ट्र को उसके ठोस, सामाजिक संदर्भ के साथ रेखांकित करता है।

संदर्भ

1. मैथिलीशरण गुप्त की रचनाएँ, (हिन्दी) कविता कोश, अभिगमन तिथि 25, जुलाई 2010
2. तिवारी नीशू, राष्ट्रप्रेम की भावना, हिन्दी साहित्य मंच, अभिगमन तिथि 25, जुलाई 2010
3. रंगभूमि, पृ. 542,संस्करण 1965
4. गबन, पृ. 171–172, संस्करण 1967
5. सेवा सदन, पृ. 128, संस्करण 1966
6. शिवनारायण श्रीवास्तव, हिन्दी उपन्यास, पृ. 135
7. भारत की राष्ट्रीय चेतना, मिथिलेश बामनकर, फरवरी 02, 2009, हिन्दी की राष्ट्रीय, सांस्कृतिक काव्य धारा

अतिथि विद्वान (हिन्दी)
शासकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय
रामपुरा, जिला– नीमच (म.प्र.)

38

साहित्य और पत्रकारिता : वर्तमान परिप्रेक्ष्य

प्रो. बेला महन्त

संस्कृत के आचार्यों ने साहित्य को "सहितस्यः भाव साहित्य" कहा है, अर्थात जिसमें साथ रहने का भाव निहित हो। बाबू गुलाबराय ने हित की भावना से युक्त रचना को साहित्य स्वीकार किया है। रवीन्द्रनाथ टैगोर का विचार है– "साहित्य शब्द से एक मिलन का भाव परिलक्षित होता है। यह मिलन का भाव केवल भाव के साथ भाव का, भाषा के साथ भाषा का और मनुष्य के साथ मनुष्य का ही मिलन नहीं है, अपितु अतीत के साथ वर्तमान का तथा दूर के साथ निकट का भी मिलन है" इस प्रकार हम कह सकते हैं कि साहित्य एक ऐसा विषय है जिसपर कोई साहित्यकार पूर्णता के साथ कुछ नहीं कह सकता है। जिसने साहित्य को जैसा जाना है, समझा है, परखा है, उसे उसी रूप में उद्घाटित कर दिया है। इसीलिए कहा भी है– साहित्य का संबंध जीवन के साथ है और साहित्य जीवन के लिए है।"

हिन्दी भाषा का व्यवहार केवल भारत में ही नहीं वरन् विश्व के 150 देशों में हो रहा है। हिन्दी में उदारता और सहृदयता ने उसके कोष को निरन्तर बढ़ाया है। दिल्ली स्थित स्पेन के सांस्कृतिक केन्द्र के निदेशक ऑस्कर पुजोल ने एक अवसर पर कहा था– "हिन्दी में क्षमता है और सुन्दरता भी"। यह सुन्दरता भारत की संस्कृति के संदर्भ में है और संस्कृति से भाषा को अलग करना यानी उसका आत्मा से विलग करना उचित नहीं होगा। हिन्दी मात्र एक भाषा न होकर एक परम्परा है सरकार है, संस्कृति है। जो विश्व स्तर पर व्यापक रूप से परिव्याप्त है हिन्दी भाषा के संबंध में डॉ. विद्या निवास मिश्र ने कहा है जिन मूल्यों की प्रतिष्ठा हिन्दी ने की थी वे सार्वभौम थे। किन्तु वर्तमान में हिन्दी में लिखा जाने वाला साहित्य अब वैसी प्रतिष्ठा नहीं पा रहा है जिसकी अपेक्षा। कितने साहित्यकार गुनाम जीवन बिताने को बाध्य हैं क्योंकि विचार प्रसार कम होने लगा है सामाजिक सरोकार से संबंधित विषय मीडिया को नहीं भाते, उसे तो उत्तेजक और टी.आर.पी. बढ़ाने वाले कार्यक्रम चाहिए। समाज के प्रति अपने कर्तव्य को मीडिया भूल चुका है। तभी तो अनेक किताबे लिखने वाले साहित्यकार उसे दिखाई नहीं देते। उसे तो किसी उच्च पद पर आसीन तथा कथित नेता या

अधिकारी द्वारा लिखी कोई एक ही किताब प्रभावित करने के लिए काफी है और वह हवाई जहाज से उस किताब की समीक्षा करने पहुंच जाता है। उसे नहीं दिखाई देता वह हाशिये का व्यक्ति जो अपने संस्कारो को शब्द बद्ध कर समाज को उपहार देने बाद जोहता रहता है।

साहित्य का मुख्य सरोकार होता है मनुष्य का सामाजिक जगत, उस जगत के प्रति उसकी अनुकूलता और उसे बदलने की इच्छा। साहित्य और समाज पूर्णतः भिन्न विषय नहीं है, बल्कि हमारी समाज–विषयक समझ मं वे एक दूसरे के पूरक हैं। प्रिन्ट मीडिया के प्रसार पर नजर डाले तो हिन्दी सही अर्थ राष्ट्रभाषा बन चुकी है। रीडरशिप सर्वे के आंकड़े बताते हैं कि देश के सर्वाधिक पढ़े जाने वाले दस अखबारो में हिन्दी के पाँच अखबारो में अपनी जगह बना ली। सही अर्थो में यह भारतीय भाषाओं के बढ़ते महत्व का परिचायक भी है क्योंकि इन दस अखबारो में अंग्रेजी के सिर्फ एक अखबार को जगह मिली है, वह भी आठवें स्थान पर। टाइम्स ऑफ इंडिया के अलावा बचे हिन्दी और अन्य भारतीय भाषाओं के है। हिन्दी प्रेमी प्रसन्न हो सकते हैं कि पहले और दूसरे क्रम पर सर्वाधिक पढ़े जाने वाले अखबार हैं– दैनिक जागरण और दैनिक भास्कर जो हिन्दी के समाचार पत्र है।

आज के हिन्दी पाठक के लिए रंगीन पन्ने ही नहीं गुणवत्ता भी महत्वपूर्ण है सिर्फ सूचनाएँ ही नहीं बल्कि, सजी धजी सूचनाओं की दुनिया उसकी प्रमाणिकता की कसौटी है। इंडिया टुडे और आउट लुक के हिन्दी संस्करणो की सफलता ने एक नये सजग पाठक की पहचान करायी है। आज के परिप्रेक्ष्य में साहित्य और पत्रकारिता दोनो पर बाजारवाद का कब्जा है। लेखक परेशान है उन्हे सृजन का समूचित सम्मान नहीं मिल पा रहा है। उधर पत्रकारिता मे पीत पत्रकारिता का कब्जा होते दिखाई पड़ रहा है। ऐसी बात नहीं है कि रचनाओं का अवमूल्यन हो रहा है बल्कि आज भी कुछ रचनाएं ऐसी है, जिन्हें बार–बार पढ़ने का मन करता है।

स्वतंत्रता पूर्व पत्रकारिता एवं साहित्य दोनो उद्देश्य जन कल्याण सामाजिक, राजनैतिक एवं आर्थिक गतिविधियों का निरीक्षण एवं राष्ट्र प्रेम था। पत्रकारों में देश सेवा देश प्रेम की भावना भरी पड़ी थी। स्वतंत्रता के बाद निजी स्वार्थ में हमे सत्ता और पैसों का दास बना दिया। पत्रकारिता ने आज के परिप्रेक्ष्य में कौशल विकास के साथ व्यावसायिकता को बढ़ावा दिया।

परिवर्तन प्रकृति का शाश्वत नियम है और मानव जीवन इसी परिवर्तन के चक्र में आदि से अंत तक घूमता रहता है यह सच है जिस दौर से हम गुजर रहे हैं वह विज्ञान एवं टेकनोलॉजी का युग है। इक्कीसवीं सदी के इस युग में हमारे समक्ष कई तरह कि चुनौतियाँ है। बाजारीकरण और प्रतियोगिता के भावभंगियों के इस युग में व्यक्ति को जरा भी फुरसत नहीं है। पहले साहित्य को समाज का दर्पण कहा जाता है, अब इंटरनेट समाज का दर्पण कहे तो अत्युक्ति नहीं होगी। गोस्वामी तुलसी दास जी ने साहित्य का सार्वजनिक मान्यताओं का उल्लेख करते हुए कहा है– "सुरसरि सब कर हित होई"। तब और अब में बहुत फक्र आ चुका है पहले की तरह आज कोई स्वान्त सुखाय रघुनाथ गाथा लिखने को तैयार नहीं है और न ही कोई भवभूति की भाँति भविष्य में कृति का मूल्यांकन करने वालो की आशा में निश्चिन्त होकर बैठ जाने को तैयार है। आज का रचनाकार अपने लेखकीय कौशल की पूंजी के बल पर दुकानदार बनकर पाठको को उपभोक्ता मानकर साहित्य के बाजार में बैठ गया है।

साहित्य वह संजीवनी है जो मुर्दों को भी जिन्दा कर देता है। समाज के लिए उसकी उपयोगिता निर्विवाद है। दोनों के बीच अटूट संबंध है। साहित्य समाज का बनाता है और समाज भी साहित्य को रूप प्रदान करता है। इसीलिए कहा भी गया –

अंधकार है वहाँ जहाँ आदित्य नहीं,
मुर्दा है वह देश जहाँ साहित्य नहीं।

पत्रकारिता राष्ट्रीयता की ध्वजवाहिका रही है। आज पत्रकारिता न केवल युगबोध, राष्ट्रीय चेतना, समाज सेवा और मानवीय संवेदना के संचार का सशक्त माध्यम है अपितु जन–जन के जय पराजय जनता की आशा आकांक्षा और राष्ट्र के स्वाभिमान को स्वर देने वाले तथा स्वतंत्रता समानता एवं सद्भाव को संप्रेषित करने वाली विधा भी है। आरमभ से लेकर आज पर्यन्त पत्रकारिता का बड़ा महत्व रहा है। भारतीय पत्रकार अपनी देश भक्ति, त्याग, परिश्रम, लगन एवं अपूर्व निष्ठा के लिए विख्यात रहे है। प्रारंभ में स्वाधीनता के लिए संघर्ष एवं राष्ट्रीयता के लिए प्रचार प्रसार करना ही उनका कर्तव्य था। उस समय के पत्रकार आदर्श थे उन्होने पत्रकारिता के उद्देश्य को महत्वपूर्ण स्थान दिया था। वे कभी न झुके न टूटे अपने हौसले बुलंद रखे। उस समय के पत्रकारो के लिए डॉ. प्रणव ने लिखा है– "दीपक की मद रौशनी में रात रात भर वे लिखते और सुबह घर–घर जाकर उन लिखे पत्रों को बाटते थे। निरन्तर काम करते करते उनकी आंखो की रोशनी जाती रही लेकिन वे अपनी कलम को मजबूती से थामे रहे"।

वर्तमान में हिन्दी पत्रकारिता के सामने अनेक चुनौतियां खड़ी है। समाचार पत्र के आवश्यकता एवं महत्ता के संबंध में महात्मा गाँधी का कथन –

'इस अंधियारे विश्व में दीपक है अखबार,
सुपथ दिखाये आपको आँख करत है चार।"

वर्तमान काल संक्रमण काल है अखबारी जगत चुनौतियों के चौराहे पर खड़ा है। ताबड़तोड़ तकनीक के तिलस्म और अंधाधुंध व्यवसायीकरण के कारण उसे पहचान सोच, दायित्व और आदर्श के अपने धरातल पर बने रहने के लिए नित्य अग्नि परीक्षा देनी पड़ रही है आज पत्रकारिता में कलम का स्थान कम्प्यूटर

ने ले लिया है। पत्रकार के काम करने की स्थितियाँ एवं उत्तरदायित्व दोनो बदल गये है। पत्रकारिता और समाचार पत्र के साधनो और तकनीक का जिस तेजी के साथ अनवरत कायाकल्प हो रहा है उसे देखते हुए इक्कीसवीं सदी अर्थात सहस्त्राब्दी की पत्रकारिता का स्वरूप आमूलचूल बदला हुआ होगा।

संदर्भ

1. संचार क्रांति और हिन्दी पत्रकारिता, डॉ. अशोक शर्मा, 1997 वि.वि. प्रकाशन वाराणसी।
2. हिन्दी पत्रकारिता एवं जन संचार, ठाकुर दत्त शर्मा, वाणी प्रकाशन
3. उत्तर आधुनिक मीडिया तकनीक, हर्षदेव शर्मा, वाणी प्रकाशन
4. साहित्य और समाज, शिवकुमार मिश्र, वाणी प्रकाशन
5. मीडिया समाज और बाजार, राज्य स्तरीय संगोष्ठी 27, 28 फरवरी 2006, शासकीय छत्तीसगढ़ स्वशासी स्नातकोत्तर महाविद्यालय रायपुर छ.ग.
6. अंतर्राष्ट्रीय शोध संगोष्ठी, 10, 11, 12 जनवरी 2015 हिन्दी विभाग राष्ट्रसंत तुकडोजी महाराज नागपुर विश्वविद्यालय
7. समकालीन साहित्य चिंतन विविध स्वर, संपादक डॉ. मनोज पाण्डेय, संस्करण 2016 नवभारत प्रकाशन, दिल्ली
8. शोध प्रकल्प त्रैमासिक रिसर्च जर्नल, संपादक डॉ. सुधीर शर्मा, दिसम्बर 2009

विभागाध्यक्ष हिन्दी
शासकीय माता शबरी नवीन कन्या
महाविद्यालय, बिलासपुर (छ.ग.)

Govt. M.S. Naveen Girls College ★ Bilaspur (C.G.)

39

भारतीय राष्ट्रवाद का समीक्षात्मक परिदृश्य

डॉ. मूलचन्द्र पाल

भारतीय राष्ट्रवाद एक आधुनिक तत्व है। इस राष्ट्रवाद का अध्ययन अनेक दृष्टिकोणों से महत्वपूर्ण है। राष्ट्रवाद उदय की प्रक्रिया अत्यंत जटिल और बहुमुखी रही है। भारत में अंग्रेजों के आने से पहले देश में ऐसी सामाजिक संरचना थी जो कि संसार के किसी भी अन्य देश में शायद ही कहीं पाई जाती हो। वह पूर्व मध्यकालीन यूरोपीय समाजों से आर्थिक दृष्टि से भिन्न थी। भारत विविध भाषा–भाषी और अनेक धर्मों के अनुयायियों वाले विशाल जनसंख्या का देश है। सामाजिक दृष्टि से हिन्दू समाज जो कि देश की जनसंख्या का सबसे बड़ा भाग है, विभिन्न जातियों और उपजातियों में विभाजित रहा है। स्वयं हिन्दू धर्म में किसी विशिष्ट पूजा पद्धति का नाम नहीं है। बल्कि उसमें कितने ही प्रकार के दर्शन और पूजा पद्धतियाँ सम्मिलित है। इस प्रकार हिन्दू समाज अनेक साजिस और धार्मिक विभागों में बँटा हुआ है। भारत की सामाजिक, आर्थिक तथा राजनीतिक संरचना विशाल आकार के कण यहाँ पर राष्ट्रीयता का उदय अन्य देशों की तुलना में अधिक कठिनाई से हुआ है। भारत ही विश्व के किसी अन्य देश में इस प्रकार की प्रकट भूमि में राष्ट्रवाद का उदय हो। सर जॉन स्ट्रेची ने भारत की विभिन्नताओं के विषय में कहा है कि भारत वर्ष के विषय में सर्वप्रथम महत्वपूर्ण जानने योग्य बात यह है कि भारत वर्ष न कभी राष्ट्र था और न है और न उसमे यूरोपीय विचारों के अनुसार किसी प्रकार की भौगोलक राजनैतिक, सामाजिक अथवा धार्मिक एकता थी, न कोई भारतीय राष्ट्रवाद और न कोई भारतीय ही था जिसके विषय में हम बहुत अधिक सुनते हैं।"[1] इसी सम्बन्ध में सर जॉन शिले का कहना है कि "यह विचार है कि भारत वर्ष राष्ट्र है, उस मूल पर आधारित है। जिसको राजनीति शास्त्र स्वीकार नहीं करता और दूर करने का प्रयत्न करता है। भारत वर्ष एक राजनीति नाम नहीं है वरन् एक भौगोलिक नाम है जिस प्रकार यूरोप या अफ्रीका।"[2]

उपरोक्त विचारो से स्पष्ट हो जाता है कि भारत में राष्ट्रवाद का उदय और विकास उन परिस्थितियों में हुआ जो राष्ट्रवाद के मार्ग में सहायता प्रदान करने के स्थान पर बाधाएँ पैदा करती है। वास्तविकता यह है कि भारतीय समाज की

छत्तीसगढ़ का समग्र इतिहास

• डॉ. सुरेश चन्द्र शुक्ला
• डॉ. (श्रीमती) अर्चना शुक्ला

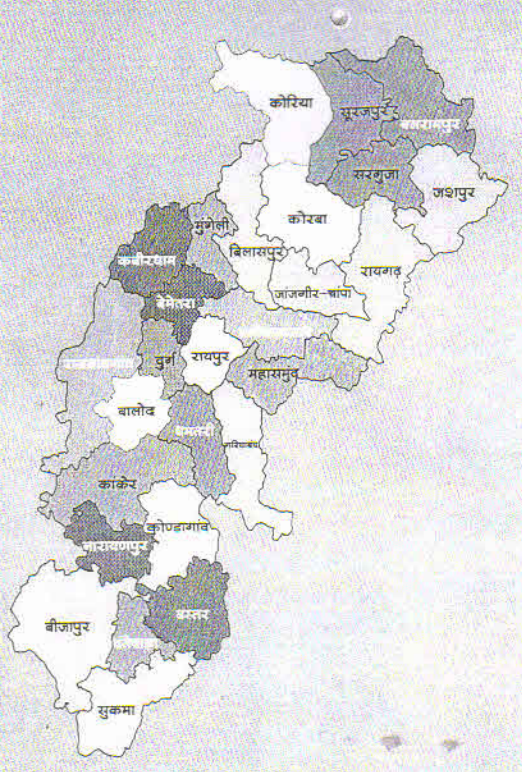

मातुश्री पब्लिकेशन

Govt. N.S. Naveen Girls College Bilaspur (C.G.)

© लेखकाधीन

- इस पुस्तक के प्रकाशन में प्रकाशक द्वारा पूर्ण सावधानी बरती गई है, फिर भी किसी प्रकार की त्रुटि के लिये प्रकाशक जिम्मेदार नहीं होगा।
- किसी भी परिवाद के लिये न्यायिक क्षेत्र रायपुर ही होगा।
- इस पुस्तक को अथवा इसके किसी भी अंश को बिना लेखक के लिखित पूर्वानुमति के प्रकाशित करना अवैधानिक होगा, अतः किसी भी रूप में जैसे– फोटोकॉपी, विद्युतग्राफी, यांत्रिकी व अन्य रूप में किसी भी उपयोग के लिये नहीं छापा जा सकता।
- आवरण पृष्ठ पर छत्तीसगढ़ राज्य का नक्शा पैमाने पर नहीं है (Map not to scale)।

संशोधित एवं परिवर्धित संस्करण – 2018

मूल्य : रुपये 290/– मात्र

ISBN: 978-81-939385-0-8

प्रकाशक:–
मातुश्री पब्लिकेशन
आर–2, श्रीराम नगर, फेस–2,
रायपुर (छ.ग.) 492007
मो. 94242–90520

Govt. M.S. Naveen Girls College ★ Bilaspur (C.G.)

पृष्ठ 342

जलग्रहण प्रबंधन का कृषि भूमि के बदलते प्रतिरूप पर प्रभाव

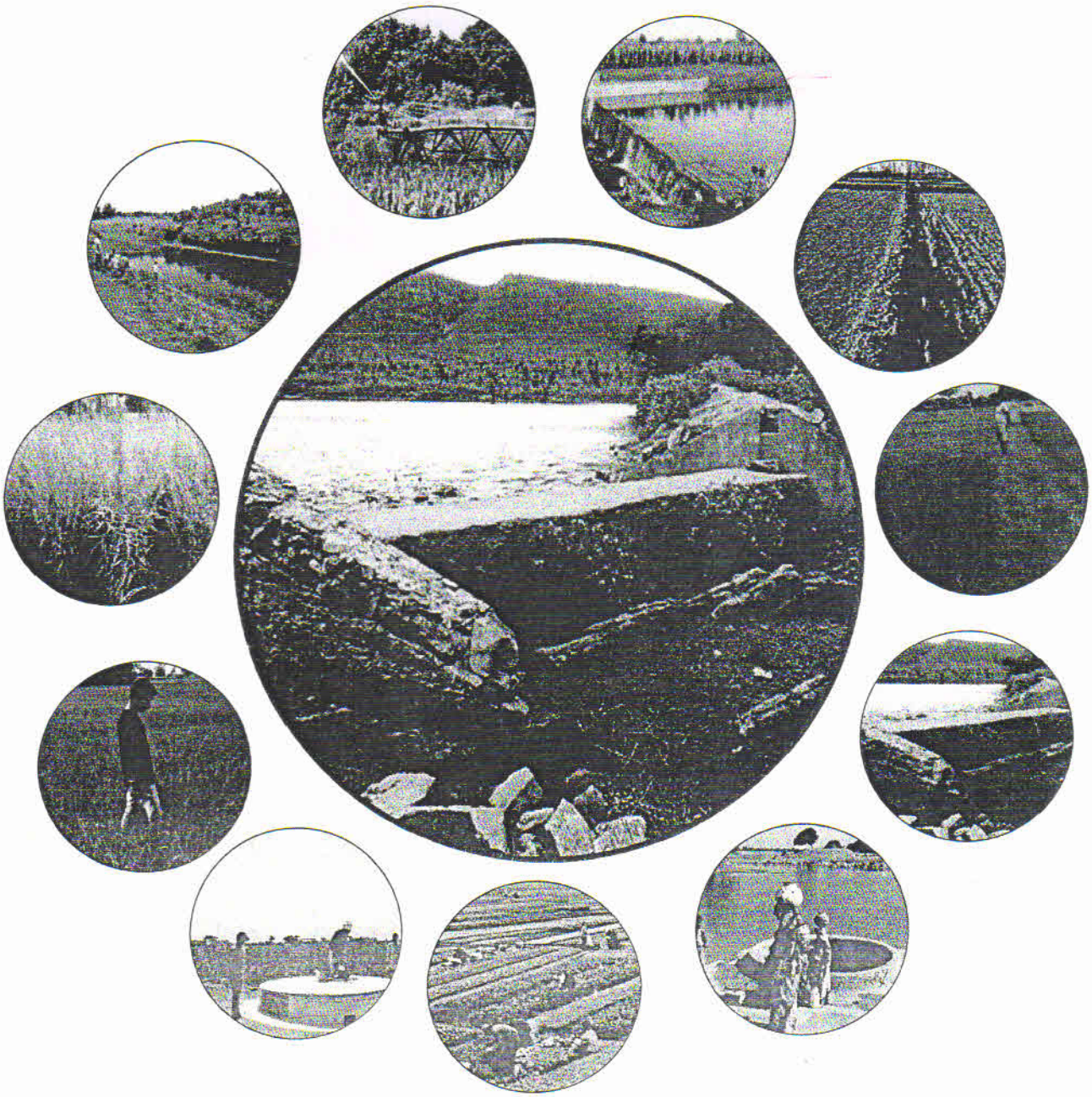

डॉ. (श्रीमती) संगीता शुक्ला
डॉ. दीपक शुक्ला

Govt. M.S. Naveen Girls College Bilaspur (C.G.)

जलग्रहण प्रबंधन का कृषि भूमि के बदलते प्रतिरूप पर प्रभाव

डॉ. (श्रीमती) संगीता शुक्ला
डॉ. दीपक शुक्ला

संकल्प प्रकाशन
कानपुर (उ.प्र.)

अनुक्रम

1.	संकल्पनात्मक रूपरेखा– जलग्रहण प्रबंधन एवं कृषि विकास	09
2.	पृष्ठभूमि– लोरमी विकासखण्ड– भौतिक एवं सांस्कृतिक	18
3.	परिप्रेक्ष्य दृश्य– मनियारी जलग्रहण	46
4.	जलसंसाधन– स्रोत एवं उपलब्धता	63
5.	भूमि उपयोग प्रतिरूप	83
6.	फसल प्रतिरूप	97
7.	कृषि उत्पादन	119
8.	कृषि नवाचार, तकनीकी एवं उपकरण	131
9.	क्षेत्रीय अध्ययन– सर्वेक्षित ग्राम का अध्ययन (ग्राम खुड़िया, धनियाडोली, सेमरसल, दादनकापा)	138
	निष्कर्ष	172
	BIBLOGRAPHY	179

डॉ. (श्रीमती) संगीता शुक्ला

जन्मतिथि : 09 नवम्बर 1966

शैक्षिक योग्यता : एम.ए., एम.फिल., पीएच.डी., एम.ए. (भूगोल)-1988, गोल्ड मेडलिस्ट (प्रावीण्य सूची में प्रथम स्थान) गुरुघासीदास विश्वविद्यालय, बिलासपुर (छ.ग.), एम.फिल.-1989, (तृतीय स्थान) प्रावीण्य सूची में। पं. रविशंकर शुक्ल विश्वविद्यालय, रायपुर (छ.ग.), शोधकार्य-(पीएच.डी.) 1998, हसदो बेसिन : एक भू आकृतिक अध्ययन

अध्यापन अनुभव : 31 वर्ष, **विशिष्टता :** भू आकृतिक विज्ञान (भूगोल)

प्रकाशित : Geomorphology of Hasdo Basin (Book), राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय संगोष्ठी, कार्यशाला में सहभागिता-(वर्ष 1991 से वर्तमान तक सक्रिय) राष्ट्रीय-91, अंतर्राष्ट्रीय-12, कार्यशाला-25, शोध पत्रप्रकाशित-15, राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय वेबीनार एवं (FDP) में वर्ष 2020 में ऑनलाईन सहभागिता-75, FDP = Faculty Development Programme Attended = 08. यू.जी.सी. प्रदत्त-लघुशोध परियोजना (एक) - पूर्ण वर्ष 2016 = 01

विशेष : पाँच शोध छात्रों को पीएच.डी. हेतु निर्देशन

सम्प्रति : सहायक प्राध्यापक, (भूगोल) शासकीय बिलासा (स्वशासी) कन्या स्नातकोत्तर महाविद्यालय बिलासपुर (छ.ग.)

डॉ. दीपक शुक्ला

जन्मतिथि : 30 जून 1963

शैक्षिक योग्यता : एम.कॉम., एम.फिल., पीएच.डी.

एम.कॉम. 1986, गोल्ड मेडलिस्ट (प्रावीण्य सूची में प्रथम स्थान) गुरुघासीदास विश्वविद्यालय, बिलासपुर (छ.ग.), एम.फिल. (कॉमर्स)-1987, गुरुघासी दास विश्वविद्यालय, बिलासपुर (छ.ग.), शोधकार्य (पीएच.डी.) - 1994, लाख उत्पादन का आदिवासी विकास में योगदान

अध्यापन अनुभव: 34 वर्ष

विशिष्टता : लेखाकर्म एवं प्रबन्ध (Acount & Management)

प्रकाशित शोध-पत्र : 10

सहभागिता : राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय संगोष्ठी एवं राष्ट्रीय कार्यशाला, राष्ट्रीय संगोष्ठी - 75, अंतर्राष्ट्रीय - 10, कार्यशाला - 25, राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय बेवीनार एवं FDP में वर्ष 2020 में, ऑनलाइन सहभागिता-78

सम्प्रति : सहायक प्राध्यापक (वाणिज्य), शासकीय माता शबरी नवीन कन्या स्नातकोत्तर महाविद्यालय, बिलासपुर (छ.ग.)

सं प्र

संकल्प प्रकाशन

1569/14, नई बस्ती बक्तौरीपुरवा

बृहस्पति मन्दिर, नौबस्ता, कानपुर-208021

Mob. : 94555-89663, 70077-49872

Email : sankalpprakashankanpur@gmail.com

₹595.00

ISBN 978-81-949150-9-6

9 788194 915096 >

Govt. M.S. ... Girls College Bilaspur (C.G.)

EDUCATION & SOCIAL SCIENCE RESEARCH

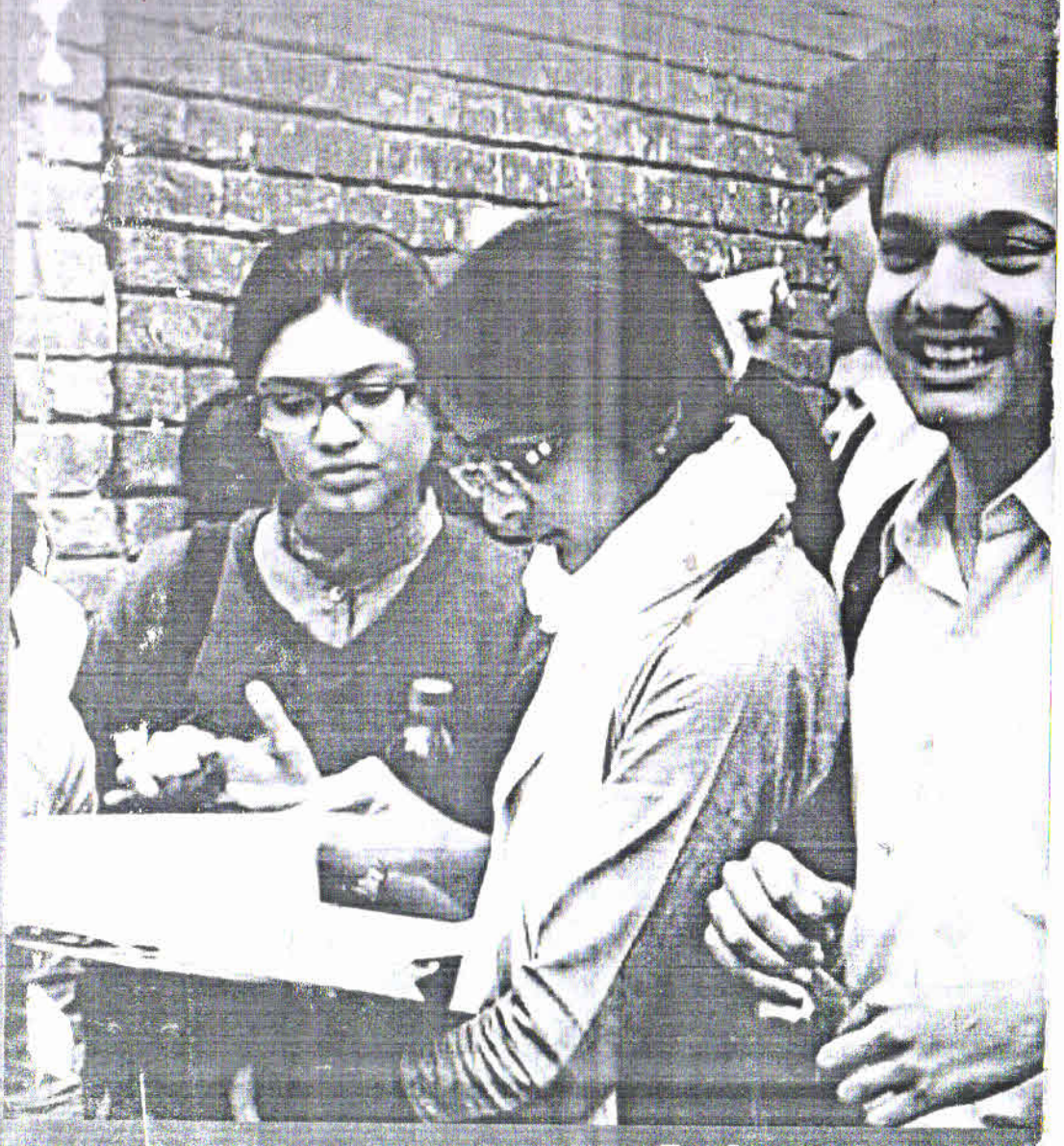

Shobha Mahiswar
Asstt. prof.
Home science.

Govt. M.S. Naveen Girls College Bilaspur (C.G.)

EDUCATION AND SOCIAL SCIENCE RESEARCH

Editor

Dr. Sarita Meshram
Principal
Vivekanand College NARA Bhansoj Raipur (C.G.)

"The view expressed in all the contributions which appear in the book are those of the individual author and are not to be taken representing the view of the editors"

GJMS Publishers
Jabalpur (M.P.)

Naveen Girls College
Bhaspur (C.G.)

List of Contributors

1. **SHOBHA MANHISWAR**
   Deptt. of Home Science, Govt. Mata Sabri Naveen Girls College Bilaspur (C.G.) 1-3
2. **SANDEEP PATEL**
   Research Scholor, Rani Durgawati University Jabalpur (M.P.) 4-17
3. **ANIL KUMAR MEHRA**
   Deptt. Of Education, Govt. Degree college Jobat Alirajpur (M.P.) 18-34
4. **DR RESHU JAIN**
   Deptt. Of Education, Govt Degree College Manawar Dhar (M.P.) 35-48
5. **MRS PRIYANSHU YADAVA**
   Computer Department Govt Science and Commerce College, Bhopal (M.P.) 49-56
6. **DR. ARCHNA SUDESH MATHEW**
   Deptt. of Political Science, Govt. P.G. Autonomus College, Chhindwara (M.P.) 57-78
7. डॉ. सीमा श्रीवास्तव
   समाज शास्त्र विभाग, शासकीय महाविद्यालय कटंगी जिला बालाघाट (म.प्र.) 79-86
8. डॉ. ममता दुबे
   अर्थशास्त्र विभाग, शासकीय महाविद्यालय गाडरवाड़ा जिला नरसिंहपुर (म.प्र.) 87-92
9. डॉ. वाय.के शर्मा
   रसायन शास्त्र विभाग, शासकीय महाविद्यालय जुन्नारदेव जिला छिन्दवाडा (म.प्र.) 93-98
10. **डॉ. ए.के. बरासिया**
   वाणिज्य विभाग, एस.एस.एल.एन. शासकीय पेंचवैली स्नातकोत्तर महाविद्यालय परासिया जिला छिन्दवाड़ा (म.प्र.) 99-102
11. **डॉ. नेहा मनोज राय**
   वाणिज्य विभाग, शासकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय नरसिंहपुर (म.प्र.) 103-110
12. **डॉ. कंचन मशराम**
   समाज शास्त्र विभाग, शासकीय जटाशंकर त्रिवेदी स्नातकोत्तर महाविद्यालय बालाघाट (म.प्र.) 111-123
13. **डॉ. शिवनाथ डहेरिया**
   अर्थशास्त्र विभाग, शासकीय महाविद्यालय केवलारी जिला सिवनी (म.प्र.) 124-132
14. **डॉ. भावना तिवारी**
   विभागाध्यक्ष, इतिहास विभाग नवयुग कला एवं वाणिज्य महाविद्यालय, जबलपुर (म.प्र.) 133-141
15. **डॉ. श्रीमति कुसुम गौतम**
   समाजशास्त्र विभाग, शासकीय महाविद्यालय दमुआ जिला छिन्दवाड़ा (म.प्र.) 142-145
16. **श्रीमती तृप्ति श्रीवास्तव**
   सहायक प्राध्यापक, शिक्षा संकाय हितकारिणी प्रशिक्षण महिला महाविद्यालय,जबलपुर (म.प्र.) 146-149
17. **डॉ. प्रीति पाठक**
   सहा.प्राध्यापक, शिक्षा संकाय केशरवानी महाविद्यालय,जबलपुर 150-153
18. **डॉ. सुलक्षणा त्रिपाठी**
   सहायक प्राध्यापक हितकारिणी प्रशिक्षण महिला महाविद्यालय जबलपुर (म.प्र.) 154-157

Editorial

India has one of the largest higher education systems in the world. Higher education in India has expanded very rapidly in last few decades and particularly after the period of globalization both in terms of increase in number of higher educational institutions and student enrollment ratio. Higher education pays a key role in developing country like India to tap huge untapped human resource potential to its fullest extent for nation building. Our present higher education system has witnessed a huge quantitative growth with the opening of hundreds of central, states, deemed, private universities and thousands of private colleges and many other institutes of national importance. Even though, the qualitative growth of nearly two-third (75%) percent of Indian universities and institutions are far below from the satisfactory level. In this conceptual and review based paper, we have discussed the present status of higher education as well as also tried to critically analysis the major issues facing by our present higher education system. The study was purely secondary based and data of last five years i.e. from 2010-2011 to 2014-15 were analyzed and presented in the form of simple tables for easier interpretation. The issues like access, equity, quality of HEIs, privatization, and low gross enrollment ratio, highly complex and uncertain regulatory environment has been discussed briefly. Need of education reforms, academic and industry collaboration, privatization, student-centered education and many more suggestions were given in this paper. The study concludes that role of education cannot be ignored as it helps to produced knowledge based society and provides opportunity for economic growth and progress.

Dr. Sarita Meshram

ISBN 978-93-85304-41-5

1

IMPORTANCE OF EARLY CHILDHOOD EDUCATION

Shobha Mahiswar
Deptt of Home Science
Govt. Mata Sabri Naveen Girls College Bilaspur (C.G.)

Education lends beauty to man. Education is man's most precious wealth. It confers happiness and renowned on man it is the teacher of teachers. Man without education is an animal. It built the character and is necessary for development of personality of an individual. It includes physical health. Mental health, etiquettes and social behavior, civic rights and duties etc. Every one of us is well aware about importance of these values in life of our individual yet we are unable to develop it in our children resulting in a number of behavioral and developmental problem.

Need of early childhood education:

Early childhood education has many benefits; the most important one teaching young children the necessary learning skills they need to grow socially, and developmentally; children are growing and learning every day so the earlier they start their education the better. The need to provide more children early education is huge, no matter what the family income is. Every child deserves to have a chance to excel in their own future. This paper will address the benefits of early childhood education and the different types of programs available. The positive affect that can happen to children attending

early childhood education centers such as head start, pre-k, or a local daycare center are extraordinary. The need for this early education is crucial to children's futures. "Research shows the benefits to the child include improved readiness to learn, improved early literacy, decreased need for remedial or special education placement, and improved cognitive development. Long term, research shows a stronger likelihood to graduate from high school, improved academic confidence, and more participation in post-secondary education."

Children's early years are so critical. There development, socialization, and language skills are developing and are very important to develop strong. How children develop depends on the skill obtained in there early years. Research has shown that, "quality early learning opportunities –where children learn how to learn- are increasingly recognized as an essential part of the education continuum that extends threw out adulthood."

The purpose of education is to have the knowledge that will allow you to be successful and provide for your family. It is most important to start at a young age. That is when they learn the most. When we were young we've learn things without even trying it flows as if we hadn't some weird power but it is just the fact that our brain has such a craving and is in a quest for all of the knowledge it can handle. As a teacher I hope to accomplish several things. First I want my students to be able to think. Secondly, I want to see that "they got it" by communicate with them. It must be remember that the purpose of education is not to fill the minds with facts. It is to teach children to think, if that is possible, and always to think for themselves as stated by "Robert Hutchins". It is very clear to that successful early childhood program must provide a

safe and nurturing environment that promotes social, emotional, physical, and cognitive development.

Values are the fundamental principles, which govern our perception and action. Values are formed by a series of process of interaction of individual with our environment. We are subject to the values and concept of our parents, teachers and colleagues. To develop character it is necessary to install the human values of truth, right action, peace, love and non-violence.

Conclusion:-

It is a time for decision makers and professionals in the field of education to leas in the total effort of designing and implementing new and more effective ways of preparing the future citizen and future leaders into the creation of better societies. The priority should be to translate the valuable lessons from spiritual text- the Bible, Quran and to transform the growing culture of violence, greed and intolerance into one of peaceful co-existence.

Values are our subjective reactions to the world around us. They guide and mould our options and behavior values have two important characteristics. First, values developed early in life and are very resistant to change. Second, value defines what is right and what is wrong. Therefore the ultimate goal of the whole process of education should be to unravel the 'truth' to manifest "the perfection already in man", to combine knowledge compassion and efficiency with moral excellence.

###

Govt. M.S. Naveen Girls College ★ Bilaspur (C.G.)

अनुवाद की समस्याएँ

डॉ. राम गोपाल सिंह जादौन

Govt. M.S. ... College Bilaspur (C.G.)

ISBN : 978-81-89495-72-5

© : डॉ. राम गोपाल सिंह जादौन

प्रकाशक : साहित्य संस्थान
ई-10/660, उत्तरांचल कालोनी,
(नियर संगम सिनेमा)
लोनी बार्डर, गाजियाबाद-201102
मोबाइल : 9968047183
Email : fatehchand058@gmail.com

मूल्य : 500 रुपये

आवरण : एम. डी. सलीम

प्रथम संस्करण : 2019

शब्द-संयोजन : मुस्कान कम्प्यूटर्स, दिल्ली

मुद्रक : पूजा ऑफसेट
दिल्ली-110093

Anuvad Ki Samasyayen
By Dr. Ram Gopal Singh Jadaun

16

अनुवाद की प्रासंगिकता

- डॉ. इसाबेला लकड़ा

वर्तमान युग को अनुवाद का युग कहा जाए तो अतिशयोक्ति नहीं होगी। इसका क्षेत्र विस्तृत है। भाषा का जन्म व्यक्तियों में आपसी विचार-विनिमय के प्रयत्न से हुआ तो अनुवाद का जन्म दो भाषाभाषी व्यक्तियों या समुदायों में विचार विनिमय सम्भव बनाने के लिए। न्यूमार्क ने अनुवाद के संबंध में ठीक ही कहा है–"अनुवाद एक शिल्प है, जिसमें एक भाषा में लिखित संदेश के स्थान पर दूसरी भाषा में उसी संदेश को प्रस्तुत करने का प्रयत्न किया जाता है।" डॉ. देवेन्द्रनाथ शर्मा के अनुसार-"विचारों को एक भाषा से दूसरी भाषा में रूपांतरित करना अनुवाद है।" प्रसिद्ध भाषाविद् डॉ. भोलानाथ तिवारी का मानना है–"एक भाषा में व्यक्त विचारों को यथासंभव समान और सहज अभिव्यक्ति द्वारा दूसरी भाषा में व्यक्त करने का प्रयास अनुवाद है।" इस प्रकार डॉ. तिवारी के अनुसार अनुवाद कथनतः और कथ्यतः निकटतम सहज प्रतिप्रतीकन है। भर्तृहरि (2.1.15) में अनुवाद का अर्थ दुहराना या पुनःकथन है–आवृत्तिरनुवादो वा। जैमिनीय न्यायमाला (1.4.6) में है–ज्ञातस्य कथनमुनवादः। अर्थात् ज्ञान का कथन अनुवाद है। अनुवाद मूलतः 'पुनःकथन' ही है। अर्थात् एक भाषा में कही गई बात का दूसरी भाषा में पुनःकथन।

आज विश्वभर में अनुवाद की आवश्यकता को महसूस किया जा रहा है। कला, विज्ञान, सूचना प्रौद्योगिकी, साहित्य-संस्कृति, धर्म, दर्शन, राजनीति, समाजशास्त्र, भौतिक, गणित, वनस्पतिशास्त्र आदि ज्ञान की तमाम महत्वपूर्ण जानकारियों को दूसरे देश तक पहुँचाने में अनुवाद की भूमिका महत्वपूर्ण है। अनुवाद के द्वारा ही ज्ञान की प्राप्ति, विचारों का विनिमय, अनुसंधानों की जानकारी, साथ ही सांस्कृतिक संबंधों को प्रगाढ़ बनाने और सांस्कृतिक विनिमय में यह सेतु का काम करता है। ज्ञान-विज्ञान के प्रज्ञान से संचार माध्यमों के द्रुत संचरण से आज भाव, विचार, तकनीक, संदेश, समाचार, ज्ञान के परस्पर विनिमय की गति तीव्र होती जा रही है।

मनुष्य दिन-प्रतिदिन नयी-नयी खोज कर ज्ञान क्षेत्रों के नित नूतन द्वार खोल रहा है। अनुवाद का क्षेत्र वृहद् से वृहत्तर होता जा रहा है। ऐसी स्थिति में अनुवाद की सार्थकता उसकी प्रासंगिकता उसका औचित्य निश्चित रूप से उचित प्रतीत होता है।

अनुवाद की सार्थकता और विलक्षणता के आलोक से आलोकित संसार की भाषाओं में अनुवाद की शैलियाँ और प्रविधियाँ अपनाई गई हैं। नयी तकनीक, ज्ञान-विज्ञान, अनुसंधान की अधुनातन जानकारी अनुवाद से ही संभव है। राष्ट्रीय एकता से अंतर्राष्ट्रीय संबंधों तक सांस्कृतिक सामाजिक सन्निकट अनुवाद से ही संभव है। राष्ट्रीय एकता में, भारतीय साहित्य के अध्ययन–अध्यापन में, तुलनात्मक साहित्य के अध्ययन में, व्यावसाय के रूप में, औद्योगिक विकास के रूप में, जनसंचार माध्यमों के रूप में, बहुभाषी शिक्षा प्रणाली के रूप में, पत्रकारिता के क्षेत्र में अनुवाद के महत्व को नकारा नहीं जा सकता है। अनुवाद की उपादेयता आज विश्वयापी हो गयी है। इसके विलक्षण अभिलक्षण उसकी सार्थकता और प्रासंगिकता को सिद्ध करते हैं। अनुवाद वर्तमान की आवश्यकता और भविष्य की असीम संभावनाओं का द्वार है।

अनुवाद एक सर्जनात्मक कला है। वैश्वीकरण एवं बहुभाषिकता विभिन्न देशों की संस्कृतियों, भाषाओं एवं भौगोलिक सीमाओं में परस्पर आदान-प्रदान के कारण उत्पन्न एवं समन्वित स्थिति एवं स्वरूप की ही देन अनुवाद है। आज सृजनात्मक ज्ञान-विज्ञान के साथ-साथ साहित्य के अनुवाद का भी अत्यधिक महत्व है। इस आधार पर यदि हम वर्तमान युग को अनुवाद का युग कहें तो अतिशयोक्ति नहीं होगी। यदि 'अनुवाद की कला' न होती तो विश्व साहित्य और विश्व संस्कृति जैसी संकल्पनाएँ मात्र काल्पनिक रह जातीं। धर्म एवं दर्शन, साहित्य, विज्ञान एवं तकनीक, वाणिज्य एवं व्यवसाय, राजनीति एवं कूटनीति जैसे संस्कृति के विभिन्न पहलुओं का अनुवाद से अभिन्न संबंध रहा है। विश्व संस्कृति के निर्माण की प्रक्रिया में विचारों के आदान-प्रदान का महत्व बढ़ रहा है जो अनुवाद द्वारा ही संभव है। उदाहरण के लिए 'बाइबिल' तथा पाश्चात्य साहित्य का भारतीय भाषाओं में और भारतीय आध्यात्मिक ग्रंथों एवं भारतीय साहित्य का यूरोपीय भाषाओं में जो अनुवाद हुआ, उसने पूर्व एवं पश्चिम की दूरी और पार्थक्य की पुरानी धारणा को तोड़ा, वहीं एक-दूसरे की संस्कृति से परिचय करवाया तथा विकास में सहायक सिद्ध हुआ। अनुवाद भाषाओं और संस्कृतियों के बीच, बौद्धिक उपलब्धियों के बीच, विज्ञान और अध्यात्म के बीच संवाद का सेतु है। अनुवाद का अर्थ ही है–"सेतु बनकर दो अनजान संस्कृतियों और भाषा समुदाय के बीच संवाद स्थापित करना।" वह दो संस्कृतियों, विचारधाराओं, चिंतन, परंपराओं, भाषिक संस्कारों, रीति-रिवाजों एवं अवधारणाओं के

बीच सेतु निर्माण का कार्य करने लगा है। सूचना क्रांति के युग में विश्वदृष्टि का निर्माण होने लगा, परिणामतः इसका क्षेत्र सीमित से असीमित होकर विश्वव्यापी हो गया। चिकित्सा, तकनीक, वैज्ञानिक, दार्शनिक, साहित्यिक आदान-प्रदान होने के कारण मानव के जीवन मूल्यों एवं अंतर्राष्ट्रीय सोच के परस्पर संवाद से परायेपन का भाव कम होने लगा। एक देश अथवा संस्कृति की भाषा अपनी साहित्यिक एवं तकनीकी उपलब्धियों को किसी दूसरे देश, भाषा, संस्कृति तक पहुँचाने के लिए अनुवाद का ही सहारा लेती है। "इतिहास गवाह है कि यदि तत्कालीन ज्ञान-विज्ञान, कला, साहित्य की रक्षा अन्य भाषाओं के अनुवादकों ने न की होती तो उनकी गौरवगाथाओं को कब का भुला दिया गया होता। सभ्यताओं के विनाश के साथ ही तक्षशिला, नालंदा, एथेंस, बगदाद, फ्लोरेंस आदि स्थानों पर रचा गया महान् साहित्य कब का नष्ट हो गया होता। साहित्य चाहे भारतीय हो या विदेशी, लेखक और अनुवादक के बीच शताब्दी से एक ऐसा अटूट और अंतरंग रिश्ता चला आ रहा है कि जिसका लाभ हर युग और हर भाषा के पाठक ने उठाया है। इस दिशा में विश्व की सर्वप्रमुख भाषाओं में हिन्दी ने अहम् भूमिका निभाई है।"[4]

यदि प्राचीन साहित्य के अनुवाद न किए होते तो आज वाल्मीकि, व्यास, कालिदास आदि देशों और विदेशों में अपनी पहचान न बनाते। अनुवाद न होता तो अरस्तू, प्लेटो, सुकरात, टॉलस्टाय, गोर्की, उमर खैय्याम, शेक्सपियर, शैली, कीट्स आदि महान् लेखकों की विचार संपदा से सारा विश्व कैसे लाभान्वित होता? रवीन्द्रनाथ, बंकिम, शरतचन्द्र सिर्फ बंगाल में सीमित रह जाते। तुलसीदास तथा जयशंकर प्रसाद के काव्य का रसास्वादन अन्य भाषाओं के पाठक कैसे कर पाते? चीन, जर्मनी, रूस, कोरिया, जापान आदि की लोककथाओं के साथ भारतीय लोककथाएँ भी सामने नहीं आ पातीं। अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर दो भाषाओं के बीच की दूरी मिटाने में अनुवाद की भूमिका स्तुत्य है।

भारतेन्दु, प्रेमचंद, रवींद्रनाथ, दिनकर, जैनेन्द्रकुमार, अमृतराय, अमृता प्रीतम, बच्चन, धर्मवीर भारती, निर्मल वर्मा, अज्ञेय, राजेन्द्र यादव, कमलेश्वर आदि ने विभिन्न भाषाओं के उत्कृष्ट साहित्य को हिन्दी तथा अन्य भारतीय भाषाओं के पाठकों को उपलब्ध कराया है। अनुवाद के प्रारंभिक दौर पर गौर करें तो हम पाते हैं कि भारतेन्दु ने स्वयं अंग्रेजी, संस्कृत, बंगला, प्राकृत से असंख्य अनुवाद किए; साथ ही समकालीन साहित्यकारों को भी प्रेरणा दी। भारतेन्दु देश की उन्नति के लिए अन्य भाषाओं के ग्रंथों को हिन्दी में अनूदित करना आवश्यक समझते थे। 1880 ई. में भारतेन्दु ने शेक्सपियर के नाटक 'मर्चेंट ऑफ वेनिस' का 'दुर्लभ बंधु', बंग्ला से यतींद्रमोहन ठाकुर के नाटक का हिन्दी में 'विद्या सुंदर', प्राकृत से राजशेखर के नाटक का हिन्दी में 'कर्पूर मंजरी', संस्कृत से दत्त एंव श्री हर्ष के नाटकों का हिन्दी में

अनुवाद किया। भारत जैसे बहु भाषाभाषी देश में तो अनुवाद की उपादेयता स्वयंसिद्ध है।

अंत में यह कह सकते हैं कि बहुभाषिक, बहुजातीय और बहुसांस्कृतिक समाज को जोड़ने का दायित्व अनुवाद के माध्यम से ही पूरा किया जा सकता है। अनुवाद में एक भाषा में व्यक्त विचारों को दूसरी भाषा में व्यक्त करना है लेकिन यह सरल कार्य नहीं है। प्रत्येक भाषा की प्रकृति, प्रवृत्ति अलग-अलग होती है। हमें मूल भाषा की आत्मा को बनाये रखना है। हम कह सकते हैं कि आज अनुवाद की आवश्यकता विश्व की संस्कृतियों का परिचय, ज्ञान-वृद्धि, भावनात्मक एकता, अभिव्यक्ति में प्रसार, व्यापार वृद्धि, विधि संबंधी गवेषणाएँ, साहित्य आदि के तुलनात्मक अध्ययन के लिए अनिवार्य है।

यह भी सत्य है कि अनुवाद के माध्यम से भाषा समृद्ध होती है। नये भावों, नये विषयों, नये विचारों और नयी अभिव्यक्ति पद्धतियों को व्यक्त करने के प्रयत्न से भाषा की अभिव्यक्ति क्षमता विस्तृत होती है। उसके शब्द भण्डार में वृद्धि होती है। हम कह सकते हैं कि अनुवादक का स्थान साहित्य सर्जक की तरह है, जिसकी सहायता के बिना व्यापक मानवीय संस्कृति की परिकल्पना नहीं की जा सकती। इस दृष्टि से हम कह सकते हैं कि अनुवाद भूत, वर्तमान एवं भविष्य में सार्थक एवं प्रासंगिक है।

संदर्भ सूची

1. अनुवाद विज्ञान, (सं.) डॉ. बालेन्दु शेखर तिवारी, पृ. 11
2. वही
3. अनुवाद विज्ञान, डॉ. भोलानाथ तिवारी, पृ. 11
4. प्रयोजनमूलक हिन्दी सृजन और समीक्षा, डॉ रामलखन मीणा, पृ. 375

Govt. M.S. Naveen Girls College Bilaspur (C.G.)

छत्तीसगढ़ का समग्र इतिहास

• डॉ. सुरेश चन्द्र शुक्ला
• डॉ. (श्रीमती) अर्चना शुक्ला

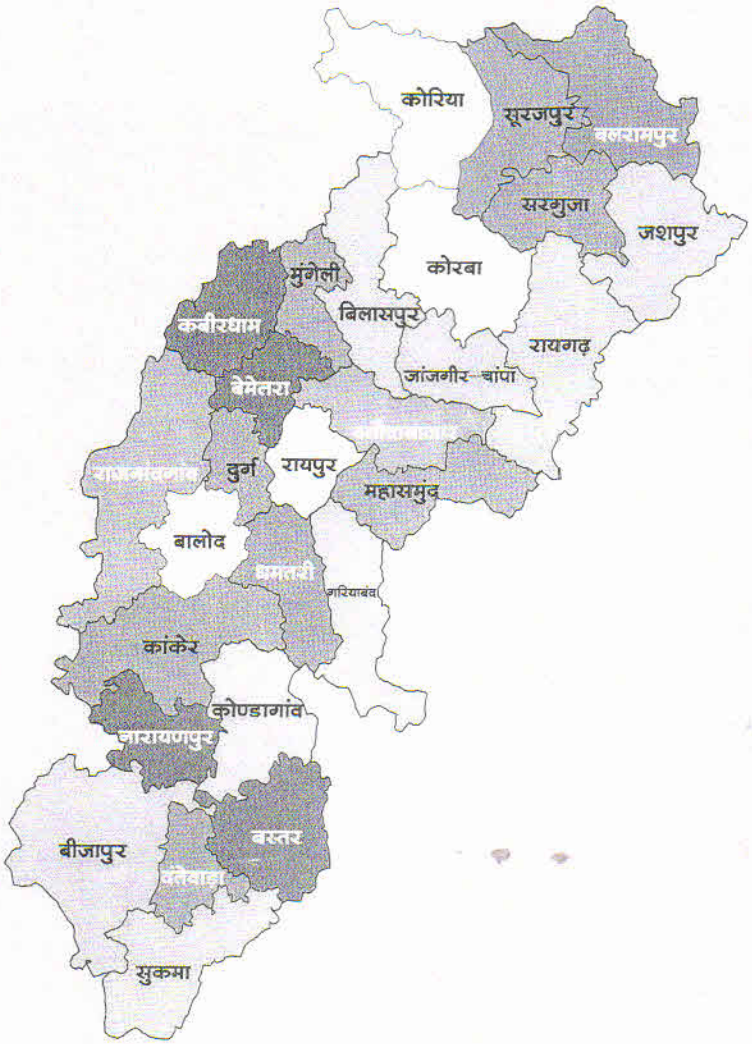

मातुश्री पब्लिकेशन

Naveen College Bilaspur (C.G.)

© लेखकाधीन

- इस पुस्तक के डेटा संग्रहण एवं प्रकाशन में लेखक तथा प्रकाशक द्वारा पूर्ण सावधानी बरती गई है, फिर भी किसी प्रकार की त्रुटि के लिये लेखक या प्रकाशक जिम्मेदार नहीं होगा।
- किसी भी परिवाद के लिये न्यायिक क्षेत्र रायपुर ही होगा।
- इस पुस्तक को अथवा इसके किसी भी अंश को बिना लेखक के लिखित पूर्वानुमति के प्रकाशित करना अवैधानिक होगा, अतः किसी भी रूप में जैसे– फोटोकॉपी, विद्युतग्राफी, यांत्रिकी व अन्य रूप में किसी भी उपयोग के लिये नहीं छापा जा सकता।
- आवरण पृष्ठ एवं अध्यायों पर चित्रित नक्शे यथा छत्तीसगढ़ राज्य का नक्शा इत्यादि पैमाने पर नहीं है (Map not to scale, just for reference), केवल संदर्भ हेतु प्रदर्शित है।

प्रथम संस्करण – 2002
द्वितीय संस्करण – 2018
तृतीय संस्करण – 2020

मूल्य : रुपये 299/–

ISBN: 978-81-939385-0-8

मुद्रकः सागर प्रिन्टर्स, रायपुर

प्रकाशकः
मातुश्री पब्लिकेशन
आर–2, श्रीराम नगर, फेस–2,
रायपुर (छ.ग.) 492007
मो. 79870–45932
ई–मेलः matushreepublication@gmail.com

यह बात सच है कि
विद्यमान है क्योंकि
एवं अन्य क्षेत्रों में
आजादी की लड़ाई में
सहयोग किया तथा
थी, परिणामस्वरूप
व्यक्तियों के
महापुरुषों की यह
साँसें छत्तीसगढ़ में
शबरी माता के
जन अनभिज्ञ नहीं
सन्यासी, कवि
विशेष स्थान
गौरवान्वित किया
खान–पान
क्षेत्रों में
परिवर्तन
का नाम
विश्व के
का विशाल
उर्वरा
कटोरा
स्थल
पर्यटन
यहाँ
अवलोकन
और यह
इतिहासकारों ने
इतिहासकार
फल है कि
हैं। इन शोधों
जानकारियाँ
शोधकर्ताओं के
भविष्य में भी
आकर्षण का केन्द्र

पृ. 396

विकलांग-दिव्यांग-विमर्श

सम्पादक

डॉ. रेखा दुबे

Govt. M.S. Naveen Girls College ★ Bilaspur (C.G.)

लेखक व प्रकाशक की लिखित अनुमति के बिना इस पुस्तक को पूरी तरह अथवा आंशिकतौर पर या पुस्तक के किसी भी अंश की फोटोकॉपी, रिकॉर्डिंग अथवा इलेक्ट्रॉनिक अथवा ज्ञान के किसी भी माध्यम से संग्रह व पुन: प्रयोग की किसी भी प्रणाली द्वारा इस पुस्तक का कोई भी अंश प्रेषित, प्रस्तुत अथवा पुनरुत्पादित ना किया जाए। प्रस्तुत पुस्तक में लेखक के अपने विचार और सामग्री हैं, जिनसे प्रकाशक का कोई लेना-देना नहीं है।

Ekkisvin Sadi ka Navya Vimarsh : Viklang/Divyang-Vimarsh

Ed. by

Dr. Rekha Dubey

I.S.B.N.: 978-81-8135-163-0

© डॉ. रेखा दुबे

मूल्य : 550.00 रुपये

प्रथम संस्करण : सन् 2021

प्रकाशक : **पंकज बुक्स**

109-ए, पटपड़गंज गाँव, दिल्ली-110091

दूरभाष : 8800139684, 9312869947

वितरक : भावना प्रकाशन, दिल्ली

आवरण : नीरज

शब्द संयोजक : पंकज ग्रॉफिक्स, दिल्ली-110092

मुद्रक : राधा ऑफसेट, दिलशाद गॉर्डन, दिल्ली।

Published by :

Pankaj Books,

109-A , Patparganj Village, Delhi-110091, INDIA

E-mail : bhavnaprakashan@gmail.com

पूर्ववाक्

इक्कीसवीं सदी विकलांग विमर्श अनेकानेक चुनौतियों से परिपूर्ण है। वैश्विक महामारी कोविड-19 ने परिवार, समाज, राष्ट्र के साथ सम्पूर्ण विश्व को अपने आगोश में लेकर किसी-न-किसी पक्ष से विकलांगता के स्तर पर ला खड़ा कर दिया है। सामान्यत: हम सभी विकलांगता जैसे शब्दों से यही समझते हैं कि जिसकी शारीरिक क्षमता जन्म से या कभी भी किसी भी समय सामान्य रूप से असामान्य रूप में जो दृष्टिगत् हो।

विकलांग शब्द सुनते मन मस्तिष्क पर छाप छप जाती है कि शरीर के अंग का दुर्बल होना है, परन्तु वर्तमान परिवेश में हरेक व्यक्ति कहीं न कहीं से विकलांग हो चुका है चाहे व शरीर से हो या परिवेश, से या फिर दिमागी तौर पर या कहें सामाजिक स्तर पर, कुल मिलाकर नकारात्मक जो भी पहलू हमसे जुड़ते हैं शायद मेरी दृष्टिकोण में वही विकलांगता है।

कोविड-19 ने सम्पूर्ण विश्व को मानसिक रूप विकलांग बनाकर रख दिया और हरेक व्यक्ति आर्थिक रूप से कमजोर होकर उस वर्ग को स्पर्श किया। विकलांग होना मनुष्य की दुर्बलता का परिचायक बन चुका है। वर्तमान में विकलांगता के कई कारण देखने को मिल रहे, जैसे अवसाद, हीन भावना, एकाकी जीवन, एकल परिवार, संकीर्ण मानसिकता, अशिक्षा, गरीबी, कुपोषण, विसंगति, जन्मजात, दुर्घटना आदि।

पौराणिक ग्रंथों में विकलांगता का दर्शन महाभारत, श्रीमद्भागवत्, आख्यान आदि में विश्लेषित है।

ईश्वर की देन या प्रकृति का प्रदत्त विकृति किसी दुर्घटना, असामयिक बीमारी या फिर अन्य किसी कारणवश सामान्य स्वरूप से असामान्य रूप में होना विकलांगता का कारण है। कभी कभी ऐसा देखा गया है कि अगर ईश्वर ने किसी पक्ष को कमजोर बनाया तो दूसरा पक्ष किसी अन्य पक्ष को मजबूत किया

ब्रह्मांड के विकलांग पोषक भगवान शंकर

-राधाकृष्ण पाठक 'अतीत' : 98

पौराणिक गाथाओं में विकलांग विमर्श

-डॉ. फूलदास महंत : 102

फला साधना में दिव्यांगता बाधित नहीं

-विनोद मिश्र "सुरमणि" : 113

विकलांगों की समस्याओं की प्रासंगिकता

-डॉ. श्रद्धा हिरकने : 119

धार्मिक ग्रंथों एवं हिन्दी साहित्य में विकलांगता

-डॉ. बलदाऊ प्रसाद निर्मलकर : 125

विकलांगता कोई अभिशाप नहीं

-डॉ. प्रीति प्रसाद : 143

कहानी संग्रह "हौसला" में मानवीय चेतना

-सृजन महंत : 146

विकलांगों के जीवन पर सामाजिक परिवेश का प्रभाव : हौसला कहानी संग्रह के संदर्भ में

-बेला महंत : 151

कथा साहित्य में विकलांग विमर्श-संदर्भ : "विकलांग विमर्श की कहानियाँ"

-डॉ. राजेश कुमार मानस : 156

तीसरा पहिया की व्यथा-कथा

-डॉ. क्रांति कुमार सिन्हा : 161

तुलसीदेवी तिवारी की कहानियों में विकलांग विमर्श

-डॉ. चन्द्रिका चौधरी : 166

एक बीघा प्यार : निशक्त हीरा सशक्तों के लिए मिसाल

-बोबिजा : 174

सफर की धूप : एक समीक्षा

-डॉ. नेहा कल्याणी : 182

देह अगर विकलांग हुआ तो....

-कल्पना कौशिक : 186

मीडिया में विकलांग विमर्श

-प्रो.डॉ. सुरेश माहेश्वरी : 195

हिन्दी सिनेमा में विकलांगों की भूमिका (बरफी के संदर्भ में)

-डॉ. शारदा प्रसाद : 203

हिन्दी फिल्मों में विकलांग चरित्र

-तुलसी देवी तिवारी : 209

विकलांग विमर्श : आज की आवश्यकता

कण्डाला श्रीनिवास

विकलांगता से आशय और अवधारणा :

शब्दों का सही अर्थ विद्वानों द्वारा किया जाता है अर्थात् शब्दों को लेकर कई उलझनें पैदा होती है। सामान्य अर्थों में विकलांगता ऐसी शारीरिक एवं मानसिक [illegible] है जिसके चलते कोई व्यक्ति सामान्य व्यक्तियों की तरह किसी कार्य [illegible] करने में असमर्थ होता है। शारीरिक या मानसिक विकलांगता की कोटि का [illegible] तकनीकी दृष्टि से विकलांग एवं [illegible] शब्द है जिनकी एक से अधिक परिवर्तनशील [illegible] है। भारत में ऐसे व्यक्ति को विकलांग माना गया है जो चिकित्सा [illegible] द्वारा प्रमाणित 40 प्रतिशत से कम विकलांग का शिकार न हो। 'विकलांग' शब्द दो शब्दों के मेल से बना है विकल+अंग। जिसके अंतर्गत यह कहा जा सकता है कि यदि शरीर का कोई अंग शिथिल हो या विकृत हो विकलांग कहते है।

U.N.C.R.D.P. संयुक्त राष्ट्र कन्वेंशन के शब्दों में विकलांग उनको कहा गया है जिनकी शारीरिक, मानसिक, बौद्धिक तथा इन्द्रियों से सम्बन्धी क्षमताएँ लम्बी अवधि के लिए प्रभावित है जिनके कारण दैनिक आधार पर उनके कार्यों में प्रभावशीलता नहीं आ पाती है। विकलांग व्यक्ति निशक्त या अशक्त नहीं [illegible] है। विकलांग कल्याण को राष्ट्रीय कल्याण से जोड़कर विकलांग [illegible] का निर्माण इनके मानवाधिकार है।

विकलांग विमर्श का इतिहास

प्रति वर्ष 3 दिसंबर को दुनियाभर में विश्व विकलांगता दिवस मनाया जाता है, इस दिन को मुख्य रूप से दिव्यांगों के प्रति लोगों के व्यवहार में बदलाव लाने और उन्हें उनके अधिकारों के प्रति जागरूक करने के लिए मनाया जाता

इस रचना का सामाजिक परिप्रेक्ष्य ऐसा है की समझ में आने के पूर्व ही पाठक को महसूस होती है, यह गहरे तादात्म्य की स्थिति है। इस रचना को पढ़कर निश्चित तौर पर पाठक की चेतना एवं चिंतन में सकारात्मक परिवर्तन होगा।

"हौसला" कहानी संग्रह के अधिकांश कहानीकार प्रवासी भारतीय हैं। देश से दूर उनकी संवेदना सृजनात्मक हो गई है। कहानी संग्रह के सभी कहानीकारों की पीड़ा सामाजिक संदर्भ में है। प्रत्येक विकलांग व्यक्ति के अस्तित्व की चिंता है। यही मानवीय मूल्यों का नव्य विकास है, मानवीय चेतना का उदात्त स्वरूप है।

संदर्भः

1. परिहार, महाराज सिंह-"काव्य शास्त्र एवं साहित्य लोचन" अभय प्रकाशन, आगरा 2010
2. आडिल सत्यभामा-"हिन्दी कथा साहित्य" छत्तीसगढ़ राज्य हिन्दी अकादमी 2012
3. दास श्याम सुंदर-"साहित्यलोचन" भारतीय ज्ञानपीठ, नई दिल्ली 2013
4. कुमार मनोज-"मानवीय मूल्यों के संस्थापक-प्रेमचंद" rajbhasa-hindi.blog spot.com 31 जुलाई, 2011
5. अहमद मेराज-हिन्दी कहानी के विकास में कमलेश्वर, संपादित सारिका पत्रिका का योगदान, अलीगढ़ 2013
6. ममता कालिया का कथा साहित्य-एक अनुशीलन lib.unipune. ac.in:8080
7. रंजन रवि-"समकालीन हिंदी कहानी में मानवीय संसक्ति" samalochan. blogspot.com
8. प्रकाश उदय-"स्वातंत्र्योत्तर आधुनिक कहानियों में जनतांत्रिक मूल्य shodhanga.inflibnet.ac.in
9. उषाराजे सक्सेना-"व्यक्तित्व-कृतित्व www.setumag.com. 2017/07

-सृजन महंत
शोधार्थी (हिन्दी)
डॉ. सी.व्ही. रामन विवि, करगी रोड, कोटा
जिला बिलासपुर (छ.ग.)

विकलांगों के जीवन पर सामाजिक परिवेश का प्रभाव : हौसला कहानी संग्रह के संदर्भ में

बेला महंत

परिवेश का कोषीय अर्थ है-घेराव, परिधि आवेष्टित करने वाली वस्तु। परिवेश का मतलब बाहरी जीवन संगत का विवरण भर नहीं है, इसका मतलब जीवन स्थितियों और समय के यथार्थ प्रभाव है जिनसे कहानी की घटना और कार्य व्यापार रूपायित होते हैं। कहानी के चरित्र के गतिविधियों पर परिवेश का निर्णायक प्रभाव होता है। कहानी में अपने युग और समाज की बनत और रंगत, उसमें रहने वाले और उसे जीने वाले आदमी की हालत उभरती है। व्यक्तित्व पर सामाजिक परिवेश प्रबल प्रभाव डालता है। ज्यों-ज्यों बालक विकसित होता जाता है, वह उस समाज या समुदाय की शैली को आत्मसात् कर लेता है जिसमें वह बड़ा होता है। एक विकलांग व्यक्ति यदि वह जन्मजात विकलांग है, पैदा होते ही सामाजिक नकरात्मक व्यवहार से प्रभावित होता है। उपासना की "मुक्ति" में सात महीने के गर्भस्थ शिशु को विकलांगता का भान होते ही उसे "मुक्ति" दे दी जाती है।

"तुम ऐसा बच्चा लेकर क्या करोगी जो हर क्षण दूसरों पर आश्रित रहेगा, यह भी कोई जीवन है? इससे तो अच्छा है कि उसे अभी ही मुक्ति मिल जाए।"[1]

सामाजिक तौर पर किए जाने वाले व्यवहार से विकलांगों के मन में हीन भावना आती है।

कादम्बरी मेहरा की कहानी "एक और परिणीता" की नायिका स्वर्णा शिक्षित होते हुए भी कुंठाग्रस्त है-"बी.एड. कर पढ़ाने गई, तो लड़कियों ने बेरहमी से उसकी नकल बनाई। बेचारी घबराकर छोड़ आई।"

"स्वर्णा एक हताश, कुंठित, लड़ाकी व बदमिजाज लड़की थी।"[2]

विकलांगता को स्वीकार कर व्यक्ति विशेष के लिए सामाजिक बंधन, परिजनों का डर, उसके व्यक्तित्व को कुचलने में कोई कसर नहीं छोड़ते-"दादी को जात-बिरादरी का डर था, पिताजी को अपने कर्तव्य से गिर जाने का डर

था। माँ को इन दोनों को नाराज करने का डर था और इन-सब संस्थाओं के नीचे लगभग कुचला हुआ उसका अपना अस्तित्व था।"[3]

रांगेय राघव की गूँगे भी इसी तरह समाज द्वारा कुचले व्यक्तित्व की कथा है "गूंगे-अनेक-अनेक हों संसार में भिन्न-भिन्न रूपों में छा गए हैं, जो कहना चाहते हैं, पर कह नहीं पाते। जिनके हृदय की प्रतिहिंसा न्याय और अन्याय को परख कर भी अत्याचार को चुनौती नहीं दे सकती क्योंकि बोलने के लिए स्वर होकर भी स्वर में अर्थ नहीं है, क्योंकि वे असमर्थ है।"[4]

ममता कालिया की कहानी "राजू" में अशिक्षा, गरीबी, अज्ञानता वश एक आँख खो चुके बालक राजू के मामा के विवाह समारोह में सामाजिक तिरस्कार और मर्माहत माँ के गुस्से में "अपशकुनिया" कहने पर अपमानित महसूस करना किन्तु माँ के बिलखने पर द्रवित हो जाना सामाजिक दुर्व्यवहार की पराकाष्ठा है। राजू और माँ से किया गया समाज का व्यवहार ऐसा है मानों विकलांगता ने उनको अपराधी बना दिया है।

"भग्गो, ये कजहा कपूत तू घर में छोड़ आती, तो एक दिल में तेरा दूध न सूख जाता, बियाह के घर लाकर खड़े कर दिया सामने।"[5]

शोषित मानवता की करुण पुकार सूर्यबाला की कहानी "फरिश्ते"। अपने द्वारा दिए गए कत्ल की सजा मटरूआ के बापू को दिलवाना, दया के नाम पर मटरूआ और उसकी माँ का शोषण मटरूआ से न केवल बालपन छीन लेता है वरन् उसे विकलांग भी बना देता है। उसकी विकलांगता से भी लाभ लेना अमानवीय और अपराधिक व्यवहार है-"अपने बहनोई से हंसते हुए कहते हैं-भगवान जो करता है अच्छा ही करता है। अब यह देखो, अपंग वर्ष है न सो हमें घर में बैठे ही अपंग सेवा का संयोग बिठा दिया इस जमूड़े में टांग तोड़ कर।"[6]

मानसिक तौर पर परेशान व्यक्ति के लिए दवाओं से अधिक सामाजिक-पारिवारिक देखभाल की आवश्यकता है। उनसे किया हुआ बुरा व्यवहार उनकी मानसिक स्थिति को बदतर बना देती है। उषाराजे के "रिफ़्यूज कलेक्टर" का पात्र इसी स्थिति में है-"पिछले घर में उसे बीस्ट या बीस्टी (जंगली जानवर) कह कर पुकारा जाता था। शायद इसीलिए वह इस तरह की हरकत करता है। ही हैज बीन बैडली ट्रीटेड एन मिसहैंडल्ड।"[7]

जीवन के कुछ वर्ष सामान्य व्यक्ति की तरह बिताने के बाद दुर्घटनावश विकलांग हो जाने की स्थिति में शारीरिक पीड़ा से अधिक, मानसिक पीड़ा से निकलना कठिन होता है। इस स्थिति में सामाजिक और पारिवारिक देखरेख और

प्रेरणा अत्यंत आवश्यक है। डॉ. लता अग्रवाल की कहानी "मन के हारे हार" की नायिका वान्या "मस्कुलर डिस्ट्राफी" से ग्रसित हो जाती है। मां-पिता के देखरेख और प्रेरणा से उसे चित्रकारिता के लिए राष्ट्रपति पुरस्कार प्राप्त होता है-"अपने भीतर की शक्ति को पहचानो और उसी से अपनी एक अलग पहचान बनाओ।"[8]

"उसी माँ ने मेरी जिन्दगी के दीपक में अपने साहस की बाती बनाकर मुझे पुन: जीवित किया है"।[9] डॉ. रोशनी की "देवी" भी माँ के साहस से "पैरा ओलंपिक" में विश्व विजेता बनती है।

व्यक्तित्व विकास में वंशानुक्रम तथा परिवेश दो प्रधान तत्व हैं। वंशानुक्रम व्यक्ति को जन्मजात शक्तियाँ प्रदान करता है। परिवेश उसे इन शक्तियों को सिद्धि के लिए सुविधाएँ प्रदान करता है। बालक को व्यक्तित्व पर सामाजिक परिवेश प्रबल प्रभाव डालता है। जिस परिवेश में वह बड़ा होता है, उसके व्यक्तित्व पर शहरी छाप छोड़ते हैं।[10]

उषाराजे के 'रिफ़्यूज कलेक्टर' का पात्र बीमा बिस्मार्क अपनी शिक्षिका मिस वर्मा, पालक मिसेस राबिन्स और अन्य सहयोगियों के विशेष "केस हिस्ट्री" लेकर मनोपचार से न केवल आत्मनिर्भर बनता है वरन् पारिवारिक सामाजिक दायित्वों का भी निर्वहन करता है।

मेराज अहमद की "हौसला" कहानी कहानी संग्रह की प्रधान कहानी है। यह कहानी केवल कहानी नहीं, विकलांग के जीवन का समाज शास्त्रीय विश्लेषण है। विकलांग व्यक्ति जब संघर्षरत है तब परिवार, मित्र, शिक्षक, परिचित उससे कैसा व्यवहार करें, यह सिखाती है।

1. "विकलांगता को सामान्यतौर पर स्वीकारना न ही उसका मजाक और नहीं अनावश्यक हमदर्दी दिखाएँ। एक सामान्य बालक की तरह व्यवहार करें।"[11]

"मेरे न खेल पाने के कारण बच्चों ने मेरा मजाक उड़ाया हो या फिर मेरे साथ हमदर्दी बरती हो यह मुझे बिल्कुल याद नहीं"।[12]

2. सामान्य बालक की तरह की जाने वाली गतिविधि में सहयोग देना: "फिर तो मैं नहाने की गरज से सारे बच्चों के साथ पानी में उतरने लगा। एकाध बच्चे भले मेरा मजाक उड़ाते हों बाकी अधिकांश बच्चे मेरी हौंसला अफजाई करते। सहारा देकर तालाब में उतरने और वहाँ से निकलने में मेरी मदद करते"।[13]

3. बालक की प्रतिभा का सम्मान करना उसकी प्रतिभा को निखारने में सहयोग करना: "मैं आरंभ से ही पढ़ने में ठीक-ठाक था इसीलिए अधिकांश अध्यापक मेरी बड़ी इज्जत करते और हर तरह की सहायता करने की कोशिश भी करते।"[14]

"पढ़ने में ठीक-ठाक होने से मुझे अपने सहपाठियों से खासी तवज्जो मिलती थी। वह प्रेक्टिकल में मेरी मदद करते। बल्कि कुछ बच्चों में तो मेरी मदद की होड़-सी रहती।"[15]

4. विकलांग बालक यदि ऐसा कार्य करना चाहे जो असंभव प्रतीत हो तो भी उसे हतोत्साहित न करें-"मेरे आस-पास के लोगों को यकीन हीं नहीं था कि मैं साइकिल चला पाऊँगा। मेरे घर वालों ने क्या सोचकर साइकिल खरीदी मुझे पता नहीं। लोग-बाग जरूर कहते कि मुझे पता नहीं। दिल रखने के लिए खरीदी गयी है। मैंने हिम्मत नहीं हारी और किसी ऊँची जगह से सीधे साइकिल के ऊपर सवारी कर गिरते-पड़ते आखिरकार साइकिल चलाना सीख लिया। साइकिल चलाना सीखने के बाद तो मुझे यह लगने लगा कि दुनिया मेरी जेब में है।"[16]

5. मित्रों का विकलांग व्यक्ति से सामान्य व्यवहार-किशोरावस्था में मित्र जीवन का आवश्यक अंग है। विकलांगों से मित्र का व्यवहार वैसा ही होना चाहिए जैसे सामान्य व्यक्ति से। उसके साथ घूमने फिरने में संकोच नहीं करना चाहिए। एक सामान्य जीवन उनमें हौसला जगाते हैं।

"मैं अपनी विकलांगता को बिल्कुल भूल गया। भूलता भी क्यों नहीं। दरअसल में सारे उन कामों में शामिल रहता जिसमें कोई भी शामिल रह सकता है-मैं अपनी माजी पर गौर करता हूँ तो लगता है कि संभवत: यह वही दिन थे जिन्होंने मेरे अंदर हौंसला भरा"।[17]

6. शिक्षा और आत्मनिर्भरता : विकलांगजनों को शिक्षित करना आवश्यक है यदि हो सके तो सामान्य बालकों के साथ "अपने बच्चों की पढ़ाई-लिखाई के सिलसिल में मुझसे राय मशविरा लेने लगे। मैंने बाकायदगी से ट्यूशन देना शुरू कर दिया।"[18]

"मुझे अध्यापक की नौकरी मिल गई"। मैं सचमुच का मास्टर हो गया"।[19]

7. पारिवारिक दायित्वों में सहभागी बनाना: विकलांग व्यक्ति आत्मनिर्भर हो जाए तो न केवल पारिवारिक जीवन का निर्वाह होता है वरन् अन्य दायित्वों को भी पूर्ण करता है।

"मैंने अपने दोनों भाइयों की गैरमौजूदगी में उनके बच्चों की देखभाल की। यह जज्बा मुझे अपने विकलांग होने के एहसास से दूर ले जाता है।[20]

अपने संघर्षों ओर सामाजिक सकारात्मक वातावरण से विकलांग जन हाशिये पर न रहकर समाज की मुख्यधारा से जुड़ जाते हैं।

"हमारे समाज और हमारे तबके के ज्यादातर लोगों की तमाम जिन्दगी ऐसे

ही तो गजुरती है जैसे मेरी गुजर रही है।"[21]

समाज मनुष्य के लिए वो प्रतिबिम्ब है जिसमें प्रत्येक दिवस वो अपनी अभिलाषाओं एवं आकांक्षाओं को पूरा होते देखता है। मनुष्य का शरीर तो नाशवान है परन्तु समाज हमेशा जीवित रहता है उन गौरव-गाथाओं के परिचायक के रूप में।

समाज और मनुष्य एक दूसरे के पूरक हैं। यदि समाज का निर्माण मनुष्यों ने किया तो समाज ने उनके विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। विकलांगजनों के लिए समाज की भूमिका कुछ अंशों में विशेष हो जाती है।

सन्दर्भ :

1. उपासना मुक्ति-हौसला पृ.18
2. मेहरा कादम्बरी-एक और परिणीता-हौसला पृ.55
3. मेहरा कादम्बरी-एक और परिणीता-हौसला पृ.61
4. राघव रांगेय-गूंगे हौसला, पृ.26
5. कालिया ममता "राजू हौसला" पृ.30
6. सूर्यबाला "फरिश्ते-हौसला" पृ.51
7. सक्सेना उषाराजे "रिफ्यूज कलेक्टर-हौसला", पृ.37
8. अग्रवाल लता "मन के हारे हार-हौसला", पृ.142
9. अग्रवाल लता "मन के हारे हार-हौसला", पृ.143
10. अहमद मेराज "हौसला-हौसला", पृ.120
11. अहमद मेराज "हौसला-हौसला", पृ.121
12. अहमद मेराज "हौसला-हौसला", पृ.121
13. अहमद मेराज "हौसला-हौसला", पृ.123
14. अहमद मेराज "हौसला-हौसला", पृ.123
15. अहमद मेराज "हौसला-हौसला", पृ.126
16. अहमद मेराज "हौसला-हौसला", पृ.126
17. अहमद मेराज "हौसला-हौसला", पृ.127
18. अहमद मेराज "हौसला-हौसला", पृ.127
19. आस्थाना जागृति "मानव और समाज" निबंध
20. यादव अखिलेश "विकलांगता का सामाजिक परिवेश: सामाजिक व्यवहारों के संदर्भ में विश्लेषण"। doe.du.ac.in
21. व्यक्तित्व विकास hi.m.wikidedia.org.

-बेला महंत
सहायक प्राध्यापक, हिन्दी
शा. माता शबरी नवीन कन्या महाविद्यालय
बिलासपुर (छ.ग.)

Naveen Girls College Govt. M.S. Bilaspur (C.G.)

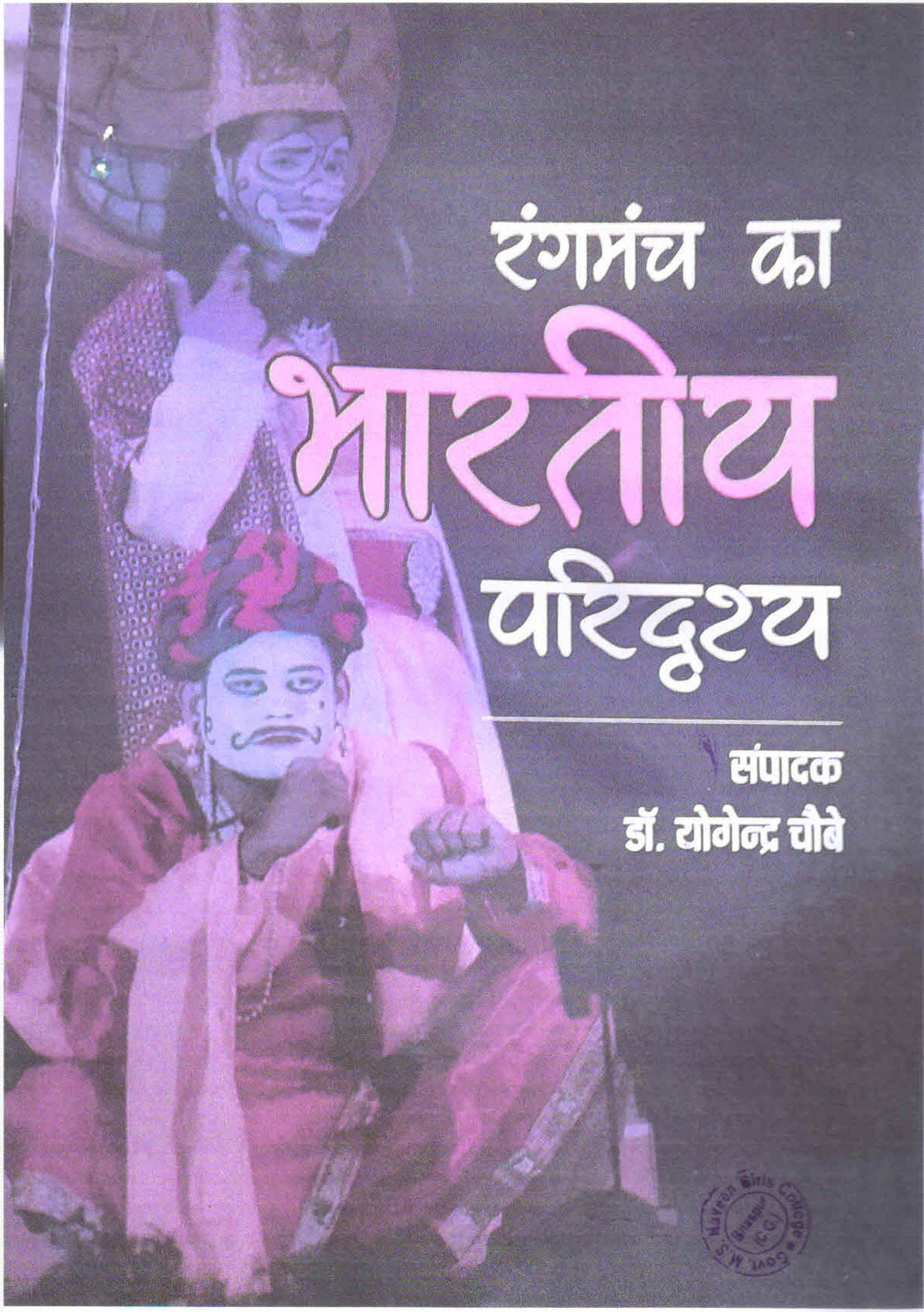

रंगमंच का भारतीय परिदृश्य

संपादक
डॉ. योगेन्द्र चौबे

Govt. M.S. Naveen Girls College Bhilai (C.G.)

रंगमंच का भारतीय परिदृश्य

(नाट्य विभाग, इंदिरा कला संगीत विश्वविद्यालय खैरागढ़ द्वारा आयोजित अंतरराष्ट्रीय वेबिनार दिनांक 18 - 19 दिसंबर 2020 में प्रस्तुत आलेखों एवं शोध - आलेखों का संग्रह)

ISBN- 978-93-91007-82-9

●

प्रकाशक
सर्वप्रिय प्रकाशन
1569, प्रथम मंजिल, चर्च रोड,
कश्मीरी गेट, दिल्ली-110006
मो. 94253-58748
e-mail : sarvapriyaprakashan@gmail.com

आवरण सज्जा : कन्हैया
आवरण चित्र गाटक ग्लोबल राजा निर्देशक - डॉ. योगेन्द्र चौबे
प्रथम संस्करण : 2021
मूल्य : 200.00 रुपये
कॉपी राइट : लेखक

●

RANGMANCH KA BHARTYIA PARIDRISHYA

BY : DR. YOGENDRA CHOUBEY

●

Published by
Sarvpriya Prakashan
1569, First Floor Church Road,
Kashmiri Gate, Delhi-110006

Raipur Office
Changora Bhatha, Road
Behind Imrald Hotel, PS. City Raipur-492013
First Edition : 2021
Price : Rs.200.00

भारतीय रंगमंच का परिदृश्य

(नाट्य विभाग, इंदिरा कला संगीत विश्वविद्यालय खैरागढ़
द्वारा आयोजित अंतरराष्ट्रीय वेबिनार
दिनांक 18-19 सितंबर 2020 में प्रस्तुत शोध-आलेखों का संग्रह)

•

संपादक
डॉ. योगेन्द्र चौबे

सर्वप्रिय प्रकाशन
दिल्ली-रायपुर

11. 21वीं सदी के नाटकों में बदलते स्त्री विमर्श का तुलनात्मक अध्ययन
गुरमीत सिंह 107

12. छत्तीसगढ़ का रंगकर्म : उद्‌भव और विकास
डॉ. योगेन्द्र चौबे 117

13. छत्तीसगढ़ी नाटकों का विकास : दशा और दिशा
डॉ. बेला महंत 133

14. छत्तीसगढ़ी में आधुनिक नाटक की परंपरा
रामनाथ साहू 138

15. रिंगनी–रवेली ने दिखाई भारतीय रंगमंच को नई राह
योग मिश्रा 149

16. लोक रंगमंच और आधुनिकता
डॉ. मोनिका शांतिलाल ठक्कर 172

17. छत्तीसगढ़ी लोकनाट्य नाचा की सार्थकता
संकल्प महंत 184

18. छत्तीसगढ़ी नाट्यसाहित्य एवं लोकनाट्य की विवेचना
सृजन महंत 189

19. छत्तीसगढ़ में जनजातीय व लोक रंगमंच
डॉ. स्वामीराम बंजारे 'सरल' 193

20. छत्तीसगढ़ी रंगमंच की परम्परा
ईश्वरी कुमार सिन्हा 201

छत्तीसगढ़ी नाटकों का विकासः दशा और दिशा

बेला महंत

कथा संवादों में ढलकर और रंगमंच में चलकर नाट्य साहित्य कहलाता है। अभिनेयता नाट्य साहित्य की विशेषता है और संवाद उसका प्राण तत्व। दृश्य–श्रव्य–समन्वित विशेषताओं से युक्त नाट्य साहित्य इसीलिये जनप्रिय विधा प्रमाणित हुई है। संस्कृत में इसकी परंपरा प्राचीन है, लेकिन हिंदी में अर्वाचीन। आंचलिक विभाषा छत्तीसगढ़ी में संस्कृत के समानान्तर लोकनाट्य और हिंदी के समानांतर शिष्ट नाट्य साहित्य की धारा प्रवाहित हुई है।

पं. लोचन प्रसाद पाण्डे कृत कलिकाल (1905) को छत्तीसढ़ी का प्रथम नाटक माना जाता है। इस संदर्भ में छत्तीसगढ़ी नाटक का उद्‌भव बीसवीं सदी में ही हुआ था। ''छत्तीसगढ़ी नाटक का उद्‌भव भारतेंदुयुगीन है। छत्तीसगढ़ी व्याकरण के बाइसवें अध्याय में संकलित ग्रामीण जनों का वार्तालाप इसका आरंभिक स्वरूप कहा जा सकता है। सन् उन्नीस सौ पांच के हिंदी मास्टर में प्रकाशित 'कलिकाल' स्वर्गीय लोचन प्रसाद पाण्डेय द्वारा प्रणीत चंद्रपुर की बोली मिश्रित छत्तीसगढ़ी नाटक है।''[1]

छत्तीसगढ़ी का लोक नाट्य मंच अत्यंत समृद्ध है। इसका संसार छत्तीसगढ़ी मनुष्य के हास विलास, दुख दरिद्रय के साथ झूलता इठलाता है और दुख के क्षणों में दो चार बूंद आंसू भी बहाता है। छत्तीसगढ़ी लोक नाटक और मनुष्य के बीच के इस रिश्ते को सर्वप्रथम पं. लोचन प्रसाद पाण्डे ने समझा।

इन्ही दिनों पं. शुकलाल प्रसाद पाण्डेय ने स्कूली छात्रों के मनोरंजनर्थ– कुछ छोटे–छोटे किन्तु शिक्षाप्रद नाटकों की रचना की। ''केकरा–धरैया'', ''खीरा–चोट्टा'', ''सीख देवइया'', ''उपसहा दमाद बाबू'' हास्य प्रधान रचनाएँ है। सामाजिक सरोकार के नाटकों में– ''गंवई बर अंजोर'' नाटक में गांव के विकास में ग्रामीणजन की भागीदारी को आवश्यक बताया है। बलिपूजा के निषेध पर आधारित नाटक विस्वास (पं. मुरलीधर पाण्डेय 1948) छत्तीसगढ़ी ''केशरी'' पत्रिका में प्रकाशित हुआ। इसमें ''हरेली'' त्यौहार में ''बलिपूजा'' का निषेध किया गया है।

लखनलाल गुप्त की 'बेटी के मंसूबा,' ''बर के खोज मा'' नारी विमर्श के नाटक हैं। खूबचंद बघेल के ऊंच–नीच, करम छड़हा, जरनैल सिंह, गरकट्टा नाटक प्रसिद्ध हुए। डॉ. खूबचंद बघेल स्वतंत्रता सेनानी एवं समाज सुधारक थे। गांव में ''जातबाहिर'' किए गए मनुष्य की दुर्दशा देख उन्होंने यह नाटक लिखा और इसका मंचन डरते–डरते किया। नाटक की सफलता देखकर बघेल जी ने नाटक लेखन जारी रखा। टिकेन्द्रनाथ टिकरहा ने 1950 से नाटक लेखन प्रारंभ किया। समाज सुधार, अस्पृश्यता निवारण, शिक्षा से जुड़े, नारी जीवन के प्रति सकारात्मक सोच और विकासवादी दृष्टिकोण इनके नाटकों की विशेषता है इनका ''साहूकार से छुटकारा'' नाटक ग्रामीण ऋण ग्रस्ततों की समस्या पर आधारित प्रमुख नाटक है।

महेत्तर राम साहू की एकांकी ''कउवा लेगे कान, ''होही अंजोर' 'मया के बंधना'' छत्तीसगढ़ की सामाजिक झाँकी को प्रस्तुत करता है। छत्तीसगढ़ी नाटकों के 1905 से 1960 के अवधि को आरंभिक काल कहा जा सकता है। इस काल के नाटकों में मनोरंजन और सामाजिक सुधार की प्रवृत्ति प्रमुख है। सन् 1960 से सन् 2000 तक की अवधि को छत्तीसगढ़ी नाटक की विकास काल कहा जा सकता है। 1960–70 के बीच धार्मिक आख्यानिक कथाओं पर आधारित नाटक लिखे गए उदयराम जी का 'छत्तीसगढ़ी रामचरित नाटक 1963, डॉ. रामलाल कश्यप का 'श्री कृष्णार्जुन युद्ध' 1965 और

रतनपुर इस दौर के उल्लेखनीय नाटक हैं। ''श्रीकृष्णार्जुन युद्ध'' श्री माखनलाल चतुर्वेदी कृत ''श्रीकृष्णार्जुन युद्ध'' का आंचलिक संस्करण है, लेखक ने स्वयं 'लिखोइया के गोठ'' में व्यक्त किया है। ''सन् 1970 के आस–पास एक लोकधर्मी आधुनिक नाटक कार हबीब तनवीर ने चौकाने वाले प्रयोग किए । हबीब तनवीर ने छत्तीसगढ़ क्षेत्र के लोक–नाटक और पारसी थियेटर का समन्वय कर नाटकों की दुनिया में हंगामा मचा दिया। उनकी इस शैली का प्रभाव छत्तीसगढ़ी थियेटर पर पड़ा। दाउ महासिंह चन्द्राकर, लक्ष्मण चन्द्राकर, रामहृदय तिवारी, प्रेम साइमन की टीम ने कई अत्यंत आकर्षक नाट्य प्रस्तुतियां दी। इन नाट्य प्रस्तुतियों में लोक रंग काफी गाढ़ा था।''[2]

सन् 1973 में प्रकाशित ''गांव के नाव सुसराल, मोर नाव दमाद'' 1978 में प्रकाशित 'सोनसागर' 1988 में 'मंगलू दीदी'' नाटकों का उत्स छत्तीसगढ़ की सामाजिक संरचना पर आधारित है। हबीब तनवीर के मौलिक और रूपांतरित नाटकों में छत्तीसगढ़ी भाषा और संस्कृति का प्रयोग किया गया। इन सबका स्वाभाविक प्रभाव छत्तीसगढ़ी लेखकों पर पड़ा। नंद किशोर तिवारी का परेमा, बंटवारा, रंग सब एक, महारिया, ''नइजानन का चीज'' नाटकों का संग्रह ''परेमा'' छत्तीसगढ़ी नाट्य साहित्य में उल्लेखनीय है।

कपिल नाथ कश्यप के नाटकों में छत्तीसगढ़ के शोषण के विरूद्ध जागृति का संदेश है। अंधियारी रात (1992), नावा बिहान (1994) इनके प्रमुख नाटक हैं। लखन लाल गुप्त का ''जाग छत्तीसगढ़ जाग'', डॉ. परदेशी राम वर्मा का ''मैं बइहा नोहव'' पं. श्याम लाल चतुर्वेदी का ''मया के मोटरी'' इस काल के प्रसिद्ध नाटक संग्रह है। विश्वेंद्र ठाकुर, मेहत्तर राम साहू, किसान दीवान, भावसिंह हिरवानी, प्रेम साइमन, नारायण लाल परमार, रामप्रसाद कोसरिया, दादू लाल जोशी आदि ने छत्तीसगढ़ी नाट्य विधा को विकसित किया।

इस काल के नाटकों में लोक नाट्य संस्कृति, गीत–संगीत का समन्वय विशेष दिखाई देता है। इन नाटकों में छत्तीसगढ़ी भाषा का

स्वरूप व्यवहारिक एवं क्षेत्रीयता आधारित है। नाटकों का आकार छोटा रहता था। सन् 2000 से अब तक के छत्तीसगढ़ी नाटकों का आधुनिक काल माना जा सकता है। ''सन् 2003 में डॉ. सुरेन्द्र दुबे का नाटक ''पीरा'' छत्तीसगढ़ी लोक थियेटर और आधुनिक नाटकों की समन्वित शैली में लिखी गई है। इस नाटक का मूल चेतना छत्तीसगढ़ का शोषण है। रामनाथ साहू का नाटक ''जागे–जागे सुतिहो गो'' जागते हुए सोए लोगों को जगाने का गंभीर प्रयास है।''[3]

देवधर महंत की ''सेंदुरा फूटत है'' में निरक्षरता दूर करने साक्षरता के महत्व को प्रतिपादित करने का प्रयास है। रघुवीर सिंह की मुड़पेलवा, ''चेचक के टीकाकरण'' पर आधारित नाटक है जो स्वास्थ्यगत रूढ़ियों को दूर करने प्रेरित करता है। भावसिंह हिरवानी की ''तोर किरिया है'', सुधा वर्मा की ''दुलारी'' चचित नाटक है। डॉ. नरेन्द्र देव वर्मा ने ढोलामारू की लोकगाथा पर आधारित रेडियो रूपक' ''अनदेखनी'' तथा ''कोल्हान सिंग राजा'', ''मोला गुरू बनई लेते'' लिखे। इनमें छत्तीसगढ़ी लोकनाट्य की सहजता को लेकर किया गया प्रयोग है। इस नाटकों में छत्तीसगढ़ी भाषा का सौंदर्य झलकता है। छत्तीसगढ़ी लोकनाट्य के तत्वों, लोकगीतों, लोकगाथाओं और छत्तीसगढ़ी संस्कृति संस्कृति से सराबोर संवादों को समेट कर कुछ एक नए प्रयोग की उपज है ''चंदैनी गोंदा''। इसके अनुकरण में ''सोनहा बिहान'', ''नवा बिहान', ''भोजली गंगा'', ''नवरंग कला केन्द्र'', ''तुलसी चौंरा'', ''माटी मोर मितान'', ''गौरा चौरा'', ''भुइंया के भगवान'' आदि अनेक संस्थाएँ बनी जिनमें छत्तीसगढ़ी नाट्य तत्व का प्रयोग किया जाता है।

डॉ. शंकर शेष ने छत्तीसगढ़ी लोकनाट्य के नये प्रयोगों से हिंदी नाट्य साहित्य को चमत्कृत कर दिया है। वरिष्ठ रंगकर्मी राजकमल नायक ने छत्तीसगढ़ी रंगमंच पर कहा– ''छत्तीसगढ़ी में नाट्य लेखन की प्रक्रिया विच्छिन रही है, उसमें निरंतरता कभी नहीं रही। स्वतंत्र नाटककार जिनका आधुनिक रंगमंच से नाता रहा हो तथा जो छत्तीसगढ़ी में निरंतर नाट्य लेखन में संलिप्त रहे हों, ऐसा

कोई नाम नहीं आता। इसके बावजूद हमें आशावादी होना चाहिए। छत्तीसगढ़ के संस्कृति विभाग, अन्य कला संगठनों, लेखक संगठनों को छत्तीसगढ़ में आधुनिक रंगमंच को प्रश्रय देने, बढ़ावा देने का प्रयास करना चाहिए।"[4]

भौतिक विकास, टूटते जीवन मूल्यों के बीच छत्तीसगढ़ी नाटक अपने बदलते स्वरूपों में अपना अस्तित्व बनाए हुए हैं। आधुनिक रंगमंच से जुड़कर छत्तीसगढ़ी लोकनाट्य को नई दिशा देने का कार्य योगेन्द्र चौबे जैसे नाटककार कर रहे हैं। राजस्थानी लोक कथा पर आधारित विजय दान देथा के नाटक को छत्तीसगढ़ी संस्कृति में रंगकर आधुनिक रंगमंच पर "बाबा पाखण्डी" जैसे नाटक का सफल प्रस्तुति गैर छत्तीसगढ़ भाषियों को भी प्रभावित करती है। छत्तीसगढ़ी नाट्य को ग्रामीणजनों के बीच से निकाल कर राष्ट्रव्यापी बनाने में इस तरह से प्रयोगधर्मिता की आवश्यकता है।

संदर्भ :–

1. पाठक विमल कुमार, छत्तीसगढ़ी साहित्य का एतिहासिक अध्ययन, 320, आशु प्रकाशन, रायपुर, 1983 मुद्रित.
2. चंद्राकर जयभारती, छत्तीसगढ़ी गद्य लेखन, 34, वैभव प्रकाशन, रायपुर 2015 मुद्रित.
3. चंद्राकर जयभारती, छत्तीसगढ़ी गद्य लेखन, 51, वैभव प्रकाशन, रायपुर 2015 मुद्रित.
4. नायक राजकमल, छत्तीसगढ़ी में आधुनिक रंगकर्म: चुनौतियाँ और संभावनाएँ (विचारगोष्ठी) June 28, 2015

सहायक प्राध्यापक हिन्दी
शा. माता शाबरी नवीन कन्या महाविद्यालय
बिलासपुर (छ.ग.)

●●●

Govt. M.S. Naveen Girls College Bhaspur (C.G.)

छत्तीसगढ़ का समग्र इतिहास

- डॉ. सुरेश चन्द्र शुक्ला
- डॉ. (श्रीमती) अर्चना शुक्ला

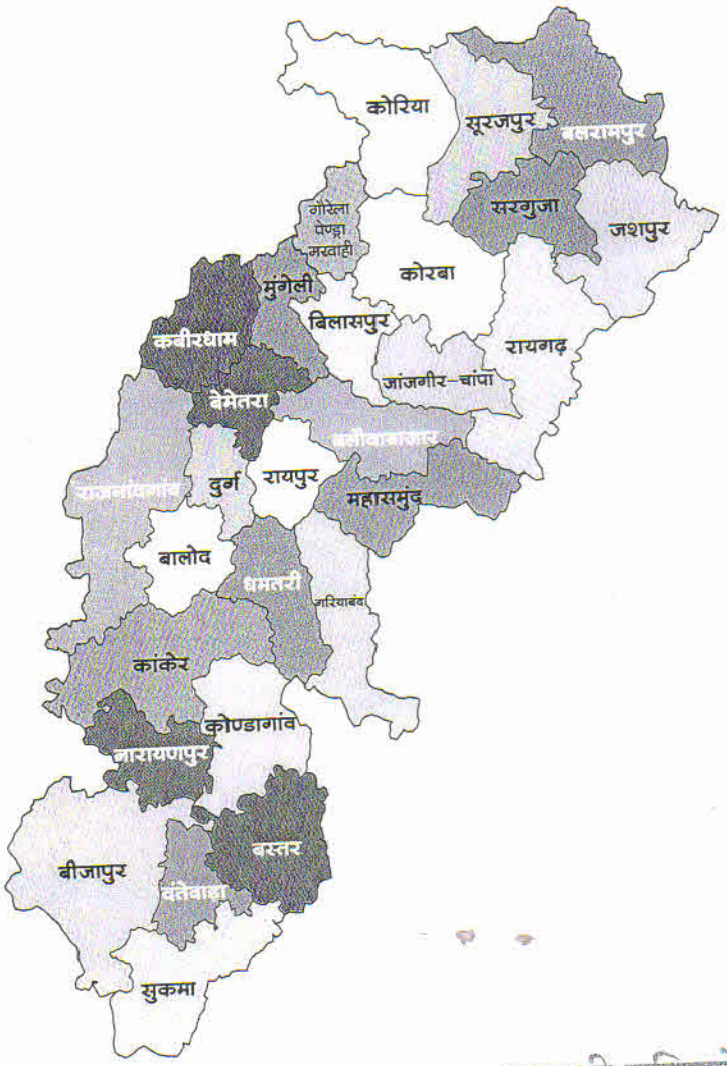

मातुश्री पब्लिकेशन

Govt. M.S. Haveli College Bilaspur (C.G.)

© लेखकाधीन

- इस पुस्तक के डाटा संग्रहण एवं प्रकाशन में लेखक तथा प्रकाशक द्वारा पूर्ण सावधानी बरती गई है, फिर भी किसी प्रकार की त्रुटि के लिये लेखक या प्रकाशक जिम्मेदार नहीं होगा।
- किसी भी परिवाद के लिये न्यायिक क्षेत्र बिलासपुर ही होगा।
- इस पुस्तक को अथवा इसके किसी भी अंश को बिना लेखक के लिखित पूर्वानुमति के प्रकाशित करना अवैधानिक होगा, अतः किसी भी रूप में जैसे– फोटोकॉपी, विद्युतग्राफी, यांत्रिकी व अन्य रूप में किसी भी उपयोग के लिये नहीं छापा जा सकता।
- आवरण पृष्ठ एवं अध्यायों पर चित्रित नक्शे यथा छत्तीसगढ़ राज्य का नक्शा इत्यादि पैमाने पर नहीं है (Map not to scale, just for reference), केवल संदर्भ हेतु प्रदर्शित हैं।

प्रथम संस्करण	–	2002
द्वितीय संस्करण	–	2018
तृतीय संस्करण	–	2020
चतुर्थ संस्करण	–	2021

मूल्य : रुपये 315/–

ISBN: 978-81-939385-0-8

मुद्रकः सागर प्रिन्टर्स, रायपुर

प्रकाशकः
मातुश्री पब्लिकेशन
आर–2, श्रीराम नगर, फेस–2,
रायपुर (छ.ग.) 492007
मो. 79870–45932, 75666–64333
ई–मेलः matushreepublication@gmail.com

Govt. M.S. Naveen Girls College ★ Bilaspur (C.G.)

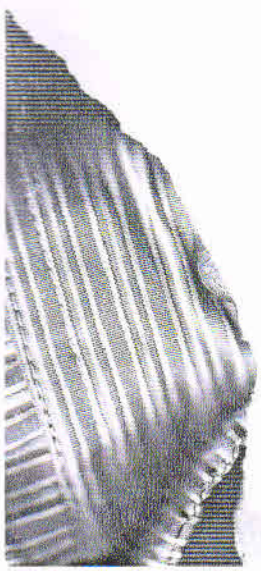

छत्तीसगढ़ी भाषा एवं साहित्य में युगीन चेतना का विकास

संपादक
प्रो आर के लहरे

सह–संपादक
प्रो. टी. एस. पैंकरा

GEEL Infix

GEEL INFIX PUBLISHING SERVICES

Govt. M.S. Naveen Girls College Bilaspur (C.G.)

Publishing-in-support-of,

GEEL INFIX
PUBLISHING SERVICES

Kotra Road, Rajeev Nagar, Opposite Rambagh
Raigarh, Chhattisgarh - 496001

www.geelinfix.in

© Copyright, Author

All rights reserved. No part of this book may be reproduced, stored in a retrieval system, or transmitted, in any form by any means, electronic, mechanical, magnetic, optical, chemical, manual, photocopying, recording or otherwise, without the prior written consent of its writer.

ISBN: 9788194591702

Price: ₹ 250.00

The opinions/contents expressed in this book are solely of the author and do not represent the opinions/standings/ thoughts of Geel Infix Publishing Services.

Printed in India

Chhattisgarhi Bhasha & Sahitya Me Yugin Chetna Ka Vikas

इलेक्ट्रोनिक संपादक
संगीता पाटीदार

GEEL Infix

GEEL INFIX PUBLISHING SERVICES
www.geelinfix.in

विषय–सूची

क.		पृ. क.
1.	'छत्तीसगढ़ी कहानियों में अभिव्यक्त लोक चेतना' –डॉ. स्वामीराम बंजारे 'सरल'	11
2.	छत्तीसगढ़ी में प्रचलित गीत–संगीत, नृत्य वनाटयकला –डॉ. रामायण प्रसाद टण्डन	18
3.	छत्तीसगढ़ी लोकसाहित्य में लोकगीत – जानकी चौधरी	22
4.	छत्तीसगढ़िया करमा – डॉ. श्रीमती रश्मि कोका	
5.	छत्तीसगढ़ी के विविध बोलियाँ –श्रीमती इमिलियाना लकडा	32
6.	छत्तीसगढ़ लोक नाट्य परम्परा –डॉ. महेश कुमार शुक्ल –अतुल कुमार मिश्र –विपिन कुमार तिर्की	35
7.	छत्तीसगढ़ी लोक साहित्य और लोक जीवन प्रो.चरणदास बर्मन	36
8.	लाला जगदलपुरी की छत्तीसगढ़ी कविताओं में जीवन सौन्दर्य – डॉ. राजेश कुमार सेठिया	48
9.	लोक साहित्य : महत्व और बाजारीकरण –डॉ. एच. आर आगर * –लक्षेष्वरी **	50
10.	छत्तीसगढ में प्रचलित गीत–संगीत, नृत्य व नाट्य–कला – श्रीमती माग्रेट कुजूर	51
11.	छत्तीसगढ़ी लोक संस्कृति वर्तमान परिवेश –प्रो. बी के भगत	59

12.	छत्तीसगढ़ी बोली व साहित्य के विविध आयाम –डॉ. मंजुला पाण्डेय	65
13.	छत्तीसगढ़ में प्रचलित लोकगीत संगीत, नृत्य व नाट्यकला – संगीता रंगारी	9/166
14.	छत्तीसगढ़ में प्रचलित गीत, संगीत, नृत्य व नाट्य कला –राजेन्द्र प्रसाद नागवंशी	74
15.	छत्तीसगढ़ की राम मय भूमि –डॉ. सरिता पाण्डेय	76
16.	छत्तीसगढ़ के विविध बोलियाँ डॉ. बी.आर. महिपालस डॉ. सुनीता राठौर सहा.	79
17.	छ.ग. साहित्य में अभिव्यक्त लोक संस्कृति श्रीमति पुष्पांजली दासे	82
18.	छत्तीसगढ़ में प्रचलित मेला, तीज–त्यौहार एवं उत्सव का स्वरूप –डॉ. सुनीता राठौर	90
19.	छत्तीसगढ़ की लोक नाट्य परंपरा *डॉ. महेश कुमार शुक्ल, **अतुल कुमार मिश्र, *** विपिन तिर्की	93
20.	छत्तीसगढ़ी साहित्य में अभिव्यक्त लोकसंस्कृति डॉ. पी.डी. महंत* बेला महंत**	94
21.	छत्तीसगढ़ी लोकगीतः एक परिचय –राकेश कुमार कौशल	96
22.	छ.ग. में प्रचलित त्यौहार व मेला का स्वरूप –डॉ0 रमेश टण्डन	102
23.	छत्तीसगढ़ी और आंग्ल भाषा का तुलनात्मक अनुशीलन प्रो. राज कुमार लहरे* प्रो. हेमकुमारी पटेल**	107
24.	छत्तीसगढ़ में प्रचलित मेला, तीज–त्यौहार एवं उत्सव का स्वरूप –धर्मेन्द्र कुमार पाटनवार	113

25.	छत्तीसगढ़ी भाषा एवं साहित्य में युगीन चेतना का विकास – श्रीमती अंजू महिलांगें	122
26.	छत्तीसगढ़ के लोक संस्कृति में जादू–टोना, टोटका एवं बैगा –मनीष कुमार कुर्रे शोधनिर्देशक– डॉ. चन्द्रकुमार जैन	129
27.	छत्तीसगढ़ में प्रचलित गउरा गीत –डॉ0 (श्रीमती) बी0 एन0 जागृत	137
28.	लोक साहित्य एवं लोक संस्कृति –प्रो. एस कुमार गौर	145
29.	आदिवासी साहित्य में निहित कविता के विविध आयाम – प्रो. लवन सिंह कंवर, श्रीमती लता कंवर	152

"छत्तीसगढ़ी साहित्य में अभिव्यक्त लोकसंस्कृति"

डॉ. पी.डी0 महंत*

बेला महंत**

वैदिक साहित्य में सर्वप्रथम लोक शब्द का प्रयोग ऋगवेद के पुरूष सूक्त में मिलता है–

"नाभ्याँ असीदन्तरिक्षं शीर्ष्णो द्यौ समवर्तत
पदभ्याँ भूमिदिर्दशः श्रोत्रातथा लोकान् अकल्पयन"

इस लोक शब्द का समानार्थी "जनपदीय जनता", ग्रामीण, जनमानस के लिए प्रयुक्त होता है। आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी के अनुसार लोक का पर्याय है–"

"नगरों और ग्रामों में फैली वह समूची जनता है, जिनके व्यवहारिक ज्ञान का आधार पोथियाँ नहीं हैं।"

छत्तीसगढ़ी लोक साहित्य छत्तीसगढ़ की जनमानस के श्रुति परंपरा, अनुभूतियों और व्यवहारिक ज्ञान पर आधारित है।

"छत्तीसगढ़ी लोक साहित्य सुदूर कान्तार निवासियों, पर्वतीय प्राणियों तथा ठेठ ग्रामवासियों का ऐसा साहित्य है, जो अनगढ़ भी है, खुरदुरा भी है, प्रखर भी है, कोमल भी है। लोकगीतों में पुलक प्रसन्नता है, सहज किलकारी है और स्वाभाविक रूदन भी है, उसके आँसू मोती है।"
–डॉ. पालेश्वर शर्मा

संस्कृति मनुष्य को संस्कार देती है। हर तरह के कर्म और चिन्तन के क्षेत्र में अपनी सामूहिक प्रतिभा के बल पर लोक जो श्रेष्ठतम उपलब्ध कराता है, वही **लोक संस्कृति** है।

छत्तीसगढ़ी लोक साहित्य के ऐतिहासिक, मनो वैज्ञानिक, समाजशास्त्रीय पृष्ठभूमि में छत्तीसगढ़ी जनजीवन के **लोक कला**–लोकनृत्य, लोकगीत, नाचा, वेशभूषा, अलंकरण और दस्तकारी की झलक है तो **लोक व्यवहार**–विश्वास, प्रथाओं, कर्मकाण्डों, उत्सवो, परिपाटियों, खेलों, मान्यताओं, अंधविश्वासों की छटा भी हैं ।

छत्तीसगढ़ी लोक साहित्य का छत्तीसगढ़ी लोक संस्कृति से कई प्रकार के संबंध हैं। जिनमें मुख्य है–प्रतिफलन, इच्छापूर्ति, आलोचना, शिक्षण और संचालन। छत्तीसगढ़ी साहित्य लोक संस्कृति का सपाट दर्पण नहीं है। जीवन के व्यक्त पक्षों के साथ अव्यक्त पक्षों का भी प्रतिफलन साहित्य में दिखाई देता है।

गउरा गीत –

"माटी के सुवा सुख दुख के साथी ये
गउकी तेल बिना अबिरथा बाती ये
सिरतोन होवय ये आंखी के सपना
कुम्हलाय झन कखरो केंवची कलपना"

"तेल और बाती के सामंजस्य से ही प्रकाश उत्पन्न होता है। केंवची कल्पना अर्थात कोमल सपने किसी के न टूटने की आशा है।"

छत्तसगढ़ी समाज में आदर्श और यथार्थ में संगति के अभाव से पारस्परिक विरोधी कहावतों का अस्तित्व है।

"उंघात मनखे दसना पागै"

जहा भाग्य से इच्छित वस्तु मिलने की बात है वहीं –

"करम ले करम"

कर्म से ही भाग्य निर्माण की बात भी कही गई है ।

छत्तीसगढ़ी लोक साहित्य में दो संसार हैं– एक वास्तविक, एक काल्पनिक।

वास्तविक संसार में यथार्थ की भयावहता है, तो **काल्पनिक संसार** में सुंदर सपने–

"नवतप्पा के सुरूज ह लेसत है अंगना
कनकी बर बेचा गय भउजी के कंगना"
"सोन के महल हे सोन के हिंडोलना
सुघर सुतजा रे बाबू देख रंग–रंग के सपना"

छत्तीसगढ़ी लोक साहित्य छत्तीसगढ़ियों के विश्वासों अभिरूचियों और मूल्यों का अभियन्ता और इस प्रकार के उसके आचरण का प्रभावक है। छत्तीसगढ़ी लोक साहित्य सामाजिक कार्यो और गुणों का प्रशंसक भी है और नकारात्मक प्रवृत्तियों का आलोचक भी। छत्तीसगढ़ी लोक साहित्य का केंद्रीय लक्षण है, सामुदायिकता। लोक साहित्य का अपने श्रोताओं की मनः स्थिति और प्रतिक्रियाओं की अपेक्षा के अनुरूप सामाजिकता की भावना से रचना करता है। इसलिए छत्तीसगढ़ी लोक साहित्य में व्यक्तित्व की छाप नहीं वरन छत्तीसगढ़ी लोक संस्कृति की इंद्रधनुषी छटा दिखाई देती है।

---

* प्रभारी प्राचार्य सहायक प्राध्यापक हिन्दी शा. नवीन महाविद्यालय जैजैपुर
** शा. माता शबरी नवीन कन्या जिला जांजगीर–चाम्पा (छ.ग.) स्नातकोतर महाविद्यालय बिलासपुर

Govt. M.S. Naveen Girls College Bilaspur (C.G.)